संघर्षरत महिला

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन – दण्डकारण्य का तिमाही मुख–पत्र

वर्ष–22 मार्च 2017 सहयोग राशि–15 रुपए

ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी भाजपाई सत्ताधारियों द्वारा

महिलाओं पर जारी राज्यहिंसा की भर्त्सना करो!

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के संघर्ष विरासत को जारी रखो!

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन का आह्वान!

आदिवासियों, महिलाओं, दलितों, धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित तमाम उत्पीड़ित तबकों को एकजुट करके ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी भाजपाई सरकारों – मोदी, रमनसिंह व फडणवीस – के खिलाफ व्यापक व जुझारु जन आंदोलन का निर्माण करो! महिलाओं का शोषण–उत्पीड़न, लैंगिक अत्याचार, सामंती, साम्राज्यवादी व ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी संस्कृति के खिलाफ एकजुट हो संघर्ष करो!

'समाज में आधा हिस्सा, संघर्ष में आधा हिस्सा' का ऐलान के साथ–साथ नारी मुक्ति का सपना संजोकर भारत देश में जारी नवजनवादी क्रांति संघर्ष में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जन युद्ध में कूदकर अपनी गरम लहू बहानेवाली क्रांति की जन नायिकाओं व बहादुर नेताओं – तमिळनाडु राज्य कमेटी सदस्या कॉमरेड्स अजिता, जिला कमेटी की सदस्या सम्मा उसेण्डी(रजिता) व यूसुफ बी(सोनी) के साथ–साथ एओबी जोन में कार्यरत डीवीसी सदस्या कॉमरेड कमला, उडीशा राज्य में कार्यरत डीवीसी सदस्य कॉमरेड रमा सहित उन तमाम वीरांगनाओं व साहसिक योद्धाओं को इस अवसर पर नतमस्तक हो श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उनके अरमानों व अधूरे सपनों को पूरा करने का शपथ लेंगे।

एरिया स्तर की जन नेत्रियां कॉमरेड्स एमला लच्ची, सीआरसी कंपनी–2 प्लटून डिप्युटी कमांडर कॉमरेड सनकाय नरोटि (मिनको), तेलंगाना की कॉमरेड सृजना (नवता), सिताय पूडो (आरती), सविता दुम्मा (निर्मला), केहको कोवासी (सरिता), दक्षिण सब जोन की कॉमरेड्स जोगी, रामे, कुडियम कमला, हेमला अंजू, सोडी सुक्की के साथ–साथ पार्टी सदस्याओं में सब जोन की कॉमरेड्स विमला, प्रमीला, सुनिता, रुक्मी, रामा, रोशनी, रामे, देवे, रजिता, गीता, जानकी अलामी(रनीता), सन्नी, हिचामी रुक्नी; दक्षिण सब जोन की कॉमरेड्स सारक्का (अनिता), माडवी देवे, नुप्पे रामे, मडकाम लक्के, माडवी जोगी, देवे, गीता, ओयामी रामबाई, बाडसे नंदे, ओयामी रामबाई, दीर्धो बुदरी, पोडियम सुक्की, दूदि गुड्डी, बीएन पार्टी सदस्याएं 3 जन कॉमरेड्स कोवासी सोमडी, कोरसा सोनी व भीमे के साथ–साथ पश्चिम सब जोन में कॉमरेड मनिला(पोयम सुखदाई) शहीद हुई। मिलिशिया में अपनी भूमिका अदा करते हुए कॉमरेड्स सरियम पोज्जे, वंजमि शांति, ओयम तुलसी, ओयम मोती, सोडि सुक्की, मासे, पाण्डे, मडकाम जुनकी, सोमडी, मडकम देवे, सोनी, माडिवि भीमे, मडकम लक्के शहीद हुई।

भूतपूर्व दल सदस्या कॉमरेड्स पश्चिम बस्तर की वेको बूदि, उत्तर गडचिरोली की ज्योति गावडे, पति–पत्नी हपका मनोज और ताति पाण्डे, मडकम हिडमे को अपने–अपने घरों से उठा ले जाकर उन पर सामूहिक बलात्कार व बर्बर यातनाएं देने के बाद सरेआम गोलियों से भून दिया गया। साधारण गृहिणी करटम हुर्रे की त्रासदी अलग बयां करती है। पुलिस हिरासम में लापता अपने पति हुंगा की खोज में पुलिस थाने में पहुंची गर्भवती महिला हुर्रे को लाठियों से स्वागत मिला, जिसके बाद असमय प्रसव हुई। अपनी दुंधमुंही बच्ची के साथ पति से मिलने गई हुंगी मौत हुई. दम तोड़ते समय अपने दुधमुंही बच्ची को छाती पर सुलाकर ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी राज्य हिंसा की अमानवीय चेहरे पर कालिख पोत दी।

केन्द्र व राज्य में भाजपाई ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी राज चला रहा है। आज देश भर के आदिवासियों, महिलाओं, दलितों, धार्मिक अल्प संख्यकों के खिलाफ नाजायज हिंसक युद्ध छेड़ा गया है। इसीके तहत सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा आदिवासी महिलाओं की फर्जी मुठभेड़ों में निर्मम हत्या की जा रही है। उनका यौन उत्पीड़न व बेरहमी से मारपीट हो रही है। उनका कसूर मात्र यह था कि जल–जंगल –जमीन पर अधिकार के लिए मांग करना, शोषण–उत्पीड़न से मुक्त समाजवादी स्थापना का सपना संजोना, तथा 'संपत्ति पर अधिकार' 'संतान पर अधिकार' के साथ–साथ समानता व सम्मान के लिए आवाज उठाना। इसी अपराध के लिए आदिवासी महिला पर सत्ताधारी भाजपा सरकारें दुश्मनी मोल रखी हैं. उनके लड़ाकू संगठन 'क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन के खिलाफ बर्बर दमन अभियान छेड़ दी है।

दंडकारण्य में प्राकृतिक संसाधनों की लूट पर आमादा हुए तमाम कार्पोरेट घरानों, उनके संरक्षण देनेवाले सत्ताधारी शोषक–शासकों व उनके साम्राज्यवादी आकाओं के इशारों पर केन्द्र सरकार ने 2009 से आदिवासी जनता पर अन्यायपूर्ण युद्ध ऑपरेशन ग्रीन हंट को छेड़ दी। इसीके तहत 'मिशन 2016'का ऐलान करके आदिवासियों पर बर्बरतापूर्ण दमनकाण्ड चलाया गया है। इसके मुख्य शिकार संघर्षरत महिलाएं हुई।

13 जून 2016 को सुकमा जिले के गोंपाडु गांव में अपने घर में धान कूट रही एक साधारण ग्रामीण आदिवासी लड़की मड़काम हिडमे को जबरन उठा ले कर पुलिस ने हत्या की. पुलिस ने उस दिन गोमपाड की जनता पर कहर ढाया था. गोमपाड़ गांव पर 13 जून को हमला करके आतंक मचाया था. घरों में तोड़फोड़ की थी. संपत्ति लूटी. गांव की महिलाओं की सामूहिक पिटाई की जिसमें मड़काम मंगली, दुगली हुंगी, लखे सहित चार महिलाएं बेहोश हो गयी थी. गोमपाड़ से ही डीआरजी में भर्ती हुए गुण्डों ने सरेआम नंगा करके सामूहिक बलात्कार के बाद हिडमे को 20 गोलियां मार कर अपनी नृशंसता को एक बार फिर जगजाहिर किया.

फर्जी मुठभेड़ों में मारे जाने वाले लाशों तक अपने परिजनों तक न देकर सड़ाया जा रहा है. भीमा और सुखमती दोनों 25 जनवरी को फर्जी मुठभेड़ में मारे गये. 5 फरवरी तक उनका अंतिम संस्कार नहीं हो पाया. लाशों की आंखें निकाली गई, हाथ–पैर कट गया था. अपने तमाम परिवार जनों के आंखों के सामने लावारिस लाशों जैसा सड़ा दिया गया है. पुलिस दरिंदगी को दर्शानेवाले ऐसे अनगिनत किस्से हैं.

9 मई 2016 को गड़चिरोली जिले के ओर्रेकस्सा गांव के एक घर में फंसी उत्तर गड़चिरोली डिवीजनल कमेटी की सदस्या कॉमरेड रजिता को सैकड़ों सी–60 बलों व थाना पुलिस ने घर व गांव को चारों तरफ से घेर लिया. दुश्मन चाहे तो उन्हें जिंदा पकड़कर जेल में डाल सकता था. लेकिन मानवता के तमाम सीमाओं व युद्ध के तमाम नियमों को ताक पर रखकर जिला पुलिस बल के आला अधिकारियों के आदेशों पर कमाण्डों पुलिस ने कायरतापूर्ण हरकत पर तुल गई और घर को आग लगा कर उनकी हत्या कर दी. जल–जंगल–जमीन –इज्जत–अधिकार के साथ–साथ आदिवासियों का अस्तित्व और अस्मिता को बचाने बंदूक उठाने वाली ऐसी लाड़ली बेटियों की हत्या करके राज्य अपना बर्बरता का परिचय दे रही है.

9 अगस्त, 2016 को राजनांदगांव जिले के कनेली–कोहरा गांवों के दरमियान के जंगल में हुई मुठभेड़ के दौरान घायल अवस्था में पुलिस के हाथ लगी कॉमरेड रामशिला को हत्यारे पुलिस बल ने बेरहमी से यातनाएं देकर उसका कत्ल किया. 9 अगस्त विश्व मूल आदिवासी दिवस है. उसी दिन एक आदिवासी लड़की इसलिए मारी गई कि वह जल–जंगल–जमीन व अस्मिता जो आदिवासियों के मूल अधिकार हैं, के लिए लड़ रही थी.

दक्षिण बस्तर डिविजन के बड़ेसेट्टी गांव में 28 सितंबर को तीन महिला क्रांतिकारियों कॉमरेड अंजू, पोड़ियाम सुक्की और दूधी गुड्डी को निहत्थे पकड़कर उनके साथ बर्बर अत्याचार करके उनकी निर्मम हत्या की गई.

मुठभेड़ों के दौरान युद्ध के तमाम औपचारिकताओं को ताक पर रखकर महिला कॉमरेडों की लाशों के साथ छेड़छाड, अपहास, अमानवीय व अभद्र व्यवहार किया जा रहा है. घायल अवस्था में मिलने पर क्रूर यातनाएं देने के बाद उनकी हत्या की जा रही है. ताकि आम जनता व नौजवान पीढ़ि के मन में दहशत पैदा हो जाए.

माओवादियों का उन्मूलन के नाम पर विस्थापन विरोधी जन आन्दोलनों, जनवादी–प्रगतिशील आन्दोलनों के सफाए करके देश के बहुमूल्य खनिज संसाधनों को देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों के हवाले करने के लिए ही 2009 से प्रारंभ ऑपरेशन ग्रीन हंट जोकि असल में आदिवासी जनता पर जारी नाजायज जंग के सिवाय और कुछ नहीं है, इन हमलों के भयावह रूप आज दण्डकारण्य खासकर बस्तर में देखने को मिल रहे हैं. झूठी मुठभेडों का सिलसिला तेज कर दिया गया है. महिलाओं का भयानक यौन उत्पीड़न बेरोकटोक जारी है. महिलाओं का सामूहिक बलात्कार व हत्या की सरकारी सशस्त्र बलों को खुली छूट दी गयी है. अपने ही कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए डीआरजी बलों सहित गोपनीय सैनिकों, सहायक आरक्षकों को यह नारा दिया गया है, ➡

मड़काम हिड़मे की नृशंस हत्या के खिलाफ आवाज बुलंद करो!

झूठी मुठभेडों व अत्याचारों के लिए कुख्यात बस्तर पुलिस ने और एक बार अपने क्रूर चेहरे को उजागर किया. 13 जून, 2016 को पुलिस ने यह दावा किया कि सुकमा जिले के गोमपाड़ व गोरखा के बीच के जंगल में नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड में मड़कम हिड़मे नाम की एक इनामी महिला नक्सली मारी गई. पुलिस के इस झूठे दावे का कुछ ही घंटों बाद पर्दाफाश हो गया और असलियत सामने आ गयी.

दरअसल अपने घर में धान कूट रही एक साधारण ग्रामीण आदिवासी लड़की मड़काम हिडमे को जबरन उठा ले जाकर पुलिस द्वारा जंगल में सामूहिक बलात्कार के बाद उसकी निर्मम हत्या की गयी. बाद में उसे एक नई गुरिल्ला वर्दी पहनाई गई. उसके शरीर पर गोलियों के कई निशान हैं लेकिन उसके कपड़ों पर गोली का एक भी निशान नहीं था. इससे साफ जाहिर है कि पुलिस ने उसकी जघन्य हत्या की.

अपनी बेटी के अपहरण की चश्मदीद गवाह हिड़मे की मां लक्ष्मी ने बेटी को बचाने खूब लड़ी थी. पुलिस ने बंदूक की बट और जूतों से उनकी बेदम पिटाई की. पुलिस ने उस दिन गोमपाड की जनता पर कहर ढाया था. भेज्जी, कोत्ताचेरु, एटेगट्टा, मुरलीगुडा और कोण्टा के 5 कैंपों के सीआरपीएफ, कोबरा, एसटीएफ, डीआरजी के संयुक्त बलों ने बड़ी संख्या में गोमपाड़ गांव पर 13 जून को हमला करके आतंक मचाया था. घरों में तोड़फोड़ की थी. संपत्ति लूटी. गांव की महिलाओं की सामूहिक पिटाई की जिसमें मड़काम मंगली, दुगली हुंगी, लखे सहित 4 महिलाएं बेहोश हो गयी थी. गोमपाड़ से ही डीआरजी में भर्ती हुए गुण्डे एर्राल, संतोष, राजु और पिडमेल के जुदेव ने हिडमे को पकड़ा और गांव वालों के ही सामने उसकी साड़ी उतरवाई, एक छोटा सा टावेल पहनाई और जंगल की ओर ले गए. सामूहिक बलात्कार के बाद उसे 20 गोलियां मारी गयी जिससे उसके शरीर का हर अंग कट गया था. गांव में और जंगल में भी विरोध करने पहुंचे ग्रामीणों की बेदम पिटाई की गयी और उन्हें खदेड़ा गया था. हिडमे की जघन्य हत्या के बाद दूसरे दिन उसकी लाश लेने पंचायत सचिव द्वारा खबर भेजी गयी. हिडमे की मां सहित ग्रामीण कोण्टा से हिडमे की लाश लाकर 14 जून को दफनाए.

बस्तर आईजी एसआरपी कल्लूरी ने अपने गोएबलीय अंदाज में बेशर्मी से वॉट्सएप पर एक ग्रुप में 13 जून के ही दोपहर एक बजकर सात मिनट पर किष्टारम एरिया की माओवादी मेंबर हिडमे के पुलिस मुठभेड में मारे जाने की खबर भेजी थी. साथ ही नयी वर्दी में हिडमे की लाश की तस्वीर भी. तस्वीर को लेकर सोशल मीडिया में तीखी प्रतिक्रियाएं व्यक्त हुई. सुकमा के पुलिस अधीक्षक एके एलेसेला ने अपने वहशियाना बयान में कहा कि पोस्टमार्टम के बाद शरीर का हर हिस्सा अलग–थलग हो ही जाता है. फर्जी मुठभेड की कहानी को बयान करती नयी वर्दी जिसे हिडमे को पहनायी गयी थी, को पुलिस ने सीज कर लिया था, उसे परिजनों को नहीं दिया गया

सच्चाई जानने जब आम आदमी पार्टी की नेत्री सोनी सोढ़ी सहित अन्य कार्यकर्ता गोमपाड़ जाना चाहा तो पुलिस ने उन्हें सुकमा में ही जबरन रोक लिया था. कांग्रेस विधायक लखेश्वर बघेल के नेतृत्व में 6 विधायकों के दल को तथ्यान्वेषण के लिए जब कांग्रेस पार्टी ने इलाके में भेजा पुलिस यह कहते हुए कि माओवादी रास्ते में एंबुश लगाये हैं, उन्हें सुकमा में ही रोक रखा था. मजबूरन जांच दल को वहीं से वापस आना पड़ा. विधायक कवासी लखमा ने प्रेस को जारी बयान में यह कहा कि सच्चाई को सामने लाने से रोकने के लिए ही पुलिस ने कांग्रेस जांच दल को आगे बढ़ने नहीं दिया. आम आदमी पार्टी और हिड़मे के परिजनों ने हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी जिसकी सुनवाई करते हुए हाई कोर्ट ने शव का फिर से पोस्टमार्टम कराने का आदेश दिया. कोर्ट के आदेश के बाद शव का दोबारा पोस्टमार्टम कराया गया है.

हिडमे की बर्बर हत्या के खिलाफ छत्तीसगढ़ सहित देश भर के जनवादी, प्रगतिशील बुद्धिजीवियों, मानव अधिकार संगठनों, आदिवासी, गैर–आदिवासी सामाजिक संगठनों की ओर से जबर्दस्त विरोध दर्ज हुआ है जो स्वागतेय है. लेकिन आज के वक्त इतना ही काफी नहीं है. बस्तर सहित दण्डकारण्य ही नहीं देश के समूचे संघर्ष इलाकों की उत्पीड़ित जनता पर जारी नाजायज युद्ध–ऑपरेशन ग्रीनहंट के खिलाफ व्यापक जन आन्दोलन खड़ा करने की जरूरत है.

'एक लाश लाओ! एक आउट ऑफ टर्न प्रमोशन पाओ!'. साथ ही लाखों का ईनाम भी. कल्लूरी ने हाल ही में खुलेआम घोषणा की कि एक के बदले 12 को मारेंगे. बेकसूर आदिवासियों को मार गिराने व ईनामी माओवादी घोषित करने का खेल बदस्तूर जारी है.

कई महिला कॉमरेडों को गिरफ्तार करके झूठे मामलों में फंसाकर सालों–साल जेलों में सड़ाने में उन्हें मजबूर किया जा रहा हैं. छत्तीसगढ़ जेलों में कॉमरेड्स निर्मला, पद्मा व मालती इसी तरह लंबे समय से जेल में सड़ रही हैं. संघर्षरत महिलाओं पर जारी फासीवादी दमन के परिप्रेक्ष्य में इस वर्ष के 8 मार्च – अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन आह्वान दे रहा है कि दंडकारण्य की तमाम क्रांतिकारी महिलाएं अपने संघर्ष विरासत को आगे बढ़ाएं.

उत्तर गडचिरोली डिविजन की लड़ाकू जनता की
बहादुर क्रांतिकारी नेत्री कॉमरेड रजिता अमर रहे!

9 मई, 2016 को गडचिरोली जिले के ओर्रेकस्सा गांव के एक घर में जब उत्तर गडचिरोली डिविजनल कमेटी सदस्या कॉमरेड रजिता (सम्मा उसेंडी) और एक कॉमरेड के साथ पनाह ली थी, तो इसकी सूचना एक गद्दार के जरिए गडचिरोली पुलिस को मिली थी. सूचना पाकर सैकड़ों सी–60 कमांडो व जिला पुलिस बल ने घर व गांव को चारों तरफ से घेर लिया था. रात 2 बजे तक ऑटो फायरिंग और मोर्टार शेल्लिंग के करते रहे थे. सरेंडर होने की पुलिस की चेतावनी को धत्ता बताते हुए हमारे दोनों कॉमरेडों ने निर्भीकता एवं बहादुरी के साथ पुलिस का मुकाबला किया था. यह जानते हुए भी कि उनके बचने की संभावना नहीं है उन्होंने आखिरी दम तक लड़ने व दुश्मन को नुक्सान पहुंचाने की ठान ली थी. इन वीर योद्धाओं का मुकाबला करने में नाकाम, डरपोक पुलिस बल ने उन्हें मारने मानवता की तमाम सीमाओं को पार कर व युद्ध के तमाम नियमों को ताक पर रखकर आला पुलिस अधिकारियों के आदेशों पर घर को आग लगा दी थी. इतनी भीषण गोलीबारी होने के बावजूद हमारे एक जांबाज योद्धा पुलिस के घेरे को तोड़ते हुए निकल गया था. साहसिक जन नेत्री व वीर योद्धा कॉमरेड रजिता ने आखिरी दम तक दुश्मन का मुकाबला करते हुए अपनी जान की कुरबानी दी. भारत के क्रांतिकारी इतिहास में वीरतापूर्ण कुरबानी की अमिट छाप छोड़कर चली गई. क्रांतिकारी इतिहास के पन्नों में वह एक साहसिक अध्याय बन गई.

महाराष्ट्र के गडचिरोली जिला, एटापल्ली तहसील के पोटावि जेवेल्ली गांव में 34 वर्ष पहले कॉमरेड रजिता पैदा हुई थी. पोटावि जेवेल्ली वह गांव है जिसने न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया की क्रांतिकारी जनता को अपनी वीरता का परिचय देकर शहीद होनेवाली वीरांगना कॉमरेड रनिता को जन्म दिया था. अपने क्रांतिकारी जीवन के प्रारंभिक दिनों में रजिता ने रनिता के मार्गदर्शन में ही काम किया था. शहादत में भी उसने रनिता का मार्गदर्शन अपनाया.

मां राजे और बाप बिरजू उसेंडी की पांच संतानों में कॉमरेड रजिता सबसे छोटी बेटी थी. मां–बाप ने अपनी लाड़ली बेटी को सम्मा नाम दिया था. कॉमरेड सम्मा ने चौथीं कक्षा तक पढ़ाई की. गरीबी ने उसे आगे पढ़ने का मौका नहीं दिया.

क्रांतिकारी गांव में पलने–बढ़ने की वजह से छोटी उम्र में ही कॉमरेड सम्मा क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति आकर्षित हुई थी. जब वह 16 वर्ष की हो गई, उसने क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में शामिल हुई. कॉमरेड रनिता के नेतृत्व में वह अपने गांव में पितृसत्ता विरोधी आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया. आदिवासी समाज से लेकर पूरे देश व दुनिया में जड़े जमाये पितृसत्ता को समझने की उसने कोशिश की. उस पितृसत्ता को उखाड फेंक़ने के एक ही रास्ते के रूप में वर्ग संघर्ष को अपनायी. रजिता ने गांव की केएएमएस कमेटी की सदस्या बनकर महिलाओं को इकट्ठा किया. महिला आन्दोलन में उसकी सक्रिय भूमिका को देखते हुए 2001 में उसे पार्टी सदस्यता दी गई. पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद जन संगठन, मिलिशिया व क्रांतिकारी जनताना सरकार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

उसने ग्राम रक्षा दस्ते में भी काम किया. 2002 में जब वह ग्राम रक्षा दस्ते की डिप्युटी कमांडर थी, दमन से डर कर उस दस्ते के कमांडर ने अपनी जिम्मेदारी छोड़ी थी. तब कॉमरेड रजिता ने कमांडर की जिम्मेदारी संभाली.

2004 की आखिरी में उसने पेशेवर क्रांतिकारी बनकर गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुई थी. कसनसूर दस्ते में काम करते हुए उसने जनता के जीवन, सुख–दुःख व उनके ऊपर अमल होने वाले शोषण–उत्पीड़न को गहराई से समझने और उन्हें संगठित करने का प्रयास किया. मार्क्सवादी सिद्धांत के उजाले में जनता को मर्गदर्शन देना उसने सीख लिया था. उसकी क्षमता व समझदारी के कारण पार्टी ने उसे एलओएस कमांडर का जिम्मा सौंपा. 2012 में उसे कसनसूर एसी की सचिव की जिम्मेदारी दी गई, जिसे निभाते हुए उसने उस इलाके के आंदोलन का दिशा निर्देशन देते हुए हजारों जनता को अंदोलन में गोलबंद किया. मिलिशिया की भर्ती बढ़ाने में, जनता को जन युद्ध में गोलबंद करने में उसका प्रयास हमेशा रहा. 2014 में पार्टी द्वारा चलाए गए नेतृत्व विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्रा बनकर उसने अपनी सैद्धांतिक व सांगठनिक क्षमता को बढ़ाने की कोशिश की. डिविजन के राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक कामकाज का विश्लेषण व संश्लेषण करके नयी कार्यनीति बनाने के लक्ष्य से 2012 व 2016 में आयोजित डिविजनल प्लीनमों में उसने सक्रिय भूमिका अदा की. 2016 में वह डिविजनल कमेटी में चुनी गई.

कॉमरेड रजिता एक साहसिक कमांडर थी. 2003 में जब वह ग्राम रक्षा दस्ते की कमांडर थी, तब आयोजित कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान के तहत उसने अपने

दस्ते को लेकर कसनसूर कैंप पर हमला किया. इसके अलावा मिलिशिया में रहते समय, और कुछ सैनिक कार्यवहियों में उसकी सक्रिय भागीदारी रही.

2005 से लेकर अपनी शहादत तक डिविजन में आयोजित हर कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान में कसनसूर कमांड में रहते हुए उसने अपनी भूमिका निभाई. मुकाम पर दुश्मन द्वारा किए गए हमलों व दुश्मन पर पीएलजीए द्वारा किए गए एंबुशों में वह बिना किसी गड़बड़ी के, हिम्मत के साथ दुश्मन से लोहा लेती थी. कई कार्यवाहियों में असाल्ट में रहकर उसने मोर्चा संभाला. एक हमले में जब अपनी साथी कॉमरेड घायल हो गई थी, कॉमरेड रजिता ने उसे एक हाथ से पकड़ कर दूसरे हाथ से कवर फायरिंग देते हुए किल्लिंग जोन से सुरक्षित निकाल लिया और बचा लिया. अपनी आखिरी व ऐतिहासिक लड़ाई में वह एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक सेना जैसी लड़ाई लड़ी थी.

2013 से 2016 जनवरी तक उसने एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार अध्यक्षा की जिम्मेदारी भी निभायी.

भर्ती से लेकर 2016 जनवरी तक उसने उस इलाके जहां वह पैदा हुई थी, में ही काम किया. अपने ही इलाके में लंबे समय तक काम करना, कोई असान बात नहीं होती है. खासकर जनता के बीच के अंतरविरोधों को हल करते समय कई बार इसलिए दिक्कतें आती हैं क्योंकि जनता में अपने बंधु–मित्र भी होते हैं. जन दिशा–वर्ग दिशा की कार्यशैली अपनाकर उसने न्याय के पक्ष में खड़ी होकर समूची जनता का विश्वास जीत लिया. अपने इलाके में काम करते हुए उसने दर्जनों नौजवानों को गुरिल्ला दस्ते में भर्ती किया. अपने बड़े भाई के बेटे कॉमरेड प्रदीप व काका की बेटी कॉमरेड माधुरी को भी उसने भर्ती किया. हालांकि दोनों कॉमरेड शहीद हो गए. उस वक्त उसने विचलित न होकर अपने परिजनों को हिम्मत दिलाया.

चौथी तक ही पढ़ाई करने के बावजूद पढ़े लिखे लोगों से मिलने में, उनके साथ राजनीतिक चर्चा करने में वह कभी हिचकिचाहट नहीं दिखाती थी. उसने समझ लिया कि एक वैज्ञानिक सिद्धांत के तौर पर मार्क्सवाद से बड़ी पढ़ाई और कोई नहीं है. मार्क्सवाद से लैस रजिता ने इसीलिए छात्रों से मिलकर उन्हें भी मार्क्सवादी राजनीति से लैस करने की कोशिश करती थी.

फरवरी, 2016 में उसका तबादला चातगांव एरिया में हुआ था. वहां जाकर ज्यादा दिन नहीं हुए कि उसने शहादत को पाया. जब वह घर में थी, रीति रिवाज के अनुसार उसकी शादी पारंपरिक तरीके से करने की कोशिश की गई, जिसका उसने कड़ा विरोध किया. पेशेवर क्रांतिकारी बनने के बाद भी चूंकि उसने शादी के प्रति दिलचस्पी नहीं दिखाई इसलिए वह अविवाहित रही.

एक पिछड़े हुए देश के और पिछड़े हुए इलाके के एक गरीब किसान परिवार में पैदा होनेवाली एक सीधी सादी युवती ने इस दुनिया को समझने के लिए कड़ी मेहनत की और बदलने के लिए अपनी जान ही कुर्बान की.साहस, मेहनती स्वभाव, सादगी, सीखने की ललक व जिद के साथ आज वह एक आदर्श कॉमरेड का मिसाल बन गई.

कॉमरेड रजिता अमर रहे!

मानवाधिकार संगठनों व एम्नेस्टी इंटरनेशनल के कार्यकर्ताओं से अपील

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) उत्तर गड़चिरोली डिवीजनल कमेटि सदस्य कॉमरेड सम्मा उसेण्डी (सम्मा) 8 मई 2016 को महावाडा गांव में हुई मुठभेड़ के बाद अलग होकर ओर्रेकस्सा गांव पहुंची. गांव के अंदर ही एक घर में पनाह ली, जिसकी गुप्त सूचना गड़चिरोली पुलिस को मिली तो सैकड़ों सी–60 बलों व थाना पुलिस ने घर व गांव को चारों तरफ से घेर लिया. मकान के चारों तरफ फोकस लाईटें लगा दी गई. आटो फायरिंग, शेल और मोर्टारों के धमाके, एमपीवी सहित पुलिस वाहनों की आवाजों से पूरा युद्ध जैसा माहौल बन गया था. यह सिलसिला 9 मई 2016 की रात 2.00 बजे तक तक चलता रहा. हमारे साथियों के पास मात्र दो बंदूकें थीं. दुश्मन चाहे तो उन्हें जिंदा पकड़कर जेल में डाल सकता था. लेकिन मानवता के तमाम सीमाओं व युद्ध के तमाम नियमों को ताक पर रखकर जिला पुलिस अधीक्षक संदीप पाटिल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेश रेड्डी व मंजूनाथ सिंगे के आदेशों पर कमाण्डों पुलिस ने कायरतापूर्ण हरकत पर तुल गई और घर को आग लगा दी. इतने भीषण गोलीबारी के बीच से हमारे एक जांबाज योद्धा राहुल पुलिस की आंखों में धूल झोंक कर उनके घेरे को तोड़ते हुए निकल गया. साहसिक जन नेता व वीर योद्धा कामरेड रजिता ने अपनी बंदूक की आखिरी गोली तक दुश्मन का मुकाबला करते हुए अपनी जान की कुरबानी दी. भारत के क्रांतिकारी इतिहास में वीरतापूर्ण कुरबानी की छाप छोड़कर चली गई. अपने जल–जंगल–जमीन पर संपूर्ण अधिकार के लिए हथियार उठाने वाली आदिवासी लाड़ली बेटी की इस निर्ममतापूर्ण व बर्बर हत्या ने एक बार फिर यह साबित किया कि आपरेशन ग्रीन हंट आदिवासियों के अस्तित्व को खतम करने वाला हरित आखेट के सिवा कुछ नहीं.

तमाम मानवाधिकार संगठनों, लोकतंत्र प्रेमियों, आदिवासियों के हितैषियों व प्रगतिशील बुद्धिजीवियों, तमाम तबकों के शोषित–उत्पीड़ित जनता से हमारा अनुरोध है कि गड़चिरोली पुलिस बलों द्वारा की जाने वाली इन कायरतापूर्ण हत्याओं की कड़ी निंदा करें और इन तथाकथित मुठभेड़ों का तथ्यान्वेषण करें तथा सच्चाई को नागरिक दुनिया के सामने उजागर करें.

पश्चिम सब जोनल ब्यूरो, दंडकारण्य भाकपा (माओवादी)

लंबे अरसे तक क्रांतिकारी आंदोलन में अनमोल योगदान देने वाली वरिष्ठ

कॉ. लक्ष्मी कॉ. सरोजा कॉ. नौरी बाई कॉ. जोगी कॉ. सुलोचना

संघर्षरत महिला पत्रिका के पिछले अंक यानी 2012 अक्तूबर के बाद से अब तक के गुजरा वर्तमान इतिहास कईयों शहीदों के अनमोल बलिदानों से गुंथी हुई है. इन में कॉमरेड्स गड्डम लक्ष्मी (महिता), नोहरी बाई (समिता), गज्जेला सरोजा (शहीदा), मडकम जोगी (शांतक्का), आयिलम सुलोचना (नवता) जैसी सीनियर महिला साथी शामिल हैं, इन्हें सम्मान के साथ स्मरण करते हुए नम्र श्रद्धांजलि पेश कर रही है.

कॉमरेड गड्डम लक्ष्मी (महिता)

तेलंगाना राज्य, जिला नलगोण्डा, कंदाबंडा गांव में जन्मी थी. 1983 में पेशेवर क्रांतिकारी बनी. कठिन क्रांतिकारी संघर्ष में उन्होंने अनेक उतार–चढ़ावों को क्रांतिकारी स्फूर्ति के साथ पार की. अपने वैवाहिक जीवन में जीवन साथियों के आंदोलन से पीछे हटने के बावजूद वे क्रांति के राह पर अटूट विश्वास के साथ आगे बढ़ती चली. लगभग तीन दशकों तक उन्होंने आन्ध्रप्रदेश, एओबी, मध्य रीजनल ब्यूरो के तहत कई क्षेत्रों, व विभागों के माध्यम से जनता की सेवा की. अपने 50 साल के उम्र में 29 अप्रैल 2013 को शहादत को पाई. अपने अथक परिश्रम और निरंतर अध्ययन शीलता से उन्होंने सैद्धांतिक मामलों पर अच्छी पकड़ हासिल की थी. शहादत के समय तक वो राज्य स्तर की नेता के रूप में मध्य रीजनल पोजिटिकल स्कूल(रीपोस) संचालन की जिम्मेदारी निभा रही थी.

कॉमरेड गज्जेला सरोजा (शहीदा)

तेलंगाना राज्य आदिलाबाद जिला बेल्लमपल्ली शहर में सिंगरेनी कोयला खदान के कामगार बस्ती में जन्मी थी. क्रांतिकारी माहौल में उनका बचपन गुजरा. उनका पूरा परिवार क्रांतिकारी परिवार था. 1980 के दशक की शुरुआती दौर में क्रांति संघर्ष में प्रवेश की थी. लगभग तीन दशकों तक तेलंगाना व दंडकारण्य के विभिन्न इलाकों में उन्होंने क्रांति संघर्ष को आगे ले जाने के लिए अपना योगदान देती रही. 1999 में उनके जीवन साथी कॉमरेड नल्ला आदिरेड्डी (श्याम)की शहादत से हुई वियोग को उन्होंने दंडकारण्य के बच्चों के प्यार से उभरने का प्रयास किया. शहादत के समय तक एरिया कमेटि स्तर पर दंडकारण्य में संचालित क्रांतिकारी जनतना सरकार स्कूल में अध्यापन कार्य चला रही थी. अपने 50 साल के उम्र में कैन्सर की बीमारी से उनका देहावसान हुआ.

नोहरी बाई (समिता)

दंडकारण्य इलाके में स्थित गडचिरोली जिला, टिप्रागढ एरिया मरकानार गांव में जन्मी कॉमरेड समिता 1992 में छापामार दस्ते की सदस्य बनी. लगभग दो दशकों के तक दंडकारण्य के विभिन्न डिवीजनों व विभागों में अपनी सेवाएं प्रदान की. अपने 48 वी साल के उम्र में 7 फरवरी 2013 को कैन्सर की बीमारी से उनकी मृत्यु हुई.

कॉमरेड मडकम जोगी (शांतक्का)

कॉमरेड शांतक्का लगभग 50 साल के पहले दंडकारण्य के गोद में आंख खुली. दक्षिण बस्तर डिवीजन जेगुरगुण्डा एरिया कार्कनगूडा गांव में अपना गृहस्थी बसाने वाली कॉमरेड जोगी 1995 में पेशेवर क्रांतिकारी बनी. लगभग दो दशकों तक उन्होंने दक्षिण बस्तर डिवीजन आंदोलन के विकास के लिए अपना योगदान दी. मई 2014 को अस्वस्थता के चलते अंतिम बिदा ली. शहादत के समय तक वो जेगुरगुण्डा एरिया कमेटी सदस्य रहते हुए अपना योगदान रे रही थी.

कॉमरेड अयिलम सुलोचना (नवता)

कॉमरेड नवता तेलंगाना राज्य, निजामाबाद जिला संगोजीवाडि गांव में 45 साल पहले जन्म ली थी. 2000 में वो पेशेवर कार्यकर्ता बनकर गुरिल्ला दस्ते में शिरकत दी. कुछ समय तक तेलंगाना में काम करने के बाद दंडकारण्य की ओर कदम बढ़ाई. दक्षिण बस्तर डिवीजन किष्टारम एरिया कमेटि सदस्य व जनतना सरकार के कृषि विभाग का इंचार्ज की हैसियत से काम करते हुए 3 जुलाई 2016 को शहीद हुई.

जेलों में महिला कैदियों द्वारा जारी आंदोलन संघर्ष के नये मोर्चे खोली है

चहरदीवारी के अंदर चलने फिरने व बोलचाल पर पाबंदी लगा हुआ एक सुनसान दमनकारी प्रदेश है जेल की कोठरी. जेल बनाने के पीछे दमनकारी सरकारों मा मकसद वही था. गांव, कस्बा, शहरों में सक्रिय रहते हुए, मुद्दों पर सवाल उठाते हुए दस इंसानों को गोलबंद करके संघर्ष खड़ा करने वाले आंदोलन कारियों को इन लुटेरी सरकारें बरदाश्त नहीं करती हैं. उनका गला घोंट देने, बेड़ियों से जकड़ देने तथा उनके तमाम क्रिया कलापों पर रोक लगाने कोई कसर नहीं छोड़तीहैं ऐसे इंसानों को जेलखाने में बंदी बनाने के लिए इन लुटेरी सरकारों के लिए संविध ाान आड़ा नहीं आयेगा. क्योंकि उन्हें संविधान का सम्मान नहीं करना पड़ता है. कानून उसे भरपूर सहयोग देते हैं. क्योंकि खुद तो उन्हें बनाती है. यह तो जगजाहिर ही है कि इन कानूनों से जनता को न्याय नहीं मिलेगा. जेलें यम सदन होते हैं, इस सच्चाई से सब वाकिफ हैं. लूट के खिलाफ संघर्षों के दौरान लुटेरी राज्य यंत्र के खिलाफ भी मोर्चा खुला रहा है. संविधान का उल्लंघन, कानूनों की त्रुटियां, अदालत और कचहरी में जन वाणी को ऐंठने का आरोप जनवादियों, नागरिक अधिकार संगठन व कार्यकर्ता सवाल उठा रहे हैं और आंदोलन पर उतर रहे हैं. पुलिस प्रशासन के अत्याचारों व काले कारनामों का आम जनता से लेकर बुद्धिजीवियों तक तमाम तबकों के लोग भर्त्सना कर रहे हैं. और उनके खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं. ऐसे आंदोलनरत कार्यकर्ताओं व नेताओं पर फर्जी आरोप लगाकर जेल भेजना भी आम बात हो गई है. लेकिन क्रांतिकारी जेल से नहीं डरते हैं. गिरफ्तारियों से क्रांति नहीं रुकेगा.

हथेली से सूरज की रोशनी को ढांक नहीं सकेगा.

गिरफ्तारियों से जन सैलाब नहीं थमेगा. – नारा बुलंद करते हुए जेलों में जंग का ऐलान कर रहे हैं. छत्तीसगढ़ व महाराष्ट्र के जेलों में महिला राजनीतिक बंदियों का संघर्ष उल्लेखनीय है. जो जेल अधिकारियों के लिए सिरदर्द बन गया. उन्हें बहुत ही हैरान किया जा रहा है.

महाराष्ट्र के नागपुर जेल में कैद एंजेला सोनटक्के द्वारा उठाये जानेवाले सवालों से जेल प्रशासन तिलामिला रही हैं. जेल प्रशासन का भ्रष्टाचार के खिलाफ जेलों में बंद तमाम कैदियों को गोलबंद करके उन्हें जागृत बनाने का प्रयास की थी. जेल मैन्युअल के मुताबिक कैदियों को देने वाला राशन में कटौती करना, रोजमर्रे की जरूरत चीज नहीं देना इसके विरोध में अनशन आंदोलन शुरू किये थे. इसके बाद एंजेला को सिंगल सेल में रखे थे. इसके बावजूद एंजेला हिम्मत के साथ खड़ा होकर जेल कैदियों के समर्थन में खड़ी रही. दस साल के लंबे समय के बाद सितम्बर 2016 को सुप्रीम कोर्ट ने एंजेला को जमानत मंजूर की.

छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर, जगदलपुर जेलों में कॉमरेड्स मालती, मीना, निर्मला, पद्मा इत्यादि कॉमरेडों के नेतृत्व में आंदोलन चलें. मीना 2016 में जेल से छूट गई. ऐसे कई साथी जेल जा रहे हैं और छूटकर आ रहे हैं. लेकिन मालती, निर्मला और पद्मा को जमानत नहीं मिल रहा है. इनके साथ मडकम गोपन्ना, जयपाल जैसे वरिष्ठ साथी जेलों में बंद पड़े हैं. मधु, रैनू और कुछ साथियों को आजीवन कारावास सजा हुई. जेल में खाने पीने का निकृष्ट या घटिया प्रमाणों के चलते कैदियों का स्वास्थ्य की हालात बिगड़ रही है.

वर्ष 2013 में पहलीबार जगदलपुर जेल में 10 दिन का भूख हड़ताल के बाद खाने–पीने के मामले में कुछ बदलाव आया है. नियम अनुसार मुलाकात की सुविधा उपलब्ध किया गया है. बीच बीच में मुलाकात देने भी अड़ंगा पैदा कर रहे हैं. मुलाकात नहीं देना, देने से भी कम समय यानी 15 मिनट तक ही मुलाकात करने दे रहे हैं. कैदियों को तंग करने का अधिकारियों के पास कई सारे उपाय रहते हैं. रोजमर्रे का काम से लेकर छोटी–छोटी चीजें भी उपलब्ध न करते हुए कैदियों को परेशान करते हैं. लैट्रिन जाने के लिए पानी की बाल्टी गायब करते हैं. बाल्टी के लिए भी नंबरदारों व जेल अधिकारियों से दो–चार होना पड़ता है. इससे भी हल नहीं होने से अनशन तक जाना पड़ता है.

महिला कैदियों के वार्ड के अंदर यहां तक कि बाथरूम तक में सीसी कैमेरा लगाये गये हैं. महिलाओं की हर दिनचर्या का अधिकारी अपने कमरों में बैठे–बैठे कंप्यूटरों में देख सकते हैं. महिला कैदियों ने सीसी कैमरों का कड़ा विरोध किया. हटा देने का आश्वासन तो दिया गया. बाद में पूरी तरह हटाया गया या नहीं महिला कैदियों की शंका तो पूरा साफ नहीं हो पाया.

सप्ताह में एक बार तलाशी लेते हैं. तलाशी के पहले कैदी अपने सामान असबाब एक जगह ढेर बनाकर उनके सामने बैठे रहना पड़ता है. अधिकारी आकर कैदी और उनके असबाब का जांच करते हैं. यह प्रक्रिया बहुत ही

शेष पृष्ठ 27 मे....

अपील

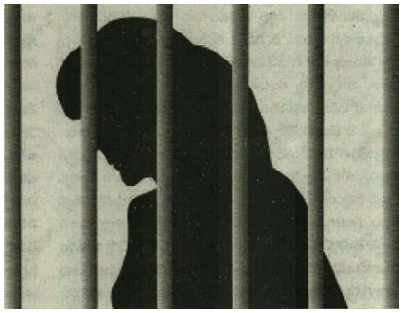

कॉमरेड निर्मला एवं पद्मा को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर जेल से रिहाई करने की मांग को लेकर प्रचार अभियान संचालित करें!

यह है असभ्यता का एक मामला. यह है लोकतंत्र के न्यूनतम मूल्यों का घोर उल्लंघन का मामला. यह सरकार के पाशविक दमन का मामला भी है. इस मामले से हर कोई आसानी से समझ सकते है कि क्रांतिकारियों एवं संघर्षरत जनता के खिलाफ देश की विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका कितने एकजुट होकर काम करती हैं. देश के प्राकृतिक संसाधनों को बेरोकटोक लूटने के लिए सीपीआई (माओवादी) के उन्मूलन के लक्ष्य से केंद्र व राज्य सरकारे ऑपरेशन ग्रीनहंट के नाम पर दमन को बढ़ावा दे रही हैं. ऑपरेशन ग्रीनहंट का मतलब है कि भारत सरकार द्वारा देश की जनता पर थोपा गया युद्ध. विस्थापन के खिलाफ और जल–जंगल–जमीन पर अपने अधिकार के लिए संघर्षरत आदिवासियों की लड़ाई का माओवादी कार्यकर्ताएं नेतृत्व कर रहे हैं. इस प्रकार जनता के पक्ष में खड़ी पार्टी की कार्यकर्ताएं हैं निर्मला एवं बेल्लाला पद्मा

. इसलिए उन्हें लंबे समय से जेल में सड़ाया जा रहा है.

गिरफ्तार की गई इन दोनों पर झूठे मामले थोपे गये. उचित रूप से न्याय प्रक्रिया का पालन नहीं किया जा रहा है. पद्मा को दो बार रिहा कर दिया गया और दोनों वक्त जेल गेट से ही फिर गिरफ्तार किया गया तथा नये झूठे मामले थोपे गये. यह साबित करता है कि सरकार अपने ही कानूनों का न सम्मान करती है ना ही उनका पालन करती है.

निर्मला और पद्मा दोनों भी अस्वस्थ हैं. निर्मला को अलर्जी है जिसकी वजह 24 किस्म के खाद्य पादार्थों का वे परहेज करती हैं. अस्वस्थ्यता के बावजूद उनको लगभग हर दिन अदालत जाना पड़ता है. गिरफ्तारी के पहले से ही पद्मा के पैरों में दर्द था, अब कैद में थैरायिड का शिकार हो गई. उन्हें रिहा करके सही प्रकार का इलाज और खाना, जिनसे जेल में वें पूरी तरह वंचित हैं, उपलब्ध कराना चाहिए. ये दोनों को मध्य भारत के छत्तीसगढ़ के जगदलपुर जेल में आठ साल से रखा गया है. पुराने मामलों में बरी होने पर नए मामले थोपा जा रहे हैं.

हम चाहते हैं कि ये दोनों कॉमरोडों की हालत की ओर दुनिया की नजर खींचा जाए. मानवाधिकार व सामाजिक कार्यकर्ताओं, क्रांतिकारियों, जनवादियों, देश भक्तों व जनता से हमारी अपील है कि वे सरकार के इस अमानवीय रवैया के खिलाफ एवं निर्मला और पद्मा की रिहाई की मांग को लेकर अवाज बुलंद करें.

ये है उनकी गिरफ्तारी और कारावास का ब्योरा

3 अगस्त 2007 को पहली बार पद्मा की गिरफ्तारी हुई थी. उन्हें दस दिन तक अवैध तरीके से हिरासत में रख कर 13 अगस्त को अदालत में पेश किया गया. बाद में वे जगदलपुर केंद्र कारागार भेजी गई थीं. दो वर्ष के बाद 10 अगस्त 2009 को बीजापुर जिला सत्र न्यायालय ने सभी मामलों से पद्मा को बरी कर दिया. पद्मा ने चाहा था की वे अपनी बुजुर्ग मां और अस्वस्थ बड़ी बहन के पास जाए. अदालत के फैसला आने के तुरंत बाद छत्तीसगढ़ की पुलिस ने पद्मा को अपने हिरासत में ले लिया और कई पुलिस थाने घुमाया. अगस्त 11 को पुलिस एक नया वारंट बना कर, उसी दिन आधी रात को पद्मा को रायपुर केंद्र कारागार ले गयी. अगले दिन रायपुर जेल से उन्हें 'रिहा' किया गया. लेकिन जब उन्होंने जेल गेट के छोटा दरवाजा से कदम बाहर रखा था, पुलिस का झुंड नया वारंट के साथ आया. उस कथित रिहाई के महज आधे घंटे के भीतर ही पद्मा को फिर रायपुर केंद्र कारागार के महिला वार्ड में रखा गया. उन पर चार नए मामले थोपे गए.

उन्हें कई बार पेशी नहीं ले गया. दूसरी बार गिरफ्तार करने के कुछ समय के बाद अदालत द्वारा सभी मामले खारिज किए गए. जब 18 दिसंबर 2014 को आखरी केस खारिज कर दिया गया जब पुलिस पद्मा को जगदलपुर जेल ले गई थी और अगले दिन वे 'रिहा' कर दी गई थी. पहले की तरह बड़ी तादाद में तैनात पुलिस पद्मा को कोतवाली पुलिस थाना ले गयी. नया वारंट बनाने तक यानी दोपहार एक बजे तक उन्हें वहीं पर रखा गया था. इस प्रकार जगदलपुर जेल के महिला वार्ड में पद्मा की जेल जिंदगी फिर शुरू हुई.

जब पहली बार पदमा गिरफ्तार की गयी, तब उन पर जो मामले थोपे गए थे, दरअसल वो दुसरी पद्मा के खिलाफ दर्ज हुए थे. बीजापुर जिले के भोपालपट्णम में घटित घटना में 25–27 वर्ष की पद्मा अभियुक्त थी. लेकिन उस वक्त बेल्लाला पद्मा की उम्र सिर्फ 15 थी और वे 9वीं कक्षा में पढ़ रही थीं. 1999 में कांकेर जिले के आमाबेडा थाने में पद्मा के खिलाफ और एक मामला दर्ज हुआ. उस समय बेल्लाला पद्मा की उम्र 25 थी. जबकि मामले में अभियुक्त पद्मा की उम्र 20 थी. बीजापुर जिले के पर्सगढ़ एरिया में दर्ज होने वाले अन्य मामले में अभियुक्त पद्मा की उम्र 25 थी. लेकिन उस समय बेल्लाला पद्मा की उम्र 33 की थी. उन पर कोंडागांव जिले के दो मामले और नारायणपुर जिले के एक मामला दर्ज हैं.

पुलिस द्वारा दर्ज मामलों के मुताबिक पद्मा के नाम पर तीन अलग अलग महिलाएं हैं बेल्लाला पद्मा ये तीनों से अलग हैं. इन तथ्यों का उल्लेख करते हुए पद्मा ने संबंधित न्यायाधीश को पत्र लिखा था, जिसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी.

निर्मला की गिरफ्तारी जुलाई 2007 में हुई थी. उन पर 148 मामले थोपे गए जो कि शायद देश में अभूतपूर्व हो. इतनी बड़ी तादाद में मामले थोपे गए कोई दूसरे कार्यकर्ता अब तक नहीं हों. उन पर थोपे गए मामले समूचे बस्तर खासकर दंतेवाडा और बीजापुर दायरे के हैं. 2015 के बीच के समय में 135 मामले खारिज हुए. लगभग 10–12 मामले बचे हैं. उन्हें कैसे फंसा दिया और अब तक बंधक बना दिया, यह समझना किसी को भी कठिन नहीं होगा. चूंकि पुलिस यह नहीं चाहती है कि निर्मला जेल से निकल जाए इसलिए उन पर अन्य 24 झूठे मामले थापे गये. ऐसे पुराने मामले हटा दिया जा रहा है, नया मामले दायर किया जा रहा है.

उन पर बीजापुर जिले के भोपालपट्णम में छह मामले दर्ज हुए हैं. उसी जिले के मिर्तुल और भैरमगढ़ में एक–एक तथा मारडुम में दो, परसागढ़ में छह, सुकमा में एक, कोंडागांव में एक और कांकेर जिले के कोयलीबेड़ा में 15 मामले दर्ज हुए हैं. दरअसल पुलिस के रिकार्ड्स के मुताबिक ये मामले जिस निर्मला के खिलाफ दर्ज हैं उस निर्मला के पती का नाम प्रभाकर है. लेकिन इस निर्मला के पती चंद्रशेखर रेड्डि (जयपाल) है और वे भी जगदलपुर जेल में हैं. निर्मला पर रायपुर के प्रसिद्ध सीडी केस भी थोपा गया है. दर्ज हुए बहुत मामलों में अभियुक्त की उम्र और पती या पिता का नाम नहीं लिखा गया है जो कि कानूनन अनिवार्य है.

निर्मला, पद्मा और अन्य अनेक राजनीतिक बंदियों को एस्कार्ट न होने का बहाना करके पेशियों में अक्सर नहीं ले जाया जाता है. न केवल इसी वजह बल्कि पुलिस भी यही चहती है इसलिए मामले लंबे समय खींचा जा रहे हैं. हर छोटी और बड़ी सुविधा जो जेल मैनुवल के मुताबिक बंदियों का अधिकार है, को हासिल करने पद्मा और निर्मला को अन्य महिला कैदियों के साथ मिलकर भूख हड़ताल या जुबानी जंग करनी पड़ती है. जेल जिंदगी में मौजूद भौतिक व मानसिक तनाव उन्हें और अस्वस्थ करता है.

सभी लोगों से हमारी अपील है कि लंबे समय से सड़ रहे कॉमरेडों की रिहाई के लिए मदद दें.

विकल्प
प्रवक्ता
दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
सीपीआई (माओवादी)

बस्तर के कुख्यात आईजी कल्लूरी और पुलिसिया गुण्डावाहिनियों का आतंक के कुछ नजारें .....

मुठभेड़ को बताया फर्जी, जवानों पर ग्रामीणों ने लगाया हत्या का आरोप

नक्सलियों ने की थी फायरिंग

अनाचार के बाद युवती की हत्या कर बताया माओवादी

ताड़मेटला कांड पर सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा

फोर्स ने ही आदिवासियों के घर जलाए थे: सीबीआई

कोर्ट ने सरकार से कहा– शांति के लिए शुरू करें नक्सलियों से बातचीत

तीन महिलाओं से दुराचार, 252 घर जलाए गए थे

सरकार व पुलिस के झूठ का पर्दाफाश : नंदिनी

कुछ नहीं कहना

प्रतिरोध में दंडकारण्य महिला

समाज के लिए हिंसा कोई नई चीज नहीं है. हिंसा के बगैर किसी समाज का अस्तित्व ही नहीं रहा. इस हिंसा में, जायज और नाराजय दोनों किस्म शामिल हैं. आदिम समाज में आदमी जिंदा रहने के लिए जानवरों को मारके खाना जायज था, लेकिन सत्ताधारियों द्वारा अपनी सत्ता चलाने इंसानों को मारना नाजायज हिंसा है. समाज विकास क्रम में महिला दोयम दर्जे की नागरिक बनाई गई वह प्रक्रिया और भी जारी है. यही है पितृसत्ता. समाज के साथ–साथ पितृसत्ता भी अपने रूप बदलता आ रहा है. ऐसे ही एक बदलाव ने घर की चहरदीवार से महिलाओं को बाहर लाई, ताकि उसके श्रम का अत्यधिक शोषण कर सके. इसीलिए पितृसत्ता की अवधारणा शोषण के साथ जुड़ी हुई है. मात्र पितृसत्ता अलग नहीं रहता, वह श्रम का शोषण के साथ मिलकर है. अतः शोषण का एक हिस्सा है. समाज अपने अनुकूल इन तरीकों को बदलती आई हैं. यह ऐसी पितृसत्ता है वह केवल महिलाओं का ही शोषण नहीं करता बल्कि पुरुषों, यहां तक कि पूरा समाज को गुलाम बनाये रखने के लिए एक माध्यम रहा, जो अभी भी जारी है.

जन आंदोलनों पर दमनकारी हथकण्डों के बारे में जानना चाहे तो लंबा फेहरिस्त से गुजरना होगा. यह एक जिला या एक राज्य तक सीमित नहीं है. वर्तमान में महाराष्ट्र के गड़चिरोली जिले से लेकर छत्तीसगड़ के विभिन्न जिलों में गठित कुछ घटनाओं के बारे में जानें.

गडचिरोली डिविजन में उडेरा गांव की मैनी पुंगाटी के साथ पुलिस कमांडों द्वारा की गई घिनौनी हरकतों के विरोध में 19 मई, 2015 को एटापल्ली में करीब दस हजार लोगों ने रैली निकाली.

11 मई, 2015 को गड़चिरोली जिले के एटेपल्ली तहसील के उडेरा गांव में महुआ बिनने वाली मैनी पुंगाटी और उनकी बेटी को पकड़ कर, यातनाएं देकर पुलिस ने उनके साथ अभद्र व्यवहार किया और उन्हें डराने हवा में गोली चलाईं. बाद में मैनी को बूर्गी पुलिस थाने ले गए. हालांकि गांव के लोग पुलिस से लड़कर मैनी को छुड़ा ले आए.

युवा नक्सलियों के प्रभाव में न जाए इसलिए गडचिरोली पुलिस 'महाराष्ट्र दर्शन' के नाम पर युवा लोगों को चुन कर शहरों का पर्यटन करने के लिए भेज रही है. इसी के तहत सातवें मर्तबा 2015 की पहली बरसात में धनोरा तहसील के गोड्डलवाही शाला की कुछ छात्राएं भेजी गईं. इनमें से पावुरेल्ली गांव की दो किशोरियों को पुलिस ने यात्रा पूरी होने के तुरंत बाद घर नहीं भेजा था. अपने साथ रख कर उनके साथ बलात्कार करके कुछ दिन के बाद घर भेजा था. इससे तीव्र अस्वस्थता का शिकार होकर एक लड़की ने घर आने के एक, दो दिन बाद ही दम तोड़ा था. जबकि दूसरी लड़की अपने कड़वे अनुभवओं को नहीं भुला पा रही है.

सितंबर, 2015 को कोंडागांव जिले के छिंदखडक गांव पर पुलिस ने हमला किया. इस दौरान बूढ़े, बच्चों तक को बेरहमी से मारा. महिलाओं के कपड़े फाड़ कर उनके साथ आपत्तिजनक व्यवहार किया. उनके घर में घुस कर सामान तहस नहस किया.

अक्तूबर, 2015 में पेद्दा गेल्लूर, चिन्ना गेल्लूर, पेगिडेपल्ली, गुंडम, बुड़गिन आदि गांवों पर पुलिस ने हमला किया. इस दौरान जनता के साथ बेदम मारपीट की. पुलिस के बर्बर हमले का शिकार होने वालों में 40 महिलाएं थीं. चार महिलाओं, जिनमें एक 14 वर्षीय बलिका व एक गर्भवती महिला शामिल थी, के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया. गर्भवती महिला को तालाब में डुबो–डुबोकर उनके साथ अत्याचार किया गया. इस घटना के विरोध में कई महिला संगठनों, आदिवासी सामाजिक संगठनों व राजनीतिक पार्टियों द्वारा आंदोलन किया गया जिसके चलते यह घटना उजागर हुई. अन्यथा यहां की अन्य कई घटनाओं की तरह यह भी इतिहास की अंधेरी गर्त में समा जाती.

4 जनवरी, 2016 को सुकमा जिले के कुन्ना, पेद्दा, गुड्रा गांवों पर हमला करके पुलिस ने उत्पात मचाया. एक महिला जो रास्ता दिखाने से इंकार किया था, के साथ बेदम पिटाई की. यहां गौर करने वाली बात यह है कि विगत में रास्ता दिखाने के नाम पर साथ ले जाकर कुछ युवाओं को जान से मार दिया गया था. उसके बाद घरों में घुसकर कई महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया. उनके कपड़े फाड़े. नौ महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया.

11–15 जनवरी, 2016 को बीजापुर जिले के पुन्नूर, नेंड्रा, गोट्टोड गांवों पर पुलिस ने हमला करके उत्पात मचाया. सात महिलाओं के साथ सामूहिक अत्याचार किया. कई महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया.

15 जुलाई, 2016 को बीजापुर जिले के फरसेगढ़ पुलिस थाने के अंतर्गत सुंचिकुंटा गांव की रुकनी नामक महिला के साथ पुलिस बल ने सामूहिक बलात्कार किया. पुलिस की यातनाओं के चलते वह बेहोश हो गई थी. उसी हालत में उन्हें पुलिस थाना ले जाया

गया था. उसके बाद उन्हें गायब किया गया.

अगस्त माह में बासागुड़ा, सारकेगुड़ा कैंप की पुलिस गुंडाम गांव को घेर कर 17 किसानों को पकड़कर बासागुड़ा थाना ले गयी थी. गांव के तकरीबन 200 महिलाएं व 14 पुरुष बासागुड़ा थाने को घेर कर सभी लोगों को छुड़ा लाए.

5 अगस्त, 2015 को पुलिस ने चिंतलनार साप्ताहिक बाजार पर हमला करके कुछ लोगों को पकड़ा था. पकड़े गऐ लोगों में सुरपनगुड़ा, मोरपल्ली, सिलंगेर और पेद्दा बोड़केल के लोग शामिल थे. पकड़े गए लोगों को वहीं पर यातनाएं देने लगे. पलिस की इस तरह की हरकतों को देख महिलाएं जो बाजार करने गयीं थीं, पुलिस के साथ भिड़ गयीं. उन्होंने थाने को भी घेरकर प्रदर्शन किया. महिलाओं के गुस्से के नतीजतन 5 जन को जेल भेज दिया गया. जबकि बाकी लोगों को छोड़ दिया गया.

इसी तरह अगस्त माह के दूसरे सप्ताह में मापाड़ गांव पर हमला करके 18 ग्रामीणों को पकड़ कर पुलिस ले गई. इसके विरोध में जनता 48 घंटे तक थाने का घेराव करके पुलिस के चंगुल से ग्रामीणों को छुड़ा लायी.

21 सितंबर, 2015 को गडचिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के गट्टेपल्ली गांव के युवक बिरसू आत्रम पर पुलिस ने गोली चलाई. इसके विरोध में करीबन सौ गांवों की जनता ने इकट्ठी होकर ऐटापल्ली में रैली की.

10 फरवरी, 2016 को गडचिरोली जिले के एटापल्ली शहर में 15 हजार लोगों ने पुलिस के आत्याचारों व विस्थापन के विरोध में भारी प्रदर्शन किया. इसमें हिंदू फासीवादी संघ परिवार की पार्टियों, संगठनों व व्यक्तियों को छोड़कर सभी तबके की जनता व राजनीतिक पार्टियां शामिल हुईं.

तेलंगाना–छत्तीसगढ़ पुलिस ने 30 सितंबर, 2015 को टेट्टेबंडा, दोरमंगूम, पुसगुड़ा गांवों पर हमला करके 21 ग्रामीणों को पकड़कर उन्हें एडुराल्लापल्ली थाना में रखा था. 82 महिलाएं पुलिस के पीछे–पीछे जाकर, पुलिस के साथ लड़कर पकड़े गये लोगों को छुड़ा लायीं.

1 नवंबर, 2015 को कोंडागांव जिले के कडियामेट्टा गांव पर पुलिस हमला करके 22 लोगों को पकड़ कर अपने साथ ले जाने की कोशिशे की, जिसे महिलाओं ने बहादुराना ढंग से लड़कर नाकाम किया. इस दौरान पुलिस को घेरकर, उनके साथ झगड़ा किया. डीआरजी वालों के ऊपर भी महिलाएं टूट पड़ी थी. महिलाओं ने इस तरह झगड़ा करते हुए एक घंटे तक पुलिस वालों का रास्ता रोक दिया था. महिलाओं के प्रतिरोध के चलते पुलिस को पकड़े गए सभी 22 लोगों को छोड़ना पड़ा.1 नवंबर, 2015 को कोंडागांव जिले के कडियामेट्टा गांव पर पुलिस हमला करके 22 लोगों को पकड़ कर अपने साथ ले जाने की कोशिशे की, जिसे महिलाओं ने बहादुराना ढंग से लड़कर नाकाम किया. इस दौरान पुलिस को घेरकर, उनके साथ झगड़ा किया. डीआरजी वालों के ऊपर भी महिलाएं टूट पड़ी थी. महिलाओं ने इस तरह झगड़ा करते हुए एक घंटे तक पुलिस वालों का रास्ता रोक दिया था. महिलाओं के प्रतिरोध के चलते पुलिस को पकड़े गए सभी 22 लोगों को छोड़ना पड़ा.

17 नवंबर, 2015 को माड़ डिविजन के रायनार गांव के 9 लोगों को पुलिस पकड़ कर ओरछा ले गयी. गांव की महिलाएं पुलिस के पीछे–पीछे थाना जाकर लड़ी. रैली भी निकाली. महिलाओं की लड़ाई के नतीजतन पुलिस को सभी लोगों को छोड़ना पड़ा.

सी–60 कमाण्डों का दुष्कर्म के खिलाफ महिलाओं का आक्रोश

'The women were disrobed, exploited'

20 जनवरी को जोन्नावारा की रहवासी लूली बिरजू तिम्मा अपने मायके नैतला, जो महाराष्ट्र के सीमावर्ती गांव है, जाने के लिए अपने रिश्तेदार सुमित्रा गोटा के साथ रवाना हुई। जोन्नवारा और नैतला छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के सीमावर्ती गांव हैं। जोन्नवारा छत्तीसगढ़ राज्य के कांकेर जिला में आता है। नैतला, महाराष्ट्र राज्य गड़चिरोली जिला में आता है। लूली तिम्मा दो बच्चों की मां है, जबकि सुमित्रा गोटा अविवाहित युवती है। इनके हमसफर ताडबयल गांव के बुजुर्ग वड्डे, जिनका उम्र 50 के आसपास है, तीनों को बीच रास्ते में सी–60 कमाण्डों ने जवानों ने पकड़कर रातभर बंदी बनाकर रखे। रात में दोनों महिलाओं पर लैंगिक अत्याचार किए। अपने इस काले कारनामे को छुपाने तथाकथित ईंदूर मुठभेड़ का सी–60 बलों ने प्रचार की है। बाद में आक्रोशित नागरिकों ने बलात्कार काण्ड के विरोध में गट्टा थाना के सामने धरना प्रदर्शन दिए। पुलिसिया अत्याचारों का विरोध करने वाले आम नागरिकों पर माओवादी का ठप्पा लगाकर उनका मुंह बंद करवाने के लिए महाराष्ट्र फडणवीस सरकार व गड़चिरोली पुलिस प्रशासन द्वारा की जाने वाले षड़यंत्रों का क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन पुरजोर विरोध कर रहा है।

आधी आसमान के चमकते सितारे – क्रांतिकारी जन नायिकाओं को लाल लाल सलाम!

(मिशन–2016 के दौरान पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जन संगठन, क्रांतिकारी जनतना सरकार, मिलिशिया कार्यकर्ता, क्रांतिकारी जनता ने क्रांतिकारी आंदोलन में लगभग हर दिन अपनी जान को न्योछावर की. हम यहां चुनिंदे साथियों का ही जीवन परिचय दे रहे हैं. अनगिनत योद्धाओं के अनमोल बलिदानों से यह लड़ाकू जमीन लाल बन रहा है. जन युद्ध में जान न्योछावर करने वाले तमाम साथियों का नाम ले लेकर याद करते हुए 'संघर्षरत महिला श्रद्धांजलि अर्पित करता है.)

कॉमरेड यूसुफ बी (सोनी)

तेलंगाना राज्य के मेदक जिले के माचिन पल्लि गांव के गरीब अल्प संख्यक मुसल मान परिवार में लगभग 40 साल पहले कॉमरेड यूसुफ बी पैदा हुई थी. वह हुस्सेन अहमद और खुषुंबी दंपत्ति की संतान थी. 1985 के बाद उस इलाके में तत्कालीन सीपीआई (एम–एल) (पीपुल्सवार) के नेतृत्व में क्रांतिकारी गतिविधियां सक्रिय हो गईं. उस प्रभाव से छोटी उमर में ही कॉमरेड यूसुफ बी क्रांति के प्रति आकर्षित हुई. समाज में खासकर मुसलमान समाज में महिलाओं पर अमल होने वाली पाबंदियों को तोड़ कर वह 1993 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुई थी. भर्ती होने के बाद उसने अपना नाम भाग्या रखा था. पहले उसने इंदूप्रियाल दस्ते में, बाद में गिरायपल्लि दस्ते में काम किया था. मेदक जिले के भीषण दमन में वह न सिर्फ अडिग रही, बल्कि अपने मिलनसार स्वभाव के चलते जनता में लोकप्रिय हुई थी. अपने दस्ते की जरूरत के अनुसार वह रातों में अकेले गांवों में जाती थी. कई जरूरतें निपटाती थी. क्रांतिकारी सफर के क्रम में उसके व उस दस्ते के कमांडर कॉमरेड मुरली के बीच में प्यार पनपा. पार्टी के अनुमोदन से दोनों की शादी हुई थी. लेकिन कुछ ही दिन बाद एक मुठभेड़ में कॉमरेड मुरली की शहादत हुई थी. झकझोरने वाली इस आघात का उसने हिम्मत से सामना किया था. अपने जीवन साथी के अधूरे सपने को साकार करने वह आगे बढ़ी. 2000 में उसकी शादी

कॉमरेड रमेश (लच्छन्ना) के साथ हुई. शादी के बाद अपने जीवन साथी कॉमरेड रमेश के साथ क्रांति स्टाफ में काम करने उसने गुरिल्ला जोन को छोड़ा था. देहाती इलाके में पलने–बढ़ने व बहुत कम ही पढाई करने के बावजूद उसने शहरी इलाके में अपनी जिम्मेदारी सटीक निभाई. जरूरत के अनुसार उसने कई भाषाएं सीखी थी. बाहर क्रांति प्रेस बंद होने के बाद 2006 में उसने सोनी के नाम से दंडकारण्य में कदम रखा था. उसी साल के जुलाई–अगस्त से वह दक्षिण बस्तर डिविजन के पामेड एरिया कमेटी में शामिल होकर उस एरिया के मोबईल पोलिटिकल स्कूल (मोपोस) की शिक्षिका बनी थी. अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए गांव–गांव में घूमते हुए वहां के पार्टी सदस्यों, क्रांतिकारी जनता ना सरकार व जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को राजनीतिक शिक्षा देने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

कॉमरेड सोनी की स्वास्थ्य की समस्या थी. वह हमेशा हड्डियों व जोड़ों में असहनीय दर्द के मारे परेशान रहती थी. इसके बावजूद वह अपनी जिम्मेदारियां निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ती थी. महत्वपूर्ण बात यह है कि भीषण दमन में ही उसने अपनी जिम्मेदारियां निभाई थी. उसके मेहनती, मिलनसार व स्नेहिल स्वभाव के चलते उस इलाके में वह एक लोकप्रिय जन नेत्री बनी.

2012 में उसे दक्षिण बस्तर डिविजनल कमेटी में लिया गया था. डीवीसी में शामिल होने के बाद उसकी जिम्मेदारी का दायरा बढ़ गया. मोपोस शिक्षिका के रूप में उसने पूरे डिविजन में अपनी सेवाएं देती रही. कठिन परिस्थिति में भी अडिग रह कर आखिरी दम तक वह अपनी जिम्मेदारी निभाती रही.

अपने 22 साल की क्रांतिकारी जिंदगी में कॉमरेड यूसुफ बी स्वयं को एक आदर्श जन सेविका के रूप में साबित किया.

कॉमरेड यूसुफ बी अमर रहे!

कॉमरेड सनकाय नरोटि(मिनको)

उत्तर गडचिरोली डिविजन के कसनसूर एसी के दायरे में आनेवाले कोयंदूड गांव की लाड़ली बेटी थी, कॉमरेड नरोटी सनकाय. वह लगभग 35 वर्ष की थी. उस इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन के गोद में पली बढ़ी कॉमरेड सनकाय की जिंदगी अपनी पिछली

पीढ़ियों की महिलाओं की तरह की नहीं रही. छोटी उम्र में ही क्रांतिकारी पार्टी की अगुवाई में गांव में जारी कबीलाई रूढि परंपराओं, सियानों के दबाव, महिलाओं के प्रति भेदभाव आदि के खिलाफ जारी आंदोलनों से आकर्षित हुई. उसने क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन (केएएमएस) में सक्रिय रूप से काम करते हुए मिलिशया में भर्ती हुई, बाद में मिलिशिया कमाण्डर की हैसियत से अपना दस्ते को नेतृत्व प्रदान की. 2003 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनी. सैनिक क्षेत्र में उनकी योग्यताओं को देखते हुए पीएल–3 में रखा गया. 2008 में जब सीआरसी कंपनी का गठन हुआ, कॉमरेड मिनको का तबादला उसमें हुआ था. वहां कंपनी सदस्य से लेकर सेक्शन डिप्यूटि, सेक्शन कमाण्डर बाद में प्लाटून डिप्यूटि कमाण्डर तक की जिम्मेदारियों को निभाते हुए उन्होंने मुकरम, नयागढ, झीरमघाटी, बण्डा, दामनजोडी, कुर्नापल्ली, सत्यनारायण पुरम बैंक जैसे बड़े सैनिक कार्रवाईयों से के साथ–साथ तेमेलवाडा, गोविंदपल्ली, पुजारिगूडा, श्रीरामपूर, गीदम, जप्पूर जैसे मध्यम व छोटे किस्म के सफल कार्रवाईयों में सक्रिय भूमिका निभाई थी.

कॉमरेड मिनको एक विश्वसनीय, मेहनती, अनुशासित व मिलनसार स्वभाव की थी. वह हिम्मत व साहस के साथ दुश्मन से लोहा लेती थी. बोट्टेम में अपनी आखिरी लड़ाई में भी वह नेतृत्वकारी कॉमरेडों को बचाने दुश्मन के साथ आखरी दम तक लड़ती रही. घायल होने के बाद भी लड़ते हुए वह रिट्रीट हुई. थोडी दूर जाने के बाद उसने दम तोड़ा था. इस वजह से उसकी लाश दुश्मन को नहीं मिली.

सैनिक क्षेत्र में उभरती एक महिला कॉमरेड को खोना पीएलजीए के लिए बड़ा ही नुकसान है.

कॉमरेड मिनको अमर रहे!

कॉमरेड सृजना (नवता)

कॉमरेड सृजना तेलंगाना राज्य के वरंगल जिले के पैडिपेल्लि गांव में लगभग 26 साल पहले पैदा हुई थी. पैडिपेल्लि वो गांव है, जिसने अमर शहीद कॉमरेड जन्नु चिन्नालु को जन्म दिया. कॉमरेड जन्नु चिन्नालु की छोटी बहन कॉमरेड शांता की बेटी है, कॉमरेड सृजना. कॉमरेड शांता भी 'अमरा वीरुला बंधु मित्रुला कमेटी' (वीर शहीदों के बंधु व मित्रों की कमेटी) की नेता है. मामा की शहादत से प्रेरित कॉमरेड सृजना ने अपनी इंटरमीडियट की पढ़ाई के बीच में ही पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनी. बाद में उस कमेटी ने क्रांतिकारी जरूरतों के मुताबिक मैदानी इलाकों से अपना काम निपटाकर वापस आते समय वह पलिस के हाथों में पड़ी थी. पुलिस ने उसे क्रूर यातनाएं देकर जेल में ठूंस दिया था. वह लगभग एक साल वरंगल केंद्रीय कारागार में रही. जेल से छूटकर आने के बाद 2008 के प्रारंभ में वह गुरिल्ला जोन में चली आई. कुछ महीने के लिए उसने केकेडब्ल्यू डिविजन में ही काम किया. 2008 नवंबर में उसका तबादला क्रांति यूनिट में हुआ था. लगभग 2013 आखिरी तक कॉमरेड रागो ने उसी यूनिट में अपना योगदान दिया. वह शारीरक रूप से बहुत कमजोर थी. वह बचपन से ही हिमोग्लोबिन की कमी से पीड़ित थी. इसके बावजूद टाइपिंग, प्रिंटिंग व स्कॉनिंग आदि काम सीखा और किया. कंप्यूटर संबंधित काम के अलावा उसने यूनिट की सुरक्षा में भी अपना योगदान दिया था. उसके योगदान व चेतना के लिहाज से 2011 में उसे एरिया कमेटी सदस्यता दी गई. 2010 में उसने एक साथी क्रांतिकारी से प्रेम विवाह किया.

2013 की आखिरी में उसका तबादला तेलंगाना राज्य में हुआ था. तेलंगाना राज्य के स्टाफ सदस्या की हैसियत से काम कर रही थी. साथ ही साथ तेलंगाना इन्फरमेशन बुलिटेन व प्रजा विमुक्ति जो तेलंगाना राज्य कमेटी के मुख–पत्र है, की तैयारी में भी अपना योगदान दिया. अपनी शहादत के सिर्फ दो दिन पहले उसने प्रजा विमुक्ति के पहले अंक की तैयारी की थी.

कॉमरेड सृजना हमेशा हंसते हुए बिना किसी हिचकिचाहट बड़ों व छोटों के साथ घुल–मिलकर रहती थी. वह खुद बीमार होने के बावजूद अन्य बीमारों के प्रति न सिर्फ संवेदना व्यक्त करती थी बल्कि उन्हें मदद भी देती थी. कम समय में ही उसने कैडरों व जनता के हृदयों में हमेशा के लिए अपना स्थान सुस्थिर बना गयी.

कॉमरेड सृजना अमर रहे!

कॉमरेड धनसरि सारक्का (अनिता)

कॉमरेड सारक्का का जन्म तेलंगाना राज्य के वरंगल जिले के मडिगुडेम गांव में हुआ था. दो साल पहले ही वह गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुई थी. अनिता के नाम से काम करते हुए उसने पार्टी सदस्यता हासिल की. कुछ दिनों में ही उसने शहादत को पाया. क्रांतिकारी आंदोलन में कुछ ही समय काम करने के बावजूद अपने अनमोल प्राण को न्योछावर करने वाली

कॉमरेड सारक्का को जनता कभी नहीं भूल सकती है.

कॉमरेड सारक्का अमर रहे!

कॉमरेड कुंजाम रामे

कॉमरेड रामे का जन्म दक्षिण बस्तर डिविजन के ऊसूर एरिया के

नर्सम गांव में हुआ था. वह लगभग 22 वर्ष की थी. पीएलजीए में भर्ती होने के बाद उसे कॉमरेड सोनी की गार्ड जिम्मेदारी सैंपी गई थी. वह एक अनुशासित व जवाबदेह गार्ड थी. अपनी कमांडर को बचाने की कोशिश में वह शहीद हो गई.

कॉमरेड रामे अमर रहे!

कॉमरेड देवे

दक्षिण बस्तर डिविजन के पामेड एरिया के मेट्टागूडेम गांव में लगभग 18 साल पहले जन्म लेनी वाली कॉमरेड देवे भी इस मुठभेड़ में शहीद हो गई. उनका जन्म एक गरीब परिवार में हुआ. उनके माता–पिता माडिवि जोगी, सुक्काल थे. अपनी बुंआ को संतान नहीं होने के कारण बचपन में कॉमरेड देवे को गोद लिया. क्रांतिकारी माहौल में पली बढ़ी कॉमरेड देवे क्रांतिकारी आंदोलन से आकर्षित हुई. बालल संगठन, मिलिशिया में सक्रिय भूमिका

निभाई. दिसम्बर 2015 को वे पेशेवर क्रांतिकारी बनी. उसकी पूर्णकालीन क्रांतिकारी जिंदगी को एक साल भी पूरा नहीं हुआ था. पुलिस हमले में घायल कॉमरेड देवे की खूब यातनाएं देने के बाद क्रूर पुलिस बलों ने गोलियों से भून दिया. लाश को भद्राचलम ले गए. गांव की महिलाएं एकत्र भद्राचलम जाकर कॉमरेड देवे का लाश घर ले आई और क्रांतिकारी परंपरा के अनुसार अंतिम संस्कार की. शहदत के वक्त वह ऊसूर एलओएस में कार्यरत थी.

कॉमरेड देवे अमर रहे!

कॉमरेड रुकनी

बीजापुर जिला, भैरमगढ़ क्षेत्र के ऊरेम गांव में एक मध्य वर्गीय परिवार में कॉमरेड रुकनी का जन्म हुआ था. मां धारे व बाप जोगाल की तीन संतानों में से वह दूसरी थी. तीसरी तक पढ़ने के बाद वह पढ़ाई छोड़ आदिवासी बाल संगठन में भर्ती हुई. 2011 में उसने एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार स्कूल में भर्ती होकर 5 वीं कक्षा तक पढ़ाई की. 2014 में उसे बीसीटीएस (बुनियादी साम्यवादी

प्रशिक्षण शाला) में दाखिला दी गयी. वहां पढ़ाई पूरी होने के बाद 2015 में उसे मिरतुल एलओएस की डॉक्टर की जिम्मेदारी सौंपी गई. उस जिम्मेदारी को हंसी–खुशी के साथ स्वीकार कर उसने कई क्रांतिकारियों व जनता का इलाज किया. लेकिन बहुत कम समय में ही उसने शहादत को पाया.

कॉमरेड रुकनी अमर रहे!

कॉमरेड जुनकी

बीजापुर जिले के भैरमगढ़ क्षेत्र के पमरा गांव के गरीब परिवार में कॉमरेड जुनकी पैदा हुई थी. पहले उसने आदिवासी बाल संगठन में काम किया था. 2006 में वह चेतना नाट्य मंच में भर्ती हुई थी. 2008 में उसका तबादला भूमकाल मिलिशिया में हुआ था. बाद में उसने क्रांतिकारी महिला संगठन में अपना योगदान दिया. 2015 जून में वह पूर्णकालीन क्रांतिकारी बनी. मिरतुल एलओएस सदस्या की हैसियत से उसने शहादत के समय तक जनता की सेवा की.

कॉमरेड जुनकी अमर रहे!

कॉमरेड रामशीला

कॉमरेड रामशीला उत्तर बस्तर डिविजन के प्रतापपुर एरिया के कोंडे गांव में पैदा हुई थी. 2007 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनी. वह एक अच्छी कलाकारिणी थी. वह शादीशुदा थी.

लेकिन जिससे उसकी शादी हुई थी, वह 2014 में पार्टी छोड़ कर भाग गया और दुशमन के सामने घुटने टेक दिया. इसके बावजूद कॉमरेड रामशीला आंदोलन में दृढ़ता के साथ डटी रही. यह भी कंपनी–5 की एक उभरती महिला कमांडर थी.

कॉमरेड रामशीला अमर रहे!

कॉमरेड रामशिला

9 अगस्त, 2016 को राजनांदगांव जिले के कनेली–कोहरा गांवों के दरमियान के जंगल में हुई मुठभेड़ के दौरान कॉमरेड रामशिला घायल अवस्था में पुलिस के हाथ लग गयी थी. हत्यारे पुलिस बल ने बेरहमी से यातनाएं देकर उसका कत्ल किया. 9 अगस्त विश्व मूल आदिवासी दिवस

है. उसी दिन एक आदिवासी लड़की इसलिए मारी गई कि वह जल–जंगल–जमीन व अस्मिता जो आदिवासियों के मूल अधिकार हैं, के लिए लड़ रही थी.

कॉमरेड रामशिला कांकेर जिले के ओटेकसा गांव वासी थी. 12 वर्ष की उमर में ही वह चेतना नाट्य मंच के साथ जुड़ गई थी. 2016 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन कर पीएलजीए में भर्ती हो गई. कम समय में ही कॉमरेड रामशिला ने जनता व पार्टी कतारों का मन जीता. बहुत कम समय ही उसे पीएलजीए में काम करने का मौका मिला. लेकिन एक क्रांतिकारी के लिए मानदंड यह नहीं होता है कि उसने कितने दिन जनता की सेवा की, बल्कि मानदंड यह होता है कि उसने कितनी प्रतिबद्धता के साथ काम किया. अपने अधूरे सपनों को पूरा करने की जिम्मेदारी हम पर छोड़ कर उसने इस दुनिया से विदा ली.

कॉमरेड रामशिला अमर रहे!

कॉमरेड पोहड़ी कचलाम (रुकमी)

पूर्व बस्तर डिविजन, कोंडागांव जिले के कडियामेट्टा–किल्लेम के पास

पोहडि कचलम (रुक्नी)

25 अक्टूबर, 2016 को हुई मुठभेड़ में दुशमन के साथ लड़ते हुए आमदाई दस्ते की सदस्या कॉमरेड रुकमी ने अपनी जान कुरबान की.

पूर्व बस्तर डिविजन, बीजापुर जिले के वाहकेली गांव के एक आदिवासी परिवार में कॉमरेड रुकमी (27) का जन्म हुआ था. 2006 में मिलिशिया में काम करते हुए वह गांव के महिला संगठन की जिम्मेदारी अपने कंधो पर उठाई. 2013 में पेशेवर क्रांतिकारी बनी थी. आमदाई दस्ते में काम करते हुए उसने केएएमएस की जिम्मेदारी निभाई. अपनी जिम्मेदारी निभाने में वह कोई कसर नहीं छोड़ती थी. बोधघाट बांध के खिलाफ ग्रामीणों को एकताबद्ध करने में, उन्हें रैलियों में शामिल करने में, जन विरोधियों एवं मुखबिरों को सजा देने में कॉमरेड रुकमी का योगदान रहा. मेहनती व मिलनसार स्वभाव वाली कॉमरेड रुकमी जनता के साथ घनिष्ठ संबंध रखती थी.

कॉमरेड रुकमी अमर रहे!

तुसवाल शहीदों को लाल सलाम!

18 नवंबर, 2016 को पूर्व बस्तर डिविजन के तुसवाल गांव के पास पुलिस ने अपनी एंबुश में एक छोटी गुरिल्ला टीम को फंसा कर हमला किया था. इस हमले का बहादुरी से मुकाबला करते हुए आमदाई दस्ते का सदस्य कॉमरेड विश्वनाथ, कंपनी–6 की सदस्या कॉमरेड विमला, बारसूर दस्ते की सदस्या कॉमरेड सुनीता, भानपुरी दस्ते की सदस्या कॉमरेड प्रमीला एवं मिलिशिया सदस्य कॉमरेड दसमु यादव ने वीरगति को प्राप्त किया.

कॉमरेड जानकी कोर्राम (विमला)

पूर्व बस्तर डिविजन, नारायणपुर जिले के टेमरुगांव में कॉमरेड विमला (23) पैदा हुई थी. छोटी उम्र में ही गांव की सीएनएम टीम की सदस्या

बन कर नाच–गाने के जरिए जनता में राजनीतिक प्रचार किया. 2011 में जब वह 18 वर्ष की थी, पेशेवर क्रांतिकारी बन कर डिविजन सीएनएम में शामिल हुई थी. नाच, गाना, नाटक आदि कला प्रदर्शन देने के अलावा दमन के खिलाफ उसने कई गीत भी लिखा. 2015 में उसका तबादला कंपनी–6 में हुआ था. कंपनी में पार्टी सदस्या के तौर पर उसने सांस्कृतिक संगठन की जिम्मेदारी उठाई. कई सैनिक कारवाईयों में भी उसका सक्रिय योगदान रहा. अपनी आखरी लड़ाई में उसने लगभग दो घंटे तक बहादुरी से लड़ती रही. दुश्मन की गोलीबारी में घायल होकर जब उसकी मौत आसन्न हुई, उसने अपना हथियार छुपा लिया, ताकि वह दुश्मन के हाथ न लग जाए.

कॉमरेड विमला का भाई पुलिस मुखबिर बना था. कई बार समझाने के बाद भी उसने वह काम नहीं छोड़ा. नतीजतन जन अदालत में उसे मौत की सजा दी गयी थी. उसका पिता भी पहले से ही जन विरोधी था. बेटे को सजा देने के बावजूद भी चूंकि वह नहीं सुधरा इसलिए उसके परिवार को 2016 में एरिया से बहिष्कार किया गया था. इस मुद्धे को कॉमरेड विमला ने बोल्शेविक स्फूर्ति के साथ व वर्ग दिशा के अनुसार समझते हुए क्रांतिकारी आंदोलन में अडिग रही.

कॉमरेड विमला अमर रहे!

कॉमरेड बत्ती कश्यप (सुनीता)

बस्तर जिले के लोहंडीगुड़ा पंचायत के गड़दा गांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में कॉमरेड सुनीता

(25) का जन्म हुआ था. उसके क्रांतिकारी सफर की शुरुवात 2009 में केएएमएस के जरिए हुई थी. 2013 में पूर्णकालीन क्रांतिकारी बनी. उसने बारसूर दस्ते में काम किया. तीव्र दमन की वजह से उसे कई मुठभेड़ों का सामना करना पड़ा. इसके बावजूद वह आंदोलन में हिम्मत से डटी रही.

कॉमरेड सुनीता अमर रहे!

कॉमरेड शांती कश्यप (प्रमीला)

कोंडागांव जिले के ककनार गांव के बाहारगुड़ा टोले में कॉमरेड प्रमीला पैदा (24) हुई थी. उसने 7 वीं तक पढ़ाई की. 2009 में 17 वर्ष की उम्र में उसकी भर्ती पीएलजीए में हुई थी. भानपुरी दस्ते में शामिल होकर वह छात्र आर्गनाइजर बनी. वह छात्रों के साथ मिल–जुल कर रहती थी. दृढ़ संकल्प के साथ अपनी जिम्मेदारी

निभाती थी. वह बुनियादी साम्यवादी प्रशिक्षण शाला की तीसरी बैच की छात्रा रही. उसे लेख व कविता लिखने का शौक था. जब कॉमरेड प्रमीला अपनी आखिरी लड़ाई में बहादुरी से लड़ती रही, दुश्मन ने उसे सरेंडर होने को कई बार कहा. दुश्मन की बात को धत्ता बताते हुए कॉमरेड प्रमीला आखिरी दम तक लड़ते हुए शहीद हुई.

कॉमरेड प्रमीला अमर रहे!

कॉमरेड आरती (सिताय)

उत्तर गडचिरोली डिविजन के कसनसूर एरिया में 20 मार्च, 2016 को पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कसनसूर एरिया कमेटी सदस्याएं कॉमरेड आरती व निर्मला शहीद हो गईं.

कॉमरेड आरती (सिताय पूडो) गडचिरोली जिले के कोरची तहसील टिप्रागढ़ एरिया रानकट्टा गांव के गरीब किसान परिवार में 36 वर्ष पहले पैदा हुई थी.

1997 में उसकी शादी हुई थी. शादी के दो वर्ष बाद उसका पति पार्टी में भर्ती हो गया था. उसके चलते कॉमरेड आरती के सामने भविष्य का प्रश्न पैदा हुआ था. वह पहले से कुपोषण का शिकार थी. इसलिए पीएलजीए में भर्ती होने में आगे पीछे हो गई थी. जब वहां के नेतृत्वकारी कॉमरेड ने उसे समझाया, वह पीएलजीए में भर्ती हुई. उसकी भर्ती को दो साल पूरे नहीं हुए कि पति विवाहेतर संबंध में फंस कर पार्टी से भाग गया. बाद में गद्दार भी बन गया. इसके बावजूद कॉमरेड आरती आंदोलन में डटे रही और आगे बढ़ती गयी. टिप्रागढ़, अहेरी इलाकों में, क्रांतिकारी बाल संगठन, केएएमएस, जनताना सरकार क्षेत्रों में उसका योगदान रहा. उसके क्रांतिकारी जीवन में कसनसूर एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार कमेटी की सदस्या, कसनसूर एरिया केएएमएस अध्यक्षा, केएएमएस डिविजन कार्यकारिणी की सदस्या व केएएमएस डिविजन उपाध्यक्षा की जिम्मेदारियां उसने निभाई.

वह अपनी ताकत व कमजोरियों का बराबर आकलन करती थी. अपने खराब स्वास्थ्य के चलते उसके काम में आने वाली सीमितता के बारे में वह खुल कर चर्चा करती थी. हालांकि अस्वस्थता की वजह से काम में आने वाली सीमितता के बावजूद उसकी कोशिश में कोई कमी नहीं होती.

कॉमरेड आरती अमर रहे!

कॉमरेड निर्मला (सविता दुम्मा)

20 मार्च, 2016 को कॉमरेड आरती के साथ कॉमरेड निर्मला भी दुश्मन से लड़ते हुए शहादत को पाया.

कॉमरेड निर्मला गडचिरोली जिले के एटापल्ली तहसील के नेंडिगूडा गांव के मध्यम किसान परिवार में पैदा हुई थी. मां–बाप की चार बेटियों में वह बड़ी थी. 1987 में एटापल्ली दस्ता बनने के बाद ही उसका जन्म हुआ

था. बचपन में ही क्रांतिकारी बाल संगठन की सदस्या के तौर पर उसने क्रांति के लिए अपने योगदान दिया. थोड़ी बड़ी होने के बाद नाच–गाने के प्रति उसकी रुचि के मुताबिक वह चेतना नाट्य मंच में शामिल हुई. उसमें काम करते हुए केएएमएस की सदस्या भी बनी. 2009 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बन कर कसनसूर दस्ते में भर्ती हुई. उसके कामकाज व समझदारी को देख कर उसे एसी सदस्यता दी गई. कसनसूर एआरपीसी कमेटी में रहकर उसने अस्पताल शाखा की जिम्मेदारी निभाई. 2011 में उसकी शादी हुई थी. दो साल के बाद उसके जीवन साथी

को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया था. जीवन साथी के वियोग का उसने दृढ़तापूर्वक सामना किया.

कॉमरेड निर्मला के गांव से कई लोग भर्ती हुए थे. कुछ लोग दमन से डर कर वापस गए, जबकि कॉमरेड रोशन व नंदू जैसे कॉमरेडों ने दुश्मन के साथ आमने–सामने लड़ते हुए शहादत को पाया. उन्हीं की तरह कॉमरेड निर्मला भी क्रांति में आखरी सांस तक अडिग रही.

कॉमरेड निर्मला अमर रहे!

कॉमरेड सरिता (केहको)

19 अप्रैल, 2016 को गडचिरोली जिले के पेरिमिलि एरिया के कुडकेल्ली गांव के पास ठहरे गुरिल्ला दस्ते पर भाड़े के सी–60 बलों द्वारा घेराव करके अंधाधुंध गोलीबारी की गई. इसका हिम्मत के साथ सामना करते हुए पेरिमिलि एरिया कमेटी सदस्या व पेरिमिलि दस्ते की डिप्टी कमांडर कॉमरेड सरिता (केहको कोवासी) वीरगति को प्राप्त हुई.

कॉमरेड सरिता का जन्म भामरागड एरिया के क्रांतिकारी विरासत वाले जारावाडा गांव में हुआ था. बचपन में ही वह क्रांति के प्रति आकर्षित हुई. 2003 में वह मिलिशिया में भर्ती हुई

थी. 2004 में वह पेशेवर क्रांतिकारी बनी. 2004–2007 में उसने अहेरी एरिया में अपना योगदान दिया. 2008 में उसका तबादला पेरिमिलि एरिया में हुआ था. उसी समय उसे एसी सदस्यता दी गई.

2009 से डिविजन की केएएमएस कार्यकारिणी की सदस्या बनकर महिलाओं को गोलबंद करने में योगदान दिया. उसकी सैनिक क्षमता भी अच्छी थी. कई सैनिक हमलों में वह भाग ली.

2010 में उसकी शादी हुई थी. इससे पहले उसके सामने कुछ कॉमरेडों द्वारा कई बार विवाह प्रस्ताव रखा गया था. लेकिन कॉमरेड सरिता ने शादी के प्रति जल्दबाजी नहीं दिखाई. अपने विकास को प्रथामिकता देते हुए उसने सभी विवाह प्रस्तावों को नकार दिया.

कॉमरेड सरिता अमर रहे!

चिचोडा शहीद कॉमरेड कुम्मे (जीजा)

3 सितंबर, 2015 को चातगांव एरिया में डेरे को घेर कर की गई गोलीबारी का प्रतिरोध करते हुए पलटन–3 का पीपीसी सदस्य कॉमरेड प्रमोद व पलटन सदस्या कॉमरेड कुम्मे ने अपनी जान कुर्बान की.

कॉमरेड कुम्मे गडचिरोली जिले के भामरागढ़ तहसील के मिडंदापल्ली गांव के गरीब परिवार में पैदा हुई थी. मां–बाप की पांच संतानों में वह सबसे बड़ी थी. उसने तीसरी तक पढ़ाई की.

2007 में उसका स्थानीय दस्ते

से परिचय हुआ. चेतना नाट्य मंच में उसने काम किया. 2009 में उसकी भर्ती पीएलजीए में हुई थी. कुछ अरसे तक उसने भामरागढ़ दस्ते में काम किया. बाद में वह रीजनल डाक्टर टीम में ली गई. उस जिम्मेदारी निभाते हुए उसने पूरे रीजियन के पार्टी व पीएलजीए योद्धाओं एवं जनता का इलाज किया. युद्ध में घायल होने वाले कॉमरेडों की इलाज के अलावा उसने कई सेवाएं दी. डाक्टर की जिम्मेदारी निभाते हुए उसने कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान में सक्रिय भाग लेती थी. 2012 सितंबर में जब मानेवारा गांव में पीएलजीए के ऊपर दुश्मन द्वारा जहर का प्रयोग किया गया, तब कॉमरेड कुम्मे भी उसका शिकार हुई थी. खुद अस्वस्थ्य होने के बावजूद उसने अपने से गंभीर अस्वस्थ्य लोगों का इलाज किया. 2012 आखिरी में उसका तबादला पलटन–3 में हुआ था. 2014 में उसकी शादी हुई. शादी को डेढ़ साल भी नहीं हुआ कि उसने शहादत को पाया.

कॉमरेड कुम्मे अमर रहे!

कॉमरेड किस्के सुकदाई

28 जुलाई, 2016 को गढ़चिरोली जिले के चातगांव एरिया के मुरमुर गांव के पास अत्याचारी सी–60 कमांडों

के साथ लड़ते हुए कॉमरेड सुकदाई ने अपनी जान की कुरबानी दी. बीजापुर जिले के भैरमगढ़ एरिया के बिडियाभूमि गांव में कॉमरेड सुकदाई का जन्म हुआ था. मां–बाप सोमड़ी व किस्के सोमडू की पांच संतानों में से सुकदाई सबसे बड़ी थी. बाल संगठन के जरिए कॉमरेड सुकदाई के क्रांतिकारी जीवन की शुरूआत हुई. 2013 में केएएमएस में काम करते हुए उसने महिलाओं को गोलबंद किया. 2015 में पेशेवर क्रांतिकारी बन कर माटवाड़ा एलओएस में भर्ती हुई. 2016 में उसका तबादला उत्तर गढ़चिरोली में हुआ था. वहीं काम करते हुए वह शहीद हो गई.

कॉमरेड सुकदाई अमर रहे!

कॉमरेड हेमला लच्छी

छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र व केन्द्रीय अर्ध–सैनिक बलों द्वारा जनवरी 11, 2016 को बीजापुर जिले के नेशनल पार्क एरिया के कोकेरा गांव के नजदीक पीएलजीए की एक टीम पर की गई अंधाधुंध गोलीबारी में कॉमरेड लच्छी घायल हुई थी. पुलिस ने उसे

पकड़कर खूब यातनाएं देकर उसकी निर्मम हत्या की. कॉमरेड हेमला लच्छी 22 वीं प्लाटून की पीपीसी स्तर की कामरेड थी.

वह बीजापुर जिले के गंगालूर एरिया के सावनार गांव की निवासी थी. छोटी उम्र में उसने बाल संगठन में काम किया था. बड़ी होने के बाद वह केएएमएस व मिलिशिया की सक्रिय कार्यकर्ता बनी.

वह 2008 जनवरी में पीएलजीए में भर्ती हुई थी. कुछ दिन गंगालूर एरिया में काम करने के बाद 2009 में उसका तबादला कंपनी–9 में हुआ था. तब से 2014 मार्च तक उसने जाटालूर एरिया में काम किया था. 2014 मार्च में उसका तबादला 22 वीं प्लाटून में हुआ था. वहीं काम करते हुए उसने शहादत को पाया.

कॉमरेड लच्छी अमर रहे!

कॉमरेड कुड़ियम कमला

पश्चिम बस्तर डिविजन के मद्देड एरिया के गोट्टम गांव के पास जनवरी 6, 2016 को सरकारी भाड़े के सशस्त्र बलों के साथ लड़ते हुए कॉमरेड कुड़ियम कमला शहीद हो गई.

कॉमरेड कमला बीजापुर जिले

के मोदोक पाल पंचायत के पगनपल्ली गांव की निवासी थी. 2006 में पूर्ण कालीन कार्य कर्ता के रूप में वह पीएलजीए में भर्ती हुई थी.

मद्देड एरिया में काम करते हुए वह शहीद हुई.

कॉमरेड कमला अमर रहे

कॉमरेड बेगाम लक्ष्मी (रोशनी)

3 मार्च 2016 को नारायणपुर जिला, माड़ डिविजन, कुतुल एरिया के होकपाड़ गांव के के पास पीएलजीए द्वारा पुलिस बैच के ऊपर किए गए हमले में दुश्मन के साथ मुकाबला करते हुए कॉमरेड रोशनी ने ाहादत को पाया.

बीजापुर जिले के भैरंगढ़ ब्लॉक के मिरतुल एरिया के पेदम गांव में

कॉमरेड रोशनी पैदा हुई थी. शोषण विहीन समाज का सपना देखते हुए जन युद्ध में शामिल होकर अपनी अनमोल प्राण न्योछावर करने वाली कॉमरेड रोशनी जनता की स्मृतियों में हमेशा जिंदा रहेगी.

कॉमरेड रोशनी अमर रहे!

कॉमरेड सोढ़ी देवे

मार्च 2, 2015 को दक्षिण बस्तर डिविजन के तुमिड़ गांव के पास पुलिस के साथ आमने–सामने लड़ते हुए कॉमरेड सोढ़ी देवे ने अपनी जान कुर्बान की. शहादत के वक्त वह सिर्फ 20 साल की थी. जबकि उसकी पेशेवर क्रांतिकारी जिंदगी केवल दो महीने की थी.

कॉमरेड सोड़ी देवे सुकमा जिले के इत्तगुड़ा गांव के एक गरीब परिवार में पैदा हुई थी. वह बाल संगठन में काम करते हुए बड़ी हो गई. बाद में उसने सीएनएम में काम किया. 2015 जनवरी में वह गुरिल्ला बनी. मगर दुश्मन के साथ जारी जंग की वजह से इस नव जवान कॉमरेड को नव जनवादी क्रांति के लिए काम करने का उतना मौका नहीं मिल पाया जितना उसने चाहा था. भर्ती होने के दो महीने ही पूरे नहीं हुए कि उसने शहादत को पाया.

गोलीबारी में खुद घायल होने के बावजूद उसने अपने दर्द की परवाह किए बगैर कांटों में फंसनेवाले दूसरे कॉमरेडों का ख्याल रखा था. कांटे निकालने में उन्हें मदद दी. उसकी मदद के चलते बाकी कॉमरेड़ सुरक्षित रिट्रीट हो सके.

कॉमरेड देवे अमर रहे!

कॉमरेड मड़कम देवे (कमला)

जून 12, 2015 को छत्तीसगढ़–तेलंगाना के पुलिस बल के संयुक्त आपरेशन के दौरान बीजापुर जिला, उसूर ब्लॉक, लंकापल्ली गांव

मडकम देवे (कमला)

के पास एक गुरिल्ला टीम पर घात लगाकर की गई आंधधुंध गोलीबारी में कॉमरेड कमला, जोगी व विवेक ने शहादत को पाया.

कॉमरेड कमला का जन्म बीजापुर जिले के चिन्नातर्रेम गांव में 25 साल पहले हुआ था. कमला ने पहले बाल संगठन में काम किया. बड़ी होने के बाद केएएमएस में काम करते हुए केएएमएस की गांव कमेटी अध्यक्षा की जिम्मेदारी भी संभाली. सलवा जुडुम के दौरान मिलिशिया में ाामिल होकर प्रतिरोध में सक्रिय रूप से शामिल हुई थी. 2008 में वह पूर्णकालीन क्रांतिकारी बन कर जगरगुंडा एरिया के बासागुड़ा एलओएस सदस्या बनी. 2010 में उसकी तबादला उत्तर तेलंगाना में हुआ था. 2011 तक कंबैट प्लाटून में काम करने के बाद उसका तबादला क ` क ` ड ढ ल य ू (खम्मम–करीमनगर–वारंगल) के एसजीएस (विशेष गुरिल्ला दस्ता) में हुआ था. वहां एक साल काम करने के बाद उसे उसी डिविजन के एटूरनागारम–महदेवपुर दस्ते में भेजा गया था. 2012 में उसे एसी सदस्यता दी गई भीषण दमन का सामना करते हुए वह उस इलाके में डटी रही.

कॉमरेड कमला अमर रहे!

कॉमरेड जोगी

कामरेड जोगी दक्षिण बस्तर डिविजन, कोंटा विकास खंड, मराईगुड़ा के बिलपारा में जन्म ली. बालक संगठन के जरिए उसने

कॉमरेड जोगी

दंडकारण्य स्पेशल जोन में कार्यरत गुरिल्ला बटालियन–1 की सदस्याएं कॉमरेड्स सोमडी और कॉमरेड सोनी रणनीतिक नेतृत्व की सुरक्षा की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाते हुए अपनी जान की कुरबानी दी. इन साहसिक योद्धाओं को लाल लाल जोहार अर्पित करेंगे. उनकी जीवनियां हमें प्राप्त नहीं हुआ. अगले अंक में देंगे.

क्रांतिकारी आंदोलन में कदम रखा था. बड़ी होने के बाद वह केएएमएस में काम करने लगी थी. 2001 में उसे गांव के केएएमएस की अध्यक्षा बनी थी. 2000 में वह केएएमएस एरिया कमेटी में शामिल हुई थी. 2005 में उसे ग्राम पार्टी कमेटी सचिव व आरपीसी अध्यक्षा की जिम्मेदारियां सौंपी गई.

2006 में वह घर छोड़कर पूर्णकालीन कार्यकार्ता बनकर भेज्जी गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुई थी. 2011 में उसे एरिया कमेटी सदस्या की हैसियत दी गई और कोंटा एरिया पड़ियोरा (योद्धाओं) परिवार कमेटी की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी. 2013 में उसे एरिया खुफिया विभाग की जिम्मेदारी दी गई.

उसी जिम्मेदारी को संभालते हुए उसने शहादत को पाया.

कॉमरेड जोगी अमर रहे!

नांगलगुड़ा मुठभेड़ में शहीद हुई चार महिला साथियों को कोटि–कोटि लाल सलाम!

22 नवंबर 2015 को मुखबिर की सूचना पाकर आए पुलिस बल द्वारा दरभा डिविजन के नांगलगुड़ा में गुरिल्ला दस्ते पर की कई गोलीबारी में दरभा डिविजन की सप्लाई टीम कमांडर कॉमरेड रामे व सदस्या मासे, डिविजन समन्वय दस्ते की सदस्या कॉमरेड सन्नी व मलिंगेर दस्ते की सदस्या कॉमरेड पांडे शहीद हो गईं.

कॉमरेड रामे

कॉमरेड रामे का जन्म दक्षिण बस्तर डिविजन के किस्टारम एरिया के पालोड के मध्यम वर्गीय परिवार में 32 वर्ष पहले हुआ था.

छोटी उम्र में ही वह चेतना नाट्य मंच में शामिल हुई थी. 2003 में गांव की केएएमएस कमेटी की अध यक्षा बनी. महिलाओं को गोलबंद करने पर वह विशेष ध्यान देती थी.

2005 में कॉमरेड रामे गुरिल्ला दस्ते की सदस्या बनी. किस्टारम एरिया में कुछ महीने काम करने के बाद उसका तबादला दरभा डिविजन में हुआ था. 2009 में उसे एरिया केएएमएस अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई. 2013 में उसका तबादला सप्लाई दस्ते में हुआ था. 2014 में उसे एसी सदस्यता देकर सप्लाई दस्ते की कमांडर की जिम्मेदारी दी गई थी.

उसी जिम्मेदारी को निभाते हुए वह शहीद हो गई.

कॉमरेड रामे अमर रहे!

कॉमरेड मुचाकी सन्नी

कॉमरेड मुचाकी सन्नी (20) दरभा डिविजन के कुकानार से सटे पुसगुना के दुनामपारा निवासी थी. उसने पहले बाल संगठन में अपना योगदान दिया. 2014 में वह पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में आंदोलन में दाखिल हुई. डिविजन समन्वय दस्ते में काम करते हुए वह शहीद हुई.

कॉमरेड सन्नी अमर रहे!

कॉमरेड माड़वी पांडे

दरभा डिविजन के मलिंगेर

एरिया के तेनेली के आदिवासी गरीब किसान परिवार में 17 साल पहले कॉमरेड पांडे का जन्म हुआ था. छोटी उमर में ही क्रांति के प्रति उसमें आकर्षण पैदा हुआ था. नतीजतन 2014 जुलाई में 17 साल की उम्र में ही उसने प्रतिबद्धता के साथ जन युद्ध में कदम रखा था. उसका दाखिला मलिंगेर दस्ते में हुआ था. वहीं काम करते हुए वह शहीद हो गई.

कॉमरेड पांडे अमर रहे!

कॉमरेड मासे

दरभा डिविजन के चोलनार के एक गरीब परिवार में 25 वर्ष पहले कॉमरेड मासे पैदा हुई थी. बाल संगठन में शामिल होकर छोटी उम्र से ही क्रांति के लिए अपना योगदान देने लगी. 2008 में उसने केएएमएस अध्यक्ष की जिम्मेदारी ली.

2013 में वह पूर्णकालीन क्रांतिकारी बनकर पीएलजीए में भर्ती हुई थी. कुछ दिनों तक एरिया में काम करने के बाद उसका तबादला सप्लाई दस्ते में हुई थी. वहीं काम करते हुए उसने शहदत को पाया.

कॉमरेड मासे अमर रहे!

कॉमरेड दूधी पीसो

दरभा डिविजन के कांगेरघाटी एरिया के चांदामेट्टा गांव में जनता की मीटिंग संपन्न करके जा रहे दस्ते पर, रास्ते में घात लगाकर बैठे पुलिस बल ने अंधाधुंध गोलीबारी की. जिसमें कॉमरेड पीसो (24) नेतृत्वकारी कॉमरेडों को बचाने दुश्मन के साथ हिम्मत से लड़ते हुए शहादत हासिल की.

दरभा डिविजन के कनकापाल पंचायत के झीरम गांव की निवासी थी, कॉमरेड पीसो. 2007 में जब क्रांतिकारी आंदोलन की गतिविधियां उस इलाके में शुरु हुई थी, तभी से कॉमरेड पीसो गुरिल्ला दस्ते के पास आना–जाना करती थी. 2009 में उसने गांव के जीआरडी में भर्ती होकर गांव की सुरक्षा में योगदान दिया. ऐतिहासिक झीरमघाटी हमले जिसमें कुख्यात व खुंखार सलवा जुडुम सरगना महेंद्र कर्मा का सफाया किया गया था, में उसने संपूर्ण मदद दी.

2014 जून में वह पीएलजीए में भर्ती हुई थी. 2015 जून में उसे पार्टी सदस्यता दी गई. बाद में कांगेरघाटी एलओएस में उसका तबादला भी हुआ था. उसी दस्ते में अपना कार्यभार संभालते हुए वह शहीद हो गई.

कॉमरेड पीसो अमर रहे!

कॉमरेड लिंगे

जून 2, 2015 को पश्चिम बस्तर डिविजन के वेच्चम गांव के पास हुई गोलीबारी में घायल हुई कॉमरेड लिंगे को पुलिस ने पकड़कर खूब यातनाएं देकर अत्याचार करके उसकी निर्मम हत्या की.

पश्चिम बस्तर डिविजन के भैरमगढ़ एरिया के वेश्रारम गांव में कॉमरेड लिंगे पैदा हुई थी. बचपन में उसने बाल संगठन में काम किया था. जबकि बड़ी होने के बाद केएएमएस में काम करने लगी थी. 2013 जुलाई–अगस्त में आयोजित पीएलजीए के भर्ती अभियान के दौरान वह पूर्णकालीन सदस्या बनी. लगभग दो साल जनता की मुक्ति के लिए अविराम काम करते हुए उसने शहादत को पाया.

कॉमरेड लिंगे अमर रहे!

कॉमरेड कुहड़म जोगी (सोनी)

कॉमरेड कुहड़म जोगी ने पूर्वी गोदावरी जिले के चिंतूर मंडल जगारम गांव में 21 साल पहले जन्म लिया था. गांव के महिला संगठन में काम करते हुए 2010 में शबरी गुरिल्ला दस्ते में भर्ती हुई थी. बाद में उसका तबादला राज्य कमेटी स्टाफ में हुआ था. वहां उसकी जिम्मेदारी सटीक निभाते हुए एसी सदस्यता हासिल की.

कामरेड जोगी अमर रहे!

कॉमरेड जानकी हलामी (रनिता)

29 मार्च 2015 पूर्वी बस्तर

डिवीजन वयनार क्षेत्र तिरका गांव के पास दल पर हुए पुलिस हमले में कॉमरेड रनिता शहीद हुई.

शहादत के समय वे 25 साल की थी. उनका जन्म कोण्डागांव जिला एहरा गांव में हुआ. मिलिशिया में काम करते हुए वर्ष 2009 में पेशेवर क्रांतिकारी बनी. कुछ समय तक डिवीजन टेलर टीम में काम की. बाद में केशकल में कार्यरत 17वां पलटन में उनका तबादला हुआ. उसके बाद नेतृत्वकारी कॉमरेडों की सुरक्षा गारड की जिम्मेदारी ली. वहां से रिलीव होकर वयनार एलओएस सदस्य के रूप में काम करते वक्त वो शहादत को पाई.

सामाजिक कार्यकर्ता बेला भाटिया पर बस्तर आईजी कल्लूरी गुण्डावाहिनी 'अग्नी' द्वारा की जानेवाली प्रताड़नाओं का मुक्त कंठ से निंदा करो!

अन्याय के खिलाफ बुलंद आवाज को दबाने की राज्य हिंसा का खण्डन करो!

कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय की शोधार्थी व नागरिक अधिकारों के लिए काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता बेला भाटिया पर बस्तर आईजी कल्लूरी गुण्डावाहिनी 'अग्नी' द्वारा की जानेवाली प्रताड़नाओं का मुक्त कंठ से निंदा करो!

माओवादी आंदोलन का उन्मूलन के नाम पर छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग में पुलिस महानिरीक्षक शिवराम प्रसाद कल्लूरी के मॉनिटरिंग में पुलिसिया राज चल रहा है। अपने काले कारनामों पर परदा डालने के मकसद से तथाकथित जनवादी संगठन 'सामाजिक एकता मंच', 'अग्नी'(एक्शन ग्रुप फार नेशनल इंटिग्रिटी) जैसे सामाजिक संगठनों का गठन किया गया। जनता पर श्वेत आतंक चलाने सुरक्षा बलों को खुली छूट दी गई, जिसके तहत निर्दोष आदिवासियों पर बर्बर दमन चलाया जा रहा है। निर्दोष आदिवासियों की हत्या, महिलाओं के साथ सुरक्षा बलों द्वारा सामूहिक बलात्कार, लूट, मारपीट सहित उन्हें कई तरीकों से प्रताड़ित की जा रही है। उनको घरों से भगाकर सैकड़ों गांवों को वीरान करवा दिया गया है। उनके घरों को लूटा गया व जलाया गया। जिन आदिवासियों ने इसका विरोध किया उन्हें नक्सली बताकर फर्जी मुठभेड़ों में मार दिया गया।

राज्य यंत्र, जो दमन का माध्यम है, शोषक–शासकों के हाथों में क्रूरतम रूप अख्तियार करेगा. अपना शोषण कारी व्यवस्था को चलाने सरकारें व पुलिस प्रशासन द्वारा जारी हिंसा में महिलाओं पर लैंगिक अत्याचार एक साधन जैसा बन गया है. महिलाओं पर लैंगिक अत्याचार को सरकारें एक अहम नीति मानकर चल रही हैं. यह रुख देशी व विदेशी आंदोलनों के दौरान देखने को मिलता है. इन लैंगिक अत्याचारों के पीछे साजिशपूर्ण मकसद यह है कि क्रांतिकारी आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका को कुंठित करना. उनमें दहशत फैलाने का एक साजिश छिपा हुआ है.

अक्तूबर 2015 को सुरक्षा बलों के जवानों ने सुकमा, दंतेवाडा, बीजापुर जिलों के चिन्ना गेल्लूर, पेद्दा गेल्लूर, बुडगिन, पेगिडेपल्ली, गुण्डम इत्यादि गांवों पर छापामारी करके 40 महिलाओं की अंधाधुंध मारपीट की। इतना ही नहीं 13 साल की नाबालिग बालिका व 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला सहित दर्जनों महिलाओं पर सामूहिक बलात्कार की थी।

11 जून को सुकमा के गोम्पाड़ में मडकम हिडमे की सुरक्षा बलों द्वारा बलात्कार कर हत्या कर दी गई। बाद में उन्हें वर्दीधारी महिला माओवादी का ऐलान किया गया।

2011 में सुकमा जिला के ताड़मेटला, मोरपल्ली और तिम्पुरम गांवों पर तत्कालीन एसएसपी शिवराम प्रसाद कल्लूरी के आदेश पर पुलिस और सीआरपीएफ बलों ने संयुक्त तलाशी अभियान चलाया था। इस दौरान तीन आदिवासी मारे गए, तीन महिलाओं के साथ दुष्कर्म किया गया और तीनों गांवों में 252 घर जला दिए गए। उल्टा उसका दोष माओवादियों पर थोपा गया, जिसका पर्दाफाश भी खुद केन्द्रीय जांच आयोग का उस रिपोर्ट, जिसमें ताडमेटला अग्निकाण्ड का दोषी सुरक्षा बलों को पाया गया, के बाद की प्रतिक्रियाओं ने कल्लूरी को अपना औकात का याद दिलाया।

मानव अधिकार संगठनों द्वारा किए गए प्रयासों के तहत ही दंतेवाडा जिले में 16 आदिवासी महिलाओं पर लैंगिक प्रताड़नाओं के आरोप पर राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग को बस्तर आईजी शिव राम प्रसाद कल्लूरी तथा दंतेवाडा पुलिस प्रशासन को दोषी ठहराते हुए न्यायिक जांच के लिए आदेश देना पड़ा। हाल ही में सामाजिक कार्यकर्ता बेला भाटिया के घर पर हमले के बाद विश्व भर के मानव अधि ाकार संगठनों, सामाजिक संगठनों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का भारी विरोध ा से कन्नी काटते हुए आईजी कल्लूरी को अस्वस्थता का बहाना बनाकर लंबी छुट्टी पर बस्तर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा।

गड़चिरोली जिले में अपने जल–जंगल–जमीन पर संपूर्ण अधिकार के साथ–साथ आदिवासियों का अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाने के लिए जागरुक आदिवासी महिला–पुरुषों द्वारा गोलबंद होते देखकर महाराष्ट्र के ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी फडणवीस सरकार तिलमिलाने लगी। पुलिसिया अत्याचारों के शिकार नागरिकों द्वारा उस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने पर उन पर माओवादी का मुहर लगाते हुए विरोध स्वर को कुचलने की साजिश कर रही है। अपने विरोध के बावजूद खदानों की लूट को रोकने के लिए माल ढुलाई के वाहन जलाया गया तो बौखलाई सरकार अपने क्रूर सी–60 कमाण्डो बलों को जनता पर उकसा रही है। माओवादियों के बहाने जंगल को छान लगाने वाले सुरक्षा बल के जवान आदिवासियों का जीना दुर्भर बना रहे हैं।

5 जनवरी को कोरची तहसील के गॉव बोट्टेझरी से 42 वर्षीय ज्योति

गावडे को अपने दिन दहाड़े घर से उठाकर जंगल की तरफ ले गए और उन पर सामूहिक अत्याचार करने के बाद गोलियों से भून दिये। बाद में उन्हें माओवादी कमाण्डर घोषित किए। निहत्था साधारण आदिवासी महिला पर सी–60 कमाण्डों बलों की इस नृशंस कार्रवाई का क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन तीव्र भर्त्सना करता है। इस घटना का न्यायिक जांच की मांग करता है।

20 जनवरी को जोन्नावारा की रहवासी लूली बिरजू तिम्मा अपने मायके नैतला, जो महाराष्ट्र के सीमावर्ती गांव है, जाने के लिए अपने रिश्तेदार सुमित्रा गोटा के साथ रवाना हुई। जोन्नवारा और नैतला छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के सीमावर्ती गांव हैं। जोन्नवारा छत्तीसगढ़ राज्य के कांकेर जिला में आता है। नैतला, महाराष्ट्र राज्य गड़चिरोली जिला में आता है। लूली तिम्मा दो बच्चों की मां है, जबकि सुमित्रा गोटा अविवाहित युवती है। इनके हमसफर ताडबयल गांव के बुजुर्ग वड्डे, जिनका उम्र 50 के आसपास है, तीनों को बीच रास्ते में सी–60 कमाण्डों ने जवानों ने पकड़कर रातभर बंदी बनाकर रखे। रात में दोनों महिलाओं पर लैंगिक अत्याचार किए। अपने इस काले कारनामे को छुपाने तथाकथित ईंदूर मुठभेड़ का सी–60 बलों ने प्रचार की है। बाद में आक्रोशित नागरिकों ने बलात्कार काण्ड के विरोध में गट्टा थाना के सामने धरना प्रदर्शन दिए। पुलिसिया अत्याचारों का विरोध करने वाले आम नागरिकों पर माओवादी का ठप्पा लगाकर उनका मुंह बंद करवाने के लिए महाराष्ट्र फडणवीस सरकार व गड़चिरोली पुलिस प्रशासन द्वारा की जाने वाले षड़यंत्रों का क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन पुरजोर विरोध कर रहा है।

इनमें से किसी भी मामले में कोई भी दोषी पुलिस अधिकारी पर न तो अनुशासन कार्रवाई ली गई या किसी अधिकारी को गिरफ्तार तक नहीं किया गया। इन काले कारनामों को जगजाहिर करने या अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने वाले सामाजिक कार्यकर्ताओं, शोधार्थियों, मानव अधिकार कार्यकर्ताओं, वकीलों, सामाजिक संगठनों व संस्थाओं को पुलिस प्रशासन द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है। वर्ष 2016 में सोनी सोढ़ी पर घातक जलनशील पदार्थों का हमला हुआ। दिल्ली विश्व विद्यलाय की प्रोफेसर नंदिनी सुंदर, जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय की प्रोफेसर अर्चना प्रसाद, मालिनी सुब्रह्मण्यम, शोधार्थी बेला भाटिया, जगलॉग के वकील ईशा खण्डेलवाल इत्यादि को बस्तर आईजी शिव राम प्रसाद कल्लूरी व उनके गुण्डावाहिनी 'अग्नी' द्वारा कई किस्म की धमकियां दी जा रही है।

बस्तर आदिवासियों खास रूप से महिलाओं पर सुरक्षा बलों द्वारा अमानवीय अत्याचार, लैंगिक उत्पीड़िन, सामूहिक बलात्कार की घटनाओं को नागरिक समाजश के सामने उजागर करने वाली कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय की शोधार्थी, नागरिग अधिकार कार्यकर्ता भेला भाटिया के घर पर कल्लूरी के गुण्डावाहिनी ने हमला किया और उन्हें बस्तर छोड़कर चले जाने की धमकी दी गई। इसके पहले भी उनके खिलाफ कल्लूरी के गुण्डों ने 'नक्सलियों के दलाल बेला भाटिया, बस्तर छोड़कर वापस जाओ' जैसे अपमानजनक पोस्तर लगाए थे। सरकार प्रायोजित 'अग्नी' के सुब्बा राव अपने वाट्स एप पर, ''बस्तर जिले के बुरगुम से सुकमा जिले के पेद्दा सेट्टी जाने के लिए वाहन की निशुल्क सुविधा हेतु सोनी, शालिनी, बेला एवं अन्य काड़ीबाज कृपया मुझसे संपर्क करें!!'' जैसे आपत्तिजनक व अपमानजनक टिप्पणी लिखी गई। किराये के मकान से उन्हें खाली करवाने मकान मालक बाप–बेटे को रोज थाने में बुलाकर दबाव डाला गया और धमकियां दी गई थीं। भेला भाटिया के घर पर हमले पर सवाल उठाने वाली वकील ईशा खण्डेलवाल को दी गई संदेश में प्रयोग की गई भद्दी, अभद्र व अश्लील भाषा पर बीबीसी की संवाददाता दिव्या आर्य जब उनसे जानकारी लेने के लिए बात की तो, 'तुम सायबर एक्सपर्ट हो क्या?' कहते हुए उन्हें मुंह बंद करवाने का प्रयास बस्तर आईजी कल्लूरी ने किया।

दंडकारण्य जोन में कार्यरत क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन, जो देश में सबसे बड़ी महिला संगठन है, जिसकी सदस्यता एक लाख पार कर चुकी है, देश के भीतर महिलाओं, दलितों, छात्रों, पत्रकारों, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संवाददाताओं सहित तमाम लोकतंत्र प्रेमियों पर सत्ताधारी हिन्दू ब्राह्मणीय फासीवादी सरकारों द्वारा चलाई जा रही दमन का खण्डन करती है। देश के भीतर कार्यरत तमाम महिला संगठनों, मानवाधिकार संगठनों, जनवादी प्रेमियों से आह्वान करती है कि माओवाद के बहाने बस्तर आदिवासियों के खिलाफ छेड़ी गई नाजायज युद्ध ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का खण्डन करें। जल–जंगल–जमीन पर अधिकार के साथ–साथ अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाने बस्तरवासियों द्वारा जारी संघर्ष को भरपूर समर्थन दें।

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन जिंदाबाद!

महिलाओं पर बर्बर हिंसा चलाने वाली मनुवादी हिन्दू ब्राह्मणीय फासीवाद मुर्दाबाद!

अपनी बेटियों को बचाने के लिए प्रतिरोध करो!

अध्यक्षा

रनिता हिचामी

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन

दिनांकः 1 जनवरी 2017 दंडकारण्य

अनशन नहीं, हथियारबंद लड़ाई ही एक मात्र रास्ता है!

सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून के रद्द के लिए संघर्ष करेंगे!

सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून (एएफएसपीए) –1958 को हटाने की मांग को लेकर लगभग 16 सालों से भूख हड़ताल पर रही इरोम शर्मिला ने अगस्त 9 को अपना अनशन तोडा.

1958 में बनाया गया यह कानून पहले असोम, मणिपुर, नागालैंड के पर्वतीय इलाकों में अमल में था. 1972 में इसे समूचे पूर्वोत्तर (अरुणाचल प्रदेश, असोम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा एवं मिजोरम) में लागू किया गया है. अंग्रेजों के कब्जे के पूर्व पूर्वोत्तर का इलाका अलग–अलग स्वतंत्र राष्ट्रीयताओं, जनजातियों के शासन के मातहत था. अंग्रेजों ने इस इलाके को जबरन अपने साम्राज्य का हिस्सा–भारत में शामिल किया था. अपनी आजादी के लिए अंग्रेजों के खिलाफ प्रारंभ की गयी पूर्वोत्तर की राष्ट्रीयताओं की लड़ाई आज भी जारी है. इनके जायज संघर्षों के दमन के लिए वहां अर्ध–सैनिक बलों की तैनाती हुई. इस कानून के सेक्शन–4 द्वारा सशस्त्र बलों को असीमित अधिकार दिये गये हैं.

इस कानून के मुताबिक किसी भी व्यक्ति को कभी भी, कहीं भी मार सकते हैं. गिरफ्तार कर सकते हैं. यातनाएं दे सकते हैं. घरों व संपत्तियों को ध्वस्त कर सकते हैं. शांति व्यवस्था के लिए खतरा पैदा करने के नाम पर जान ले सकते हैं. किसी को गिरफ्तार करने के लिए अपराध करने के शक का बहाना बना सकते हैं. विध्वंस के लिए मिलिटेंटों के छुपे होने का बहाना बना सकते हैं.

मणिपुर की राजधानी इंफाल के नजदीक मालम बस स्टैंड में बस के इंतजार में खड़े यात्रियों पर 1 नवंबर, 2000 को असोम रायफल्स द्वारा की गयी अंधाधुंध गोलीबारी में दस ने दम तोड़ा था. मृतकों में एक 62 वर्षीय वृद्धा के अलावा एक 18 वर्षीय राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त बालक भी था. इस निर्मम घटना से विचलित 28 वर्षीय इरोम शर्मिला ने दूसरे ही दिन से ऐसी बर्बरता को बढ़ावा देने वाले सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून को रद्द करने की मांग को लेकर अपनी भूख हड़ताल की शुरुआत की थी. अनशन के चौथे दिन ही पुलिस ने आत्महत्या के प्रयास के अपराध में उन्हें गिरफ्तार किया था. उनकी गिरफ्तारी व रिहाई 9 अगस्त, 2016 तक जारी थी. इंफाल के जवहरलाल नेहरू अस्पताल का एक विशेष वार्ड उनकी जेल के रूप में काम करती रही. वहां नाक में ट्यूब डाल कर जबरन आहार दिया जाता था. अनशन प्रारंभ करते वक्त 28 साल की युवती अब 44 साल की अधेड़ हो गयी है.

इरोम शर्मिला मणिपुर इस्पाती महिला के रूप में पहचानी जाती है. अपनी बेटी के अनशन पर उनकी मां कहती थीं, 'मेरी बेटी जिस आशय के लिए संघर्ष कर रही है, उसकी पूर्ती होते तक मैं अपनी बेटी को नहीं देखूंगी'. इन मां–बेटी के समर्थन में मणिपुर में माताओं का एक संगठन ही बन गया है.

सशस्त्र बल विशेषाधिकार कानून, 1958 के खिलाफ सिर्फ शर्मिला ही नहीं पूरे मणिपुर में लगातार जुझारु आन्दोलन चल रहा है. 10 जुलाई, 2004 को अपने घर में सो रही तंगजम मनोरमा नामक 32 वर्षीय युवती की असोम रायफल्स के जवानों ने उठा ले जाकर निर्मम हत्या की. इस क्रूरता के विरोध में इंफाल के असोम रायफल्स के मुख्यालय के सामने बारह महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं ने नग्न प्रदर्शन किया. इस प्रदर्शन से नागरिक समाज

शर्मसार हो गया.

इरोम ने अपना अनशन तोड़ने का निर्णय लेकर ऐलान कर दी कि वे चुनाव लडेंगी व मुख्यमंत्री बनेंगी, मुख्यमंत्री बन कर एएफएसपीए को हटायेंगी. इससे हम साफ तौर पर यह कह सकते हैं कि 16 वर्ष के अपने आंदोलन के बाद भी सांसदीय व्यवस्था जो लुटेरे शासक वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है, पर उनका भ्रम टूटा नहीं है.

16 साल की लंबी भूख हड़ताल समूची दुनिया में ही अभूतपूर्व व बेजोड़ थी. उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए अनशन नहीं किया था. उनकी कोई व्यक्तिगत मांग भी नहीं थी. इसीलिए उन्हें एक आन्दोलनकारी की पहचान मिल गयी थी. उन्हें मणिपुर संघर्ष के आइकॉन (नमूना) के रूप में भी कुछ लोगों ने चित्रित किया था. ऐसे में चुनाव का रास्ता अपनाकर उन्होंने आन्दोलनकारी की अपनी पहचान को स्वयं ही रद्द कर दिया है.

भूख हड़ताल खतम करने के इरोम के फैसले के प्रति मणिपुर में कड़ा विरोध दर्ज हुआ है. चुनाव में जाने के उनके फैसले का भी विरोध किया गया है. इसी विरोध ने हाल में संपन्न मणिपुर चुनावों में बुरी तरह हरा दिया.

शोषक–शासक वर्ग अपने शासन व शोषण को कायम रखने बर्बर कानूनों का इस्तेमाल करते हैं. इसीलिए एएफएसपीए और ऐसे ही बर्बर कानूनों के खिलाफ जुझारु संघर्ष एकमात्र विकल्प है. ईरोम का अनशन तोड़ने का निर्णय एक बार फिर यह साबित करता है कि अनशन नहीं, हथियारबंद लड़ाई ही एक मात्र रास्ता है!

सोनी सोढ़ी की अगस्त क्रांति यात्रा
यात्रा का स्वागत–तिरंगे का बहिष्कार

अगस्त 9 से 15 तक आम आदमी पार्टी की नेत्री सोनी सोढ़ी ने आदिवासियों पर सरकारी सशत्र बलों द्वारा जारी अत्याचारों, फर्जी मुठभेडों, महिला उत्पीड़न के विरोध में अगस्त क्रांति के नाम पर पदयात्रा की थी एवं गोंपाड गांव में 15 अगस्त को तिरंगा फहरायी.

आज यह जगजाहिर है कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आन्दोलन को खत्म करके देश की प्राकृतिक संपदाओं व संसाधनों को देशी, विदेशी कॉरपोरेट घरानों के हवाले करने के लिए 2009 से देशव्यापी सैनिक फासीवादी दमन अभियान ग्रीनहंट संचालित है. ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी भाजपा की मोदी सरकार के केंद्र में एवं राज्य में रमण सिंह के तीसरी बार सत्तारूढ़ होने के बाद से इस अभियान में अभूतपूर्व तेजी आयी है. सितंबर, 2015 से इसके तहत बस्तर संभाग की जनता खासकर आदिवासी जनता पर पाशविक दमन चलाया जा रहा है. मिशन–2016 के नाम पर सशस्त्र बलों द्वारा फर्जी मुठभेडें, आदिवासी महिलाओं का सामूहिक बलात्कार व हत्याएं, जनता की सामूहिक व बेदम पिटाई, अवैध गिरफ्तारियां, झूठे केसों में फंसाकर जेलों में ठूंसना, लंबी सजाएं देना आज बस्तर में रोजमर्रा की बात बन गए हैं. सिर्फ माओवादी पार्टी ही नहीं बल्कि सीपीआई, आम आदमी पार्टी, महिला संगठन, मानवाधिकार संगठन, आदिवासी सामाजिक संगठन, अधिवक्ता, पत्रकार, यहां तक कि विपक्षी कांग्रेस पार्टी भी इस राज्य दमन का शिकार हैं. यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सरकारों की जनविरोधी व देशविरोधी नीतियों व दमनात्मक हथकंडों के खिलाफ उठने वाली हर आवाज को दबाया जा रहा है. ऐसे माहौल में दमन का मुकाबला करते हुए हिम्मत के साथ संघर्ष इलाकों का दौरा करते हुए सच्चाई को जनता के सामने लाने व दमन के खिलाफ आवाज उठाने वाली तमाम ताकतों का क्रांतिकारी आन्दोलन हमेशा स्वागत करता आया है. इसीलिए गोंपाड सहित बस्तर में आदिवासी अस्तित्व, अस्मिता व आत्मसम्मान के लिए एवं आदिवासियों पर जारी अत्याचारों व महिला उत्पीड़न के खिलाफ जारी संघर्ष में सोनी सोढ़ी का दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन ने एक ओर स्वागत किया लेकिन दूसरी ओर आदिवासियों की आजादी का नहीं बल्कि शोषक–शासक वर्गों की राज्यसत्ता व जन दमन का प्रतीक होने के चलते तिरंगा झंडे का बहिष्कार किया था.

इस संदर्भ में पार्टी ने सोनी सोढ़ी सहित तमाम प्रगतिशील व जनवादी संगठनों व व्यक्तियों से कुछ महत्वपूर्ण बातों पर गौर करने की अपील की थी. तिरंगा देश की बहुसंख्यक जनता की असली आजादी, असली विकास, बराबरी का प्रतीक कतई नहीं है. वह 1947 में अंग्रेजों के हाथों से हमारे देश के सामंती व दलाल नौकरशाही पूंजीपति वर्गों के हाथों में हुए सत्ता हस्तांतरण का प्रतीक मात्र है. देश की संप्रभुता को साम्राज्यवादी ताकतों के पास गिरवी रखने का प्रतीक है. तब से लेकर आज तक केंद्र, राज्य सरकारों द्वारा जारी देशविरोधी व जनविरोधी नीतियों एवं उत्पीड़ित जनता खासकर मजदूरों, किसानों, महिलाओं, दलितों, पिछड़ों व धार्मिक अल्पसंख्यकों पर जारी दमन का प्रतीक है. देश की आदिवासी जनता के अधिकारों के हनन का प्रतीक है. ब्राह्मणीय हिन्दुत्व फासीवादी मोदी, रमण सिंह इसी तिरंगे की छाया में काम कर रहे हैं. सोनी सोढ़ी पर अमानवीय व अकथनीय यौन उत्पीड़न को अंजाम देने वाले अंकित गर्ग को इसी तिरंगे की छाया में राष्ट्रपति वीरता पुरस्कार दिया गया है. बस्तर की जनता का पाशविक व फासीवादी दमन भी इसी तिरंगे की छत्रछाया में जारी है. जबकि गोंपाड सहित बस्तर व दण्डकारण्य के सैकड़ों गांवों में जनता अपने वीरोचित संघर्षों व जनयुद्ध के जरिए शोषक–शासक वर्गों की सत्ता की जगह जनता की जनवादी राज्यसत्ता को कायम कर रही है. गोंपाड में पिछले एक दशक से भी ज्यादा समय से जनता की असली आजादी, असली विकास के प्रतीक व जनवादी राज्यसत्ता के रूप में क्रांतिकारी जन कमेटी (क्रांतिकारी जनता ना सरकार) संचालित है.

अपनी बहादुराना लड़ाइयों के जरिए तिरंगे की जगह स्थापित व फहराए गए जनता ना सरकार परचम को हमेशा उंचा उठाये रखने में एवं क्रांतिकारी जनता ना सरकारों के विस्तार व मजबूती के लिए देश की जनता, जनवादी–प्रगतिशील ताकतों, मानवाधिकार संगठनों, देशभक्त ताकतों, तमाम सामाजिक संगठनों को आगे आकर दण्डकारण्य की जनता की हर संभव मदद करनी चाहिए. दण्डकारण्य में जारी पाशविक सैनिक दमन अभियान के खिलाफ हर संभव तरीके से आवाज उठानी चाहिए. ❍

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के नाम पर आदिवासियों के खिलाफ नाजायज युद्ध बंद करो !

यह संघर्ष हमारा है, इस संघर्ष के साथ ही हम आगे की कूच करेंगे!

''आसमान में आधा, संघर्ष में आधा'' यह प्रख्यात उद्धरण कॉमरेड माओ त्सेतुंग का है. यह मात्र उद्धरण नहीं हैं. यह दुनिया भर का रोजमर्रे के साथ जुड़ा हुआ है. जिन इलाकों में वर्ग संघर्ष जारी है, वहां पर उसने महिलाओं की जिंदगियों से जुड़े तमाम पहलुओं को तीखा बनाकर रखा है. वर्गीय समाज में व्याप्त पितृसत्ता की मानसिकता में जकड़ी हुई महिलाओं के लिए उसे तोड़ते हुए बाहर निकलना सचमुच एक चुनौती ही होगा. इसके मद्देनजर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी(माओवादी) ने महिला विशेष बैठकों को संचालित करने का निर्णय लेकर उस पर अमल भी किया. इन बैठकों में शामिल महिला कार्यकर्ताओं ने एक महिला की हैसियत से सामना करने वाले समस्याओं पर चर्चा की थीं. खुद के अंदर मौजूद पितृसत्ता के साथ–साथ पूरा समाज के तहत अनिवार्य रूप से पार्टी में मौजूद पितृसत्ता विचारों को चिन्हित करके उनके खिलाफ संघर्ष चलाने का निर्णय ली है. शोषक–शासक किस प्रकार इसका नाजायज फायदा उठा रहे हैं तथा किस प्रकार दमन की वजह से महिलाओं को अतिरिक्त बोझ ढोना पड़ रहा है, इन बैठकों में खुलकर चर्चा हुआ.

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट का जिक्र किये बगैर क्रांतिकारी आंदोलन के किसी भी पहलू पर हम बात नहीं कर सकते हैं. हालांकि महिलाओं के लिए पितृसत्ता, शोषण–उत्पीड़न और दमन – ये तो कोई नई चीज नहीं है. ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के बाद जुड़ा हुआ नया पहलुओं पर गौर करेंगे. अमेरिका साम्राज्यवादियों द्वारा प्रारूपित एलआईसी नीति के तहत भारत शासक वर्गों ने काउण्टर इनसर्जन्सी की शुरुआत की. जिससे दंडकारण्य के मूलनिवासियों की पीढ़ियों से चली आ रही परंपरागत जीवन शैली ध्वस्त हो रही है. यह रुख सल्वाजुडूम के दौरान शुरू हुआ. आदिवासी परंपराओं की अवहेलना करते हुए भाई–बहन के साथ जबरदस्ती शादी रचाया. उत्पादन प्रणाली के साथ जुड़ी आदिवासी परंपरागत त्यौहारों को मनाने पर रोक लगा दिया. गांव के सियानों को अपने नियंत्रण में रखकर महिलाओं व कार्यकर्ताओं पर दबाव लाने का प्रयास शुरू हुआ. समाज में वैज्ञानिक सोच के अभाव से व्याप्त अंध विश्वासों का गलत फायदा उठाते हुए क्रांति संघर्ष में महिलाओं की भूमिका को कुंठित या वंचित करने की साजिश रची जा रही है.

गॉवों में उपस्थित जनविरोधी कबलाई मुखिया भी महिला कार्यकताओं पर दबाव लाने का कई चाल चल रहे हैं. गांव की एक महिला कार्यकर्ता बीमार होकर इलाज के लिए गांव के पुजारी के पास गई तो गांव के पुजारी ने मनोवैज्ञानिक इलाज का सहारा लिया. उसने बीमार महिला को बताया कि वो संगठन में काम करती है, इसीलिए उसका नस टूट चुका था, जिसके कारण वो बीमार पड़ गई. दूसरे गांव के एक कार्यकर्ता के साथ भी ऐसा ही हुआ. अपने परिवार के बीमारग्रस्त परिवार जनों को सुधारने के लिए उसे संगठन का काम बंद करना होगा. महिला कार्यकर्ताओं के पतियों पर अपने पत्नियों को काबू में रखने में अक्षम होने का आरोप लगाते हुए उन्हें चिढ़ाया जा रहा है और दबाव बढ़ाया जा रहा है.

पीएलजीए कार्यकर्ताओं के परिवार जनों पर अपने बच्चों को सरेंडर कराने का दबाव डालते हुए पुलिस वाले तंग कर रहे हैं. इनके लिए कार्यकर्ताओं के मॉ–बेटियों, पिता व पुत्रों को जेल में बंद कर रहे हैं. गृहस्थी संभालने वाले पुरुष जब जेल जाते हैं, तो परिवार का आर्थिक बोझ के साथ–साथ तमाम प्रकार के उत्पादन क्रिया कलापों को चलाने का भार महिलाओं को वहन करना पड़ रहा है.

दंडकारण्य महिलाएं अपना अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष के बिना दूसरा उपाय नहीं है, इसका एहसास होने के बाद वे क्रांतिकारी आंदोलन के रास्ते पर चलने का निर्णय ले रही हैं और आंदोलन का रास्ता अपना रही हैं. ऑपरेशन ग्रीन हण्ट दमन महिलाओं को अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष का हिस्सा बनने पर विवश कर रहा है. तमाम शोषण–उत्पीड़नों से मुक्ति दिलाने का एकमात्र रास्ता समझकर इसमें शामिल हो रही हैं. पीढ़ियों से जंगल में जीवनयापन करने वाले आदिवासी ही नहीं मैदानी व शहरी इलाकों पल बढ़नेवाली महिलाएं भी हथियार बंद संघर्ष का हिस्सा बन रही हैं. गुरिल्ला जिंदगी का कठोर परिश्रम से गुजरते हुए, बलिदानों की स्फूर्ति से काम कर रही हैं. मानसिक तनाव, प्रतिकूलताओं के बीच काम कर रही हैं. पानी की किल्लत के चलते व्यक्तिगत साफ सफाई का भी पालन करना मुश्किल हो रहा है. जिसके चलते अधिक रक्तस्राव एवं रक्तहीनता का शिकार होना पड़ रहा है. इसी वजह से गुरिल्ला महिला साथियों को मेडिकल आहार के तौर पर पल्लीदाना और गुड़ दिया जाता है.

पार्टी से राजनीतिक और नैतिक मदद लेते हुए महिला कार्यकर्ता पार्टी में व्याप्त पितृसत्ता रुझानों के बारे में विचार विमर्श कर रही हैं. उन गैर सर्वहारा रुझानों के खिलाफ संघर्ष कर रही हैं. पार्टी के अंदर अनुशासनात्मक नियमों के साथ–साथ वैवाहिक जिंदगी से संबंधित नियम भी

जीने के लिए एक मात्र रास्ता है युद्ध, जिसे करने के लिए हर समय हम हैं तैयार

संघर्षरत महिलाओं की उद्घोषणा

युद्ध, महिलाओं की प्रकृति के विरुद्ध है – ऐसी समझदारी बुर्जुआई समाज हमें देता है. रूस, चीन, वियतनाम इत्यादि देशों की महिलाओं ने तलवार, बंदूकें, बमों से लैसे होकर युद्ध में कवायद के द्वारा उपर्युक्त बुर्जुआई अवधारणा को सिरे से खारिज कर दिया. रसोई के औजारों को हथियार बनाकर पुलिस पर वार करने का कई मिसालें हमारे सामने मौजूद हैं. आज भारत में जारी जन युद्ध में महिलाओं की भूमिका के बारे में हम सुन रहे हैं और देख भी रहे हैं. गुरिल्ला दस्तों, पलटनों, कंपनियों व बटालियनों का हिस्सा बनकर वे अपनी भूमिका बखूबी निभा रही हैं. इनके अलावा गांवों में रहने वाली महिला साथी युद्ध में सराहनीय भूमिका निभा रही हैं. हथियारों से लैस होकर सशस्त्र संघर्ष में शामिल होना, निशस्त्र रहते हुए शामिल होना – युद्ध में दोनों का बराबर महत्व रहता है. गुरिल्ला आधार क्षेत्रों में घुसपैठ करने वाले दुश्मन की ठोस लोकेशन की जानकारी जब तक नहीं मिलती तब तक दुश्मन पर प्रति हमला करना व नाश करना संभव नहीं हो पाता है. पीएलजीए के तीनों बलों के लिए ऑख और कान बनकर दुश्मन पर प्रहार करने के लिए सहयोग देने वाली महिलाओं की बहादुरी का एक किस्सा इस प्रकार है.

वह, दक्षिण बस्तर डिवीजन का एक छोटा सा गांव है. गश्ती पर निकली पुलिस गांव में पहुंची. यह खबर सुनकर मिलिशिया हमेशा की तरह उनका पीछा कर रहा था. लेकिन पुलिस का गश्ती दल उन्हें चकमा देकर कहीं दुबक गया था तो उसका पता उन्हें नहीं मिल रहा था. मिलिशिया कॉमरेडों को देखते ही गांव की महिलाएं समझ गई थी कि पुलिस का ही खोज में निकले हैं. पुलिस का पता लगाने गांव की महिलाएं उनकी मदद में निकल पड़ी. पहले मिलिशिया साथियों से मिली. हालांकि पुलिस उनके गांव को घेर कर बैठी थी, इतना तो अंदाज उन्हें था. इसकी सूचना मिलिशिया साथियों को देकर उन्हें बगल के झाड़ियों में जाकर छुपने के लिए बताई. पुलिस की तलाश में वे आगे निकल के पहले मिलिशिया साथियों के लिए राशन–पानी की व्यवस्था कर दी. ढूंढते–ढूंढ़ते आखिर तक पुलिस का सुराग लगा ही ली थी. मिलिशिया को इसकी सूचना दी और सुरक्षा की सावधानियां भी बताईं. मिलिशिया साथी दिन भर पुलिस का पीछा करते गए. लेकिन कुछ नहीं हुआ.

अगले दिन फिर वहीं दिनचर्या शुरु हुई. पुलिस का सुराग खोजते खोजते दो दिन से बिना खाना, पानी के थकेमांदे मिलिशिया साथियों को गांव में लेकर आई और खिला पिलाकर आराम करने के लिए बताकर वो फिर से पुलिस की सुराग लेने निकल पड़ी और सुराग लेकर ही वापस लौटी. उनसे खबर मिलने के बाद मिलिशिया साथी पहले से बिछाई गई बारूदी सुरंगों के पास जा बैठे और नजदीक आने पर पुलिस बैच पर चार विस्फोट करके दो पुलिस कुत्तों को जख्मी कर दी. अपनी जान बचाकर पुलिस वहां से जल्दी–जल्दी वापस जाने के लिए रवाना हो गई. ऐसा जाते जाते वो मिलिशिया द्वारा खोदे गए गड्ढों में फंस गए और दो जन घायल हुए. आगे जाकर मिलिशिया की दूसरी एम्बुश में फंस गए. बड़ी मुश्किल से बचकर कैम्प पहुंचने के बाद राहत की सांस ली. मिलिशिया के साथ रहते हुए हमले के लिए महत्वपूर्ण सूचना देने वाली महिलाओं की प्रेरणादायक भूमिका ने गांव का ही नहीं पास पड़ोस के गांवों की जनता को भी उत्साहित किया. ऐसी कार्रवाईयां जन युद्ध में सचमुच जान फूंकनेवाली हैं. ❍

पृष्ठ 25 से जारी.....

बनाये गये थे. पीएलजीए में भर्ती के बाद कम से कम 2 साल तक शादी का प्रस्तावना लाने पर मनाही है. लेकिन राजनीतिक रूप से कमजोर कुछ साथियों द्वारा जल्दबाजी में प्रस्ताव लाया जा रहा है, महिला कॉमरेडों पर शादी के लिए दबाव डालना भी हो रहा है. ऐसे मामलों में महिला कॉमरेड्स हिम्मत के साथ सामने आकर संबंधित कॉमरेडों को बता रही है, जिन्हें पार्टी कमेटियों द्वारा हल करने का प्रयास जारी है. उसी प्रकार महिलाओं के स्वास्थ्य के बारे में, नैतिक मामलों, पितृसत्ता के संबंधित मामलों में लगातार शिक्षण, बहस, एकता–संघर्ष की बहुत जरूरत होती है. समाज में व्याप्त कई गलत विचारों के जैसे ही पार्टी में भी मौजूद रहते हैं, इस यथार्थ को महिला कॉमरेडों ने अपने अनुभव से सीख ली. इन विशेष महिला बैठकों के दौरान इन्हीं बातों को गहराई से अवगत करने के लिए काफी फायदेमंद सिद्ध हुआ.

नक्सलबाड़ी महान किसान संघर्ष जिंदाबाद!

वसंत काल की बज्रनाद की 50वीं वर्षगांठ को जोश व खरोश के साथ मनाएं. नक्सलबाड़ी मात्र एक गांव नहीं था, एक महान सशस्त्र किसान विद्रोह था, जिसने लुटेरे शासकों को झकझोर दिया. उसने संशोधनवादी नेतृत्व को खारिज किया. उसने ऐलान किया था कि जमींदारों और दलाल शासक वर्गों के किराये के पुलिस गुण्डों के प्रतिक्रान्तिकारी सशस्त्रा दमन के खिलापफ एक साहसिक सशस्त्रा प्रतिरोध खड़ा किया।यह केवल जमीन के लिए किया गया एक संघर्ष नहीं था बल्कि राजनीतिक सत्ता पर कब्जा के लिए भी था। इसने घोषणा किया कि किसानों की मुक्ति का एकमात्रा रास्ता सशस्त्र संघर्ष ही है। शोषित–उत्पीड़ित जनता की जनवादी राजसत्ता की स्थापना का रास्ते को प्रशस्त किया. नक्सलबाड़ी के विरासत को आगे बढ़ाते हुए दंडकारण्य के गांव–गांव में जनता की जनवादी राजसत्ता की स्थापना करें. नक्सलबाड़ी की संघर्ष स्फूर्ति को देश के कोने–कोने में फैलायें.

पृष्ठ 7 से जारी....

आपत्तिजनक व अपमानजनक होता है. एस्कार्ट नहीं मिलने का बहाना बनाकर पेशी पर नहीं ले जाते हैं. कैदियों द्वारा खुद खाना पकाने पर भी आपत्ति जता रहे हैं. पालक भाजी, साबुन, तेल वगैरह दैनिक उपयोगी चीज कोटा मुताबिक आपूर्ति नहीं करते. बीमार पड़ने से इलाज की व्यवस्था नहीं करते. कभी–कभी हथकड़ी लगा देते हैं.

ऐसे ही छोटे–छोटे मामलों में नियमों का उल्लंघन करते रहते हैं. इस पर दर रोज नंबरदारों व जेल अधिकारियों के साथ आपा धापी हो जाता है. कुछ मौकों पर भिड़ भी जाते हैं. जेल प्रशासन के खिलाफ उनका यह संघर्ष सचमुच स्फूर्तिदायक है. इस लड़ाकूपन ने उन्हें जेल से बाहर निकलने के बाद अटूट आत्मविश्वास व सम्मान के साथ जीवनयापन कर रहे हैं. अपने जन कार्यों को भी जारी रखे हुए हैं.

जहां तक केसों का मामला है, मालती का केस सुप्रीम कोर्ट तक गया है. निर्मला व पद्मा की रिहाई पर भाकपा (माओवादी) ने एक अपील भी जारी किया है. उस अपील को हम यहॉ आपके सामने पेश कर रहे हैं.

(अपील पुष्ट 8 मे)

आखिरकार शीला दी जेल से रिहा हुई

शीला मराण्डी जो पिछले 10 सालों से झारखण्ड, उडीशा के जेलों में बंद रही थी. उन पर गिरफ्तारी के समय लगाये गये तमाम आरोपों से बरी होने के बाद नये–नये आरोप लगाते हुए जेल आवरण से सी गिरफ्तार किया जा रहा थी. जमानत पर जेल से छूटते ही नया वारंट तैयार रहता था. फिर से नये आरोप लगाये जाते थे. लगभग 60 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक की हैसियत उनकी रिहाई के लिए नागरिक अधिकार संगठनों, अधिवक्ताओं व जनता के दबाव में आकर सरकार व पुलिस प्रशासन आखिरकार उन्हें जमानत पर छोड़ने पर विवश हुई. वे झारखण्ड में कार्यरत महिला संगठन 'नारी मुक्ति संघ' की संस्थापक थी. झारखण्ड राज्य गिरिडिह जिला, कराण्डो गांव में जन्मी कॉमरेड शीला दी पीढ़ियों से आदिवासियों पर पीढ़ियों से चली आ रही शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ बगावत ने उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बनाया. बचपन से ही वे आंदोलन के क्रिया कलापों के साथ वो पली और बढ़ी थी. नारी मुक्ति संगठन की अगुवाई में उन्होंने महिलाओं पर जारी वर्ग शोषण के साथ–साथ कबीलाई पितृसत्तात्मक दमन के खिलाफ व रोजमर्रे से जुड़ी मुद्दों पर आंदोलन छेड़ी थी. वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की अग्रणी नेता बनीं. केन्द्र कमेटी की सदस्य की हैसियत से उन्होंने भारतीय क्रांति की अगुवा दस्ता में खड़े होकर नारी मुक्ति का परचम लहराई. बचपन से विरासत में मिली गरीबी व कुपोषण से उत्पन्न शारीरिक कमजोरी के अलावा गिरफ तारी के समय पुलिस हिरासत में, जेल जाने के बाद जेल प्रशासन द्वारा दी जाने वाली शारीरिक व मानसिक प्रताड़ना से वे उनका स्वास्थ्य काफी नाजुक बन गया था. अब जनता के बीच रहते हुए अपने पर फर्जी आरोप लगाकर जेलों में सड़ाने वाली पुलिस प्रशासन के खिलाफ कानूनी जंग छेड़ दी है. ज्ञात हो कि उनकी गिरफ्तारी के बाद उनकी रिहाई की मांग पर दंडकारण्य में कार्यरत क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन ने हस्ताक्षर अभियान चलाया, हजारों महिला और पुरुषों में ने उस अभियान में अपना हस्ताक्षर देकर महिला आंदोलन के प्रति अपना नैतिक समर्थन जाहिर की.

क्रांतिकारी महिला आंदोलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सचिव रही कॉमरेड समिता वर्ष 2013 में इलाज के दौरान गिरफ्तार हुई. 2016 में वो जेल से छूटकर आई.

अर्चना प्रसाद नंदिनी सुंदर

सामाजिक कार्यकर्ताओं बुद्धिजीवियों, मानव अधिकार कार्यकर्ताओं, महिला संगठनों, लोकतांत्रिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं पर माओवादी समर्थक होने का फर्जी आरोप पर प्रताड़ित करना बंद करो!

छत्तीसगढ़ की जन विरोधी फासीवादी भाजपा सरकार के मार्गदर्शन में बस्तर पुलिस का तत्कालीन सरगना आईजी एसआरपी कल्लूरी ने इस साजिश के तहत कि बस्तर में जारी पुलिसिया दमन व आतंक की सच्चाई से बाहर की दुनिया अवगत न हो, कुछ समय पहले सुकमा जिले के कुम्माकोलेंग व नामा गांवों का दौरा करने वाले जांच दल जिसमें जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय की प्रोफेसर नंदिनी सुंदर, दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर अर्चना प्रसाद, टीआईएसएस के विनीत तिवारी, सीपीआई(एम) के राज्य सचिव संजय पराते शामिल थे, के खिलाफ हत्या का फर्जी मामला दर्ज करवाया. दंडकारण्य क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन छत्तीसगढ़ के भाजपाई रमन सरकार का इस अलोतांत्रिक कार्रवाई की कड़े शब्दों में निंदा करती है.

कुम्माकोलेंग व नामा गांवों के ग्रामीणों के नाम पर नंदिनी सुंदर के खिलाफ पुलिस थाने में माओवादियों को मदद देने व गांव में प्रस्तावित पुलिस थाने का विरोध करने हेतु ग्रामीणों पर दबाव डालने की झूठी शिकायत लिखवायी गयी थी जिसका जनपक्षधर पत्रकारों ने भण्डाफोड़ किया था. दरअसल प्रोफेसर नंदिनी सुंदर बस्तर की जनता पर जारी सरकारी दमन, महिलाओं पर सशस्त्र बलों द्वारा लगातार बढ़ते यौन अत्याचारों के खिलाफ लंबे समय से आवाज उठाती आ रही हैं. यह जगजाहिर है कि फासीवादी सैनिक, सांगठनिक दमन अभियान सलवा जुडुम के विरोध में दायर उनकी ही याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने सलवा जुडुम व एसपीओ व्यवस्था को बंद करने का राज्य सरकार को आदेश दिया था. उनकी ही याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने 2010 में सशस्त्र बलों द्वारा शाला व आश्रम भवनों को अपना अड्डा न बनाने व तुरंत खाली करने का आदेश दिया था. ताडिमेट्ला आगजनी कांड पर हाल ही में सीबीआई ने सर्वोच्च न्यायालय को यह रिपोर्ट सौंपी कि ताडिमेट्ला, मोरपल्ली व तिम्मापुर गांवों के 252 घरों को आग के हवाले करने वाले कोई और नहीं, सरकारी सशस्त्र बल ही थे. इस रिपोर्ट के आधार पर नंदिनी सुंदर की ही याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला सुनाया कि दोषियों पर छत्तीसगढ़ सरकार तुरंत कार्रवाई करे. ताडिमेट्ला कांड मुख्य मंत्री रमण सिंह, राज्य के गृह मंत्री, मुख्य सचिव, गृह सचिव, डीजीपी, आईजी कल्लूरी, एवं सीआरपीएफ के आला अधिकारियों द्वारा आदिवासी जनता को आतंकित करने की सुनियोजित साजिश थी.

जन पक्षधर होने के नाते पिछले साल नंदिनी सुंदर के विरोध में आतंकी आईजी कल्लूरी प्रायोजित महिला एकता मंच ने रैली निकाली. उनका पुतला दहन किया गया.

जनता व महिलाओं पर जारी दमन के खिलाफ अवाज उठाने वाली महिला सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी सरकार अपना निशाना बना रही है. पिछले साल आम आदमी पार्टी की नेत्री सोनी सोढ़ी जलनशील रसायनों द्वारा जानलेवा हमला किया गया. इसी तरह सुकमा जिले के कुम्माकोलेंग व नामा गांवों का दौरा करने वाले जांच दल जिसमें जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय की प्रोफेसर नंदिनी सुंदर, दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रोफेसर अर्चना प्रसाद शामिल थी, के खिलाफ हत्या का फर्जी मामला दर्ज करवाया.

इसी तरह जगदलपुर लीगल एइड ग्रुप की ईशा खंडेलवाल, पारिजाता भारद्वाज, शालिनी गेरा, गुनीत कौर आदि महिला अधिवक्ताओं, गैर सरकारी संगठनों, बेला भाटिया आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं, मालिनी सुब्रह्मण्यम जैसे पत्रकारों को डराया–धमकाया गया, उनके घरों व उन पर हमले किए गए. उनसे घर खाली कराने उनके घर मालिकों पर दबाव डाला गया.

सरकार के नाजायज कार्यों व जन विरोधी नीतियों सहित तमाम किस्म के दमनकारी हथकंडों के खिलाफ आवाज उठाने वाले, दमन की सच्चाई की जांच करके, उन्हें उजागर करने वाले जनपक्षधर पत्रकारों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिला संगठनों की कार्यकर्ताओं, अधिवक्ताओं यहां तक कि विपक्षी दलों के नेताओं तक को निशाना बनाकर उन्हें प्रताड़ित कर रहे हैं. अब ऐसे लोगों पर आपराधिक मुकदमें दर्ज करने के हथकंडे अपनाए जा रहे हैं. यहां तक कि सलवा जुडुम के कुख्यात सरगना महेंद्र कर्मा, जिसने आजीवन शोषकों–शासकों की सेवा में अपने ही समाज यानी आदिवासियों के दुश्मन बने, की पत्नि देवकी कर्मा पर भी माओवादी समर्थक होने का आरोप

शहरी आंदोलन की आदर्श जन नेत्री

कॉमरेड कावेरी को लाल-लाल सलाम!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड कुप्पु देवराज (योगेश) और पश्चिम घाटी की स्पेशल जोनल कमेटी की सदस्या कॉमरेड अजिता (कावेरी) जब एक छोटी टीम के साथ केरल राज्य के पदुक्का फारेस्ट रेंज के मलप्पुरम जिले के नीलंबूर के करुलाय के पास ठहरे थे, पुलिस ने उन पर हमला किया. इस हमले में कॉमरेड देवराज (62) और कॉमरेड अजिता (52) की शहादत हुई. वर्तमान में, केंद्र में सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी मोदी सरकार और केरल की सामाजिक फासीवादी सीपीआई(एम) की सरकार के नेतृत्व में माओवादी पार्टी के खात्मे के लिए केरल सरकार द्वारा गठित विशेष बल – थंडर बोल्ट्स ने 24 नवंबर, 2016 को इस आतंकी हमले को अंजाम दिया.

लंबे समय तक क्रांतिकारी आंदोलन की सेवा करने वाले कॉमरेड कुप्पु देवराज और अजिता को 'संघर्षरत महिला' पत्रिका विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करती हैं और शहीदों के परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व सहानुभूति प्रकट करती हैं. इन दोनों प्यारे कॉमरेडों द्वारा स्थापित आदर्श और मूल्यों को ऊंचा उठाने, क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन को आह्वान देती है.

करीबन तीस वर्षों से क्रांति की सेवा करनेवाली कॉमरेड अजिता (कावेरी) अंबत्तूर की थी. वे दलित परिवार में पैदा हुई थी. उनके पिता परंधामन भारतीय रेल्वे के सेवा निवृत्त अधिकारी थे. 1980 के दशक में जब कॉमरेड कावेरी चेन्नई के सिटी कॉलेज में पढ़ती थीं, क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति आकर्षित हो गई. उन्होंने महिला व नागरिक अधिकार के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया. पेशे से वे वकील थीं. वे नजर की समस्या से पीड़ित थी. इसके बावजूद क्रांति के लिए उन्होंने अविश्रांत मेहनत की.

उन्होंने तमिलनाडु के शहरी आंदोलन का नेतृत्व किया. पार्टी के आग्रह के अनुसार वे भूमिगत हो गई थीं. बाद में वे पश्चिम घाटी की स्पेशल जोनल कमेटी की सदस्या बनीं. तमलनाडु की पार्टी में जब राजनीतिक गलत रूझान उत्पन्न हुई थी, वे सही पार्टी दिशा पर अडिग रहीं. उनके जीवन साथी के गलत रूझान के प्रभाव में जाने के बावजूद कॉमरेड कावेरी एक सच्ची कम्युनिस्ट कार्यकर्ता के तौर पर राजनीतिक रूप से अडिग रहीं. अपने आदर्शनीय व्यक्तित्व, प्रतिबद्धता, अथक मेहनत के साथ एक अद्भुत जन नेत्री के तौर पर उभरी कॉमरेड अजिता भारतीय क्रांति में अमिट छाप छोड़ गयी. कॉमरेड अजिता को खोना शहरी आंदोलन के लिए एक बड़ी क्षति है.

कॉमरेड देवराज और अजिता ने पश्चिम घाटी में लाल झंडे को ऊंचा उठाए रखा था. दमन में जितनी भी बढ़ोत्तरी हो जाए, जितने भी नुक्सान हो जाए, क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ कर शोषक वर्गों का उन्मूलन अवश्य करेगा, जनता की राज्यसत्ता हासिल करेगा, नव जनवादी राज्य की स्थापना करेगा, समाजवाद फिर साम्यवाद की ओर अग्रसर होगा. ❍

लगाकर केस दर्ज करने की पुलिस धमकी दे रही है.

महाराष्ट्र के देवेन्द्र फडणवीस सरकार भी कुछ कम नहीं है. आदिवासी महिलाएं लूली बिरजू तिम्मा और सुमित्रा गोटा के साथ 20 जनवरी को महाराष्ट्र के क्रूर सी–60 कमाण्डो पुलिस द्वारा बलात्कार काण्ड के खिलाफ उठने वाली आवाजों को बंद कराने की साजिश के तहत ही महाराष्ट्र ग्राम विकास आंदोलन के सचिव व सामाजिक कार्यकर्ता जयश्री वेळदा, जिला में पेसा कानून अमल के लिए कार्यरत सामाजिक कार्यकर्ता शिला गोटा व सुशीला नरोटे पर फर्जी केस लगाकर जेल में बंद कर उनको अपमानित किया गया.

सामाजिक कार्यकर्ताओं पर माओवादी समर्थक होने के झूठे आरोप पर छत्तीसगढ़ रमनसिंह व महाराष्ट्र के देवेन्द्र फडणवीस की ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी सरकारें सामाजिक कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों, अधिवक्ताओं, प्राध्यापकों जैसी नंदिनी सुंदर, सोनी सोढ़ी, बेला भाटिया, अर्चना प्रसाद, मालिनी सुब्रह्मण्यम, ईशा खण्डेलवाल, पारिजाता भारद्वाज, शालिनी गेरा, गुनीत कौर, जयश्री वेळदा, शिला गोटा, सुशीला नरोटे एवं अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं व बुद्धिजीवियों के खिलाफ सरकारी आतंकी हमलों की कड़ी निंदा करने का क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन आह्वान करता है. ❍

साफ सफाई तो ठीक है .... पहले जान तो बचाओ

मोदी के स्वच्छ भारत अभियान का खूब ढंका पिटा जा रहा है. जिंदगी के एक मात्र विकल्प के रूप में उसे फोकस किया जा रहा है. आदमी को जीने के लिए मूलभूत जरूरतें – रोटी, कपड़ा और मकान सबके पास है या नहीं इस पर बात किए बिना केवल साफ सफाई पर ही जोर दिया जा रहा है. छत्तीसगढ़ राज्य कांकेर जिला कोयलिबेड़ा विकासखण्ड के कामटेडा पंचायत की महिलाओं ने इस स्वच्छ भारत अभियान को अपने जिंदगी और मौत से जुड़ी बुनियादी सवालों से जोड़ी हैं. बारिश के मौसम में पेचिश, बुखार, सर्दी–खांसी से बहुत परेशान हुए. मौके पर कहीं से उन्हें इलाज की सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण से जड़ी बूटी उपचार के द्वारा अपनी जान बचाने पर मजबूर होना पड़ा. सरकारी स्वास्थ्य कर्मचारी, डॉक्टर वहां नदारत थे. हाल में 'स्वच्छ भारत अभियान' का नारा लेकर गांव में शौचालय निर्माण काम लेकर गांव में आनेवाले सरकारी कर्मचारियों द्वारा ग्रामीण महिलाओं को इकट्ठा करके उसका महत्व समझाना शुरू किया गया तो तब महिलाओं ने सोचा था कि गांव में बिना दवाई से मरीज बेमौत मर रहे हैं तो पहले उसकी सुविधा हो जाए. बाद में शौचालय बनायेंगे.

कामतेडा ग्राम पंचायत के 6 गांवों के महिला–पुरुष एकत्रित होकर क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की अगुवाई में अक्तूबर 2016 को साप्ताहिक बाजार में प्रदर्शन किया – पहले पानी, बिजली, अस्पताल और शिक्षक दें फिर ग्रामीण शौचालय बनायेंगे. शौचालय बनाने से गांव की बुनियादी समस्याएं हल नहीं होंगी. इस सभा में उपस्थित पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि आज तक हमारे गांव में बिजली नहीं पहुंची है, अस्पताल नहीं है, जिसके चलते जान जोखिम में डाल कर नदी–नाले पार कर कोयलिबेड़ा जाना पड़ता है. बारिश के दौरान समय पर इलाज नहीं मिलने से ग्रामीण मर रहे हैं. गांव के हैंडपंच खराब है. ग्रामीण अब भी झरिया आदि का पानी पी रहे हैं.

पंचायत के सभी गांवों में स्कूल तो हैं. लेकिन शिक्षक नियमित रूप से नहीं आते. स्कूलों का दरवाजा ही नहीं खुलता. इससे क्षेत्र के बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं. कई बच्चे स्कूल जाना छोड़ चुके हैं. अनुपस्थिति को लेकर शिक्षकों की ओर से हमेशा प्रशिक्षण व सरकारी कामों का हवाला देकर गुमराह किया जाता है.

गांव की मूलभूत समस्याओं को दूर करने कई बार मांग की गई, लेकिन आज तक ध्यान नहीं दिया गया. अब ग्रामीणों ने शौचालय निर्माण का बहिष्कार किया है. ग्रामीणों ने इसे लेकर साप्ताहिक बाजार के दिन प्रदर्शन भी किया है. शौचालय निर्माण सामग्री से अस्पताल बनाने का निर्णय ग्रामीणों ने लिया.

इस प्रदर्शन के द्वारा ग्रामीणों ने सरकारी योजनाओं के ढोंग का पर्दाफाश किया. अपनी मूलभूत सुविधाओं की ओर आकर्षित करने वाले कामतेडा वासियों व महिलाओं ने संघर्ष का एक नया मिसाल पेश किया.

छह गांवों ने किया बहिष्कार, शौचालय निर्माण सामग्री से बनाएंगे अस्पताल

ग्रामीणों ने रैली निकाली, सभा में कहा- पहले बुनियादी सुविधाएं दें

भास्कर न्यूज | कांकेर

कोयलीबेड़ा इलाके के ग्राम पंचायत कामतेड़ा के आश्रित छह गांव के लोगों ने मंगलवार को प्रदर्शन कर सरकार के शौचालय निर्माण अभियान का बहिष्कार किया। ग्रामीणों की एक ही मांग है कि पहले पानी, बिजली, अस्पताल और शिक्षक दें, फिर ग्रामीण शौचालय बनाएंगे। अब शौचालय बना रहे हैं, तो क्या शौचालय बनाने से हमारी समस्याएं हल हो जाएंगी।

ग्रामीणों ने मंगलवार को अपनी मांगों को लेकर साप्ताहिक बाजार के दिन रैली भी निकाली। रैली गांव में घूमकर बाजार स्थल पर सभा में तब्दील हुई। प्रदर्शन में स्कूली बच्चे भी शामिल थे, जो ग्रामीणों के साथ मांगों की तख्ती हाथ में थामे थे। सभा के दौरान ग्रामीणों ने कहा कि सरकार हमारे पंचायत का विकास नहीं चाहती। सिर्फ दिखावा कर रही है। कामतेड़ा पंचायत के आश्रित गांवों में आज तक बिजली नहीं पहुंची है। अस्पताल नहीं है, जिसके चलते जान जोखिम में डाल कर नदी-नाले पार कर कोयलीबेड़ा जाना पड़ता है। बारिश के दौरान समय पर इलाज नहीं मिलने से ग्रामीण मर रहे हैं। गांव के हैंडपंप खराब हैं। ग्रामीण अब भी झरिया आदि का पानी पी रहे हैं।

कांकेर। कामतेड़ा में शौचालय निर्माण का बहिष्कार कर बुनियादी सुविधाओं की मांग करते ग्रामीण।

समस्या दूर होने तक नहीं बनाएंगे शौचालय

ग्रामीण पिलोबाई, अंतू राम, सुकाल सिंग, राजूराम, सताऊ राम, मन्नू राम, लच्छूराम आदि ने कहा कि जब तक गांव की बुनियादी समस्याओं को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक शौचालय का निर्माण नहीं करेंगे। शौचालय के नाम पर मिलने वाली निर्माण सामग्री रेत, ईंट, सीमेंट से अस्पताल बनाया जाएगा।

मूलभूत समस्याओं को दूर करने मांग की गई, लेकिन ध्यान नहीं दिया गया

गांव की मूलभूत समस्याओं को दूर करने कई बार मांग की गई, लेकिन आज तक ध्यान नहीं दिया गया। अब ग्रामीणों ने शौचालय निर्माण का बहिष्कार किया है। ग्रामीणों ने इसे लेकर साप्ताहिक बाजार के दिन प्रदर्शन भी किया है। ग्रामीण निर्माण सामग्री से अस्पताल बनाना चाहते हैं।

बती पोटाई, सरपंच, कामतेड़ा

गांवों में स्कूल तो हैं, लेकिन नहीं खुलता है दरवाजा

ग्रामीणों ने कहा कि पंचायत के सभी गांवों में स्कूल तो है, लेकिन शिक्षक नियमित रूप से नहीं आते। स्कूलों का दरवाजा ही नहीं खुलता। इससे क्षेत्र के बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं। कई बच्चे स्कूल जाना छोड़ चुके हैं। अनुपस्थिति को लेकर शिक्षकों की ओर से हमेशा ट्रेनिंग व सरकारी कामों का हवाला देकर गुमराह किया जाता है। जबकि शिक्षकों को संबंधित स्कूल के गांव में ही रहना है। इसके अलावा पंचायत के सिर्फ कटाबांस में आंगनबाड़ी है। अन्य गांव में आंगनबाड़ी नहीं होने से शिशु और माताओं को योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है।

माताओं, बंधुओं, सुनो! सुनो!
हमारी जिंदगियों की व्यथाओं व त्रासदियों की कहानी सुनो!
बस्तर की माताओं की आवाज सुनो!!

भारतीय माताओं के लिए तो गर्भशोक कोई नई बात नहीं है. ब्रितानी साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय आंदोलन हो या आज के जन युद्ध हो – कईयों माताओं ने अपने लाड़लों व लाड़लियों को खो बैठी, और वो अभी भी जारी है. पुलिस के शिकंजे में फंसने के बाद लापता अपनी लाड़ली संतान की खोज में तड़पने वाली माताओं का दुख की कहानी है यह. इन चीख पुकारों के प्रति लुटेरी सरकारों की बेरहमी व बेरुखी रवैये के खिलाफ बगावत कर रही हैं. दुनिया के क्रांति संघर्षों व राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों में भी विगत में ऐसा दृश्य आप देख चुके हो.

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के तहत माताओं के आक्रोश का यह वर्तमान परिदृश्य है. बस्तर में मिशन–2016 के नाम पर जारी हिंसा, उत्पीड़न अनाचार व अत्याचारों का देश विदेशों में खूब प्रचार हुआ. दिन चर्या जैसी बनी इन घटनाओं को लेकर कई नागरिक अधिकार संगठनों के अलावा जनवाद एवं सामाजिक संगठनों, संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा भर्त्सना की जा रही है. अभी बस्तर की माताएं अपनी व्यथाओं के साथ आपके सामने आ रही हैं.

आखिर यह आक्रोश की शुरुआत हुई कहां से? इस अन्याय का रोकथाम कैसा करें? क्या करें हम? उनसे संवाद करेंगे तो न जाने कितने सवाल हमारे सामने खड़े हो जाएंगे! हॉ सच है, कई सारे सवालें पूछना हैं हमें. जब इसका हल ढूंढ़ेगे तभी न कदम आगे बढ़ेगा. बस्तर के शोषणकारी तंत्र द्वारा जनता पर ढाया जाने वाला कहर व ज्यादतियां तो पाषाण युगीन बर्बरता को पार कर गई हैं. बस्तर में कदम रखने से पहले बीते या वर्तमान इतिहास में माताओं द्वारा नागरिक दुनिया के सामने पेश कुछ दृष्टांतों पर गौर करेंगे.

बीसवीं शताब्दि में चिली देश में उमड़े जन आंदोलनों के ज्वार को दबाने वहां के लुटेरे शोषक–शासकों ने आंदोलनकारियों व आम जनता का कत्लेआम किया गया. देश की आजादी के लिए संघर्षरत अवाम को मौत के घाट उतार दिया गया. इस नरसंहार में ढेर बने अपने संतानों के लाशों को चिली माताओं ने अपने कंधें पर उठा ले जाकर अंतिम संस्कार की थीं. ऐसी कड़वी व दिल दहला देने वाली सच्चाईयों का जीता जागता तस्वीर 'मिस्सिंग' उपन्यास में मिलेगा.

पिछले शताब्दि के उत्तरार्द्ध से ही 'आजादी' का नारे को बुलंद करते हुए महिलाओं का सड़कों पर उतर आना शुरू हुआ. वो सिलसिला आज भी जारी है. आज वे भारत के विस्तारवादियों को चुनौती दे रही हैं. उनसे जवाब तलब कर रही हैं कि अपने लाड़ले बेटों व बेटियों को ले कहां जा रहे थे, और कर क्या रहे थे. ''हमारी जमीन पर हमें जीने दो, ज्यादती मत करो'' कहते हुए संगठित हो लड़ रही हैं. इनकी व्यथाओं व आकांक्षाओं को 'आजाद कश्मीरी' में दर्शाया गया है.

सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून को वापस लेने की मांग करने वाले मणिपुरी अवाम को कुचलने वाली भारतीय सेना के खिलाफ विरोध जाहिर करने मणिपुर की माताओं ने नया तरीका ईजाद किया. हमारी बेटियों का बलात्कार करना बंद करो, हिम्मत है तो हमारा बलात्कार करो' कहते हुए अपने शरीर पर पहने कपड़े उतार फेंक कर सारी दुनिया को चौंका दी थी. जिसे देख सारी दुनिया शर्मिंदा हो गई.

अपना इतिहास को भूले नहीं भुलाया जा सकेगा.

अब 2016 में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी दमन अभियान के तहत छत्तीसगढ राज्य बस्तर इलाके की माताओं, पत्नियों, बच्चों के चीख–पुकार के बिना दिन नहीं गुजरता है. बस्तर संभाग में स्थित तमाम जिलों में प्रति दिन गिरफ्तारी, आत्म समर्पण नहीं तो मुठभेड़ होता है. 'जैसा कि अधिकांश मुठभेड़ फर्जी होते हैं, वैसे ही इन तथाकथित आत्मसमर्पणों में अधिकांश फर्जी होते हैं. गांव की घेराबंदी की जाती है. घरों के अंदर घुसकर जो मिला उसे पकड़ कर ले जाते हैं. इनमें बुजुर्ग, महिला, बच्चों का कोई फरक ही नहीं देखा जाता है. सरेआम इंसानों को मारते हैं और पीटते हैं. बलात्कार करते हैं और गोलियों से भून भी डालते हैं.

इस प्रकार गिरफ्तारियों, आत्मसमर्पणों, मुठभेड़ों के बाद बस्तर रेंज आईजी कुख्यात एसआरपी कल्लूरी ढींग मारता रहता है. कल्लूरि को बस्तर वासी 'बोल्लूरि' कहते हैं. ढींग मारने वालों को स्थानीय भाषा में ऐसा बोला जाता है. कल्लूरि के प्रचार में ही उसका खोखलापन उजागर हो जाता है. उसके ही कहे अनुसार माओवादी आंदोलन कमजोर पड़ गया होता तो हर दिन यह प्रचार किस काम के लिए? इस सफेद झूठ और अंधेरी राज के डेढ सारे मिसालें हमारे सामने मौजूद हैं.

दक्षिण बस्तर इलाका जिला सुकमा, कोण्टा तहसील गोम्पाड गांव की 16 वर्षीय नाबालिग युवती मडकाम हिडमे की घटना एक ताजा मिसाल है. पुलिस के भाड़े के सैनिक 13 जून 2016 को गोम्पाड गांव पहुंचे. गांव में घुसते ही 48 वर्षीय बुजुर्ग महिला लच्चमी को पकड़े थे, जो हिडमे की मां थी, घर के अंदर धान की कुटाई करने

वाली हिडमे ने पुलिस की चंगुल से अपनी मां को छुड़ाने दौड़ पड़ी. भाड़े के भीड़ ने मां को छोड़ दिया और युवती को पकड़कर समीप के जंगलों में ले गए. वहां उस पर सामूहिक दुष्कर्म करने के बाद मार डाले. लाश ले जाने के लिए मां को खबर भिजवा दिए. इस मां के दुख को सांत्वना कौन देगा, इसे बताना भी संभव नहीं हो सकेगा.

लच्चमी के दुख से हमदर्दी जताते हुए गांव की अन्य महिलाएं व पुरुष मिलकर लाश के पास इकट्ठा हो गए और आला अधिकारियों से इसके बारे में पूछने लगे. दोषियों को सजा देने का मांग करने लगे. आम आदमी पार्टी, नागरिक अधिकार संगठन के कार्यकर्ताओं ने जमीनी हकीकत को समाज के सामने उजागर किया और दोषियों को सजा देने की मांग की.

बताने के लिए ऐसी अनगिनत घटनाएं है. हर एक घटना दिल को दहला देता है. तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष के दौरान विसनूर देशमुख के खिलाफ मुट्ठी बांधकर खड़ी चाकलि आयलम्मा, श्रीकाकुल संघर्ष के दौरान मंदसा जमीन संघर्ष की अगुवाई करने वाली योद्धा गुन्नम्मा को याद दिलाती हैं. बस्तर पर हावी इस अंधेरी राज के खिलाफ कोने–कोने से आवाज बुलंद होने लगी. इस पाशविक दमन का मुक्तकंठ से भर्त्सना कर रहे हैं.

मदर्स डे मनाने वाली शहरी समाज के सामने ये माताएं 'मातृत्व' की नई परिभाषा पेश कर रही हैं. उपहारों के माध्यम से इन दुखित माताओं को संतुष्ट करने की सोच उनके प्रति भद्दा मजाक ही साबित होगा. इन माताओं की दिल की धड़कनों व आकांक्षाओं को उपहारों से तोला नहीं जा सकेगा. मां का ऋुण कैसे चुकाया जा सकता है. मां को कैसे खुश रखा जा सकता है? आखिर वह दुखी क्यों होती है? मात्र इन सवालों से इसका जवाब नहीं मिलेगा. जब आप मातृत्व के बारे में शोध करोगे तो तब समाज में माताओं के आत्म बलिदान को पहचान पाओगे, तब जाकर आपको ये बातें अवगत हो जाएंगी.

जंग ए मैदान से आने वाली इन बस्तरियां माताओं की व्यथा–कथा का आवाहन करने से आपके आंखों के सामने एक नया इतिहास साकार हो उठेगा. विगत को वर्तमान में जिंदा कैसे रखे है और उसे गति कैसे दे रहे हैं, यह समझ में आयेगा. इन माताओं का दुख केवल उस समाज विशेष का नहीं बल्कि तमाम भारत का है. गुलाम के गुलाम, गुलाम के गुलाम बनकर जीने पर मजबूत शोषित–उत्पीड़ित अवाम का दुख है. इस दुख को घृणा में तब्दील करना आज के समय की मांग है. जीने के लिए आपने जो भी रास्ता तय किया होगा, लेकिन यह चेतना को दिल की गहराईयों तक आवाहन करना होगा.

ये माताएं क्या बया दे रही है, प्रत्यक्ष जानिए.

महिलाओं की संघर्ष स्फूर्ति को कुंठित करने वाले अंध विश्वासों के खिलाफ क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन

शोषक–शासक वर्गों द्वारा जनता पर शोषण आजमाने के लिए इस्तेमाल करने वाले तरीकों में अंधविश्वास भी एक है. सक्रिय केएएमएस कार्यकर्ताओं को निष्क्रिय करने के लिए गांवों में मौजूद जन विरोधी कबीलाई सियान नये–नये हथकण्डे आजमा रहे हैं. बुखार से पीड़ित महिला संगठन की एक कार्यकर्ता परंपरागत इलाज के लिए ग्राम पुजारी के पास गई तो उन्हें इलाज तो किया, बाद में उसे बताया गया, ''संगठन के नाम पर गांव–गांव घूमते हुए सबसे बात करते रहती हो, इसीलिए तुम्हारी बीमारी कम नहीं हो रही है.'' एक दूसरी कार्यकर्ता का अनुभव को देखेंगे, ''संगठन में काम करती हो, इसीलिए तुम्हारा नस टूट चुका है!'' दूसरा गांव का दूसरी कार्यकर्ता का अनुभव कुछ इस प्रकार है, ''तुम ऐसे ही संगठन का काम करती रहोगी तो तुम्हारा 'आनल अडका' घर में नहीं रखेंगे!'' यह एक किस्म का मनोवैज्ञानिक दबाव है. कोई भी इन्सान का जब मृत्यु हो जाती है, अंतिम संस्कार के बाद परंपरा के मुताबिक मृत व्यक्ति की आत्मा को मिट्टी के बरतन में भरकर घर के अंदर एक कोने में यह रखा जाता है. संगठन में काम करते हुए यदि उसकी मृत्यु हो जाता है तो उसे घर के अंदर नहीं लायेंगे. क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की कार्यकर्ताओं पर इस प्रकार मानसिक दबाव बनाये रखने का प्रयास जारी है.

पिछले 3 दशकों से आंदोलनरत क्रांतिकारी महिला ने पीढ़ियों से चली आ रही रूढ़ि परंपराओं के खिलाफ, कबीलाई पितृसत्तात्मक दमन के खिलाफ संघर्ष चलाया. जिसके बाद महिलाओं को कई मामलों में राहत मिली. सत्ताधारियों द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ छेड़ा गया दमन अभियान के तहत महिलाओं को निष्क्रिय बनाने के साजिशों के खिलाफ केएएमएस का संघर्ष जारी है. लंबे संघर्ष के द्वारा हासिल उपलब्धियों को बचाने के लिए केएएमएस का संघर्ष भी जारी है.

आदिवासी हितैषी व उत्पीड़ित जनता की कलम योद्धा महाश्वेता देवी को भावभीनी श्रद्धांजलि!

प्रख्यात प्रगतिशील बंगाली लेखिका, सामाजिक कार्यकर्ता, उत्पीड़ित जनता की पक्षधर, आदिवासी हितैषी महाश्वेता देवी का 90 वर्ष की उम्र में 28 जुलाई 2016 को निधन हुआ.

शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ कलम उठा कर साहित्यिक इतिहास में सुस्थिर स्थान बनाने वाली महाश्वेता का जन्म 1926 में बंग्लादेश की राजधानी ढाका के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था. उनके मां–बाप दोनों ही प्रगतशील लेखक थे. महाश्वेता ने अंग्रेजी साहित्य में एमए किया. न सिर्फ लेखिका बल्कि अंग्रेजी अध्यापिका, सामाजिक कार्यकर्ता, स्वतंत्र पत्रकार के रूप में उन्होंने समाज को कई तरह अपनी सेवाएं दी थीं.

1947 में उनकी शादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य, प्रख्यात नटककार, कलाकार व निर्देशक बिजेन भट्टाचार्य के साथ हुई थी. डाक विभाग में नौकरी से उनकी बर्खास्तगी इसलिए हुई थी क्योंकि उनके पती कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे. उस समय आजीविका के लिए वे घर–घर घूम कर कपडों के रंग भी बेचा करती थीं.

वे कहती थी कि इतिहास से संबंधित गहरी संवेदना ही उन्हें हमेशा आगे बढ़ाती है. इसीलिए उन्होंने विगत व वर्तमान इतिहास को लिपिबद्ध करने की सराहनीय कोशिश की. बचपन में जब उन्होंने अपनी नानी द्वारा झान्सी की रानी – लक्ष्मीबाई की कहानी सुनी थी, तब से झान्सी की रानी के प्रति उनकी दिलचस्पी बढ़ती गई. बड़ी होने के बाद उन्होंने झान्सी की रानी के बारे में कई किताबें पढ़ी थीं. उन्होंने यह महसूस किया कि झान्सी की रानी के समग्र इतिहास की कोई रचना नहीं है. इसलिए उन्होंने झान्सी जाकर लक्ष्मीबाई के बारे में गहराई से शोध करके उनका इतिहास लिखा जिसका प्रकाशन 1956 में हुआ था. इसके बाद महाश्वेता की कलम रुकी नहीं. जिस तल्लीनता से उन्होंने रानी के इतिहास को लिपिबद्ध किया, उसी तल्लीनता से अंग्रेजी साम्राज्यवादियों के खिलाफ हथियारबंद संघर्ष करने वाले आदिवासी वीर योद्धा बिरसा मुंडा के इतिहास को भी लिपिबद्ध करके अपनी साम्राज्यवादी विरोधिता एवं दमित जनता के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया.

उत्पीड़ितों का पक्ष लेने वाली उनकी कलम ने हमेशा शोषण, उत्पीड़न, अन्याय, दमन, भ्रष्टाचार व राज्यहिंसा पर सवालिया निशान साधा है. विस्तृत अध्ययन, असामान्य वस्तु विविधता, अद्भुत शिल्प शैली व कुशलता के साथ लिखी गयी उनकी रचनाएं 'हजार चौरासी की मां', 'बषाईटुडु', 'अमृत पंचई', 'अंधार मानिक', 'बिबेक बिदयपाला', 'अग्निगर्भ', 'माहेश्वर', 'ग्राम बांगला', 'नीलि', 'द्रोपदी', 'रुदाली', 'शनीचरी', 'स्तनदाई' आदि समाज की कठोर वास्तविकताओं से अवगत कराते हुए पाठकों में सामाजिक चेतना को जगाती हैं. उनकी रचनाएं अंग्रेजी सहित कई भारतीय भाषाओं में अनूदित हुई जिससे वे देश भर में विख्यात हुई. उनसे प्रेरित कई लेखकों ने सामाजिक चेतनाबद्ध रचनाएं की.

दबे–कुचले वर्गों एवं आदिवासियों की जिंदगियों व संघर्षों को संवेदना, प्रतिबद्धता व समर्पित भावना के साथ अपनी रचनाओं में उखेरने वाली महाश्वेता देवी उन वर्गों का पक्ष लेकर कई सामाजिक संघर्षों का हिस्सा बन गईं. विशेषकर आदिवासी हितैषी के रूप में जीवन पर्यंत रही. आदिवासी जन जातियों के अधिकारों के लिए संगठन बनाकर उन्होंने आवाज उठाई. सिंगूर, नंदीग्राम व महान लालगढ़ संघर्षों के प्रति अपनी मजबूत भाईचारा प्रकट की. आदिवासियों के लिए आजीवन संघर्षरत महाश्वेता को वे प्रेम से मरंदायी (बड़ी बहन) पुकारते थे.

महाश्वेता देवी ने अपनी कलम से जिस शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ निशाना साधा था, उसी शोषण व उत्पीड़न का प्रतिनिधित्व करने वाले शासकों ने उनकी कलम को अपने अनुकूल बदलने की नाकाम कोशिशों के तहत उन्हें पद्म विभूषण, रामन मेगास्सेसे व ज्ञानपीठ सहित कई पुरस्कारों से नवाजा था. इसके बावजूद उन्होंने शोषण के खिलाफ अपनी कलम की धार व ऊष्मा को बरकरार रखी. ऊपर से उन्हें प्राप्त पुरस्कारों की नगद राशि को उन्होंने आदिवासियों के लिए खर्च किया.

आदिवासी इलाकों में प्रचुर मात्रा में व्याप्त खनिज संपदाओं को लूटने का रास्ता सुगम बनाने के मकसद से उनके खिलाफ छेड़ा गया अन्याय पूर्ण युद्ध ऑपरेशन ग्रीनहण्ट का उन्होंने कड़ा विरोध किया. आदिवासियों के हितों के लिए संघर्षरत माओवादियों के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा, ''आदिवासियों का अस्तित्व को बचाने वे बंदूक उठाये हैं, मैं आदिवासियों का हितों के लिए कलम उठाकर लिख रही हूँ.'' इस प्रकार उन्होंने आजीवन आदिवासियों का हितैषी होने के नाते जन राजनीति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की थी. महान लेखिका महाश्वेता देवी की विरासत को अपनाने, जारी रखने, वर्ग संघर्ष को ऊंचा उठाए रखने प्रगतिशील व क्रांतिकारी लेखकों का 'संघर्षरत महिला' आह्वान करता है.

बस्तर बोल उठा .....

(आदिवासियों के खिलाफ युद्ध करना बंद करो)

''बस्तर सालिडारिटी नेटवर्क'' (बस्तर भाईचारा नेटवर्क) संस्था मुम्बई, दिल्ली तथा कोलकाता जैसे महानगरों मे काम करती है. बस्तर में मिशन 2016 के नाम से आदिवासियों पर जारी युद्ध के खिलाफ अपना विरोध जताते हुए देशभर में आदिवासियों के प्रति हमदर्दी जुटा रही है. इस संस्था ने अगस्त 2016 में मुम्बई में ''बस्तर स्पीक्स अप,'' ''स्टाप वार आन आदिवासीस'' के नाम पर एक सम्मेलन का आयोजन किया. सुकमा जिला के पूर्व जज रहे प्रभाकर गाल, दंतेवाडा में कार्यरत स्वतंत्र पत्रकार लिंगाराम कोडापे इत्यादि शामिल होकर भाषण दिए थे. इसी संस्था के तत्वावधान में ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ दिल्ली में एक सभा का आयोजन किया गया था. कई शहरों में यह संस्थान अनेक सभाओं का आयोजन कर रही है.

(पृष्ठ 36 का शेष....)

फिर साबित हुआ. 2016 दमनकाण्ड के खिलाफ जन आंदोलन उमड़ पड़े हैं. गांवों को घेरकर हमला करके आतंक फैलाने वाले सरकारी सशस्त्र बलों का निरायुध जनता द्वारा प्रतिरोध के कई सारी घटनाएं घटी हैं. अपनी जान को दांव पर लगाकर पुलिस के चंगुल से अपनों को छुड़ा ली. गिरफ्तारियां, बलात्कार, फर्जी मुठभेड़े आदि के खिलाफ जनता बड़े पैमाने पर पुलिस थानों की घेराबंदी की. जनता के समर्थन में जनवादी संस्थाओं, जनतांत्रिक संगठनों व लोकतंत्र वादियों ने अपनी आवाजें बुलंद की. इस प्रकार विरोध जताने वाली आवाजों में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं की उपस्थिति, कुछ आंदोलनों की अगुवाई कर रही थी. जिस हम गर्व महसूस कर रहे हैं.

डब्ल्यू.एस.एस.(राज्य व लैंगिक हिंसा के खिलाफ महिलाएं) की कार्यकताएं, आम आदमी पार्टी की नेत्री सोनी सोढ़ी, सामाजिक कार्यकर्ता बेला भाटिया, दिल्ली विश्व विद्यलाय की प्रोफसरें नंदिनी सुंदर व अर्चना प्रसाद, स्वतंत्र पत्रकार मालिनी सुबह्मण्यम, जगदलपुर लीगल एयड ग्रुप की ईशा खण्डेलवाल, पारिजाता भरद्वाज, शालिनी गेरा, गुनीत कौर इत्यादि महिला न्यायविदों ने पीड़ित आदिवासियों के समर्थन में अपनी आवाजें बुलंद की थीं. बहुत जोखिम उठाते हुए अंदरूनी आदिवासी इलाकों का दौरा करके ऐसी कई जमीनी सच्चाईयों को जगजाहिर किया, जिन्हे राज्य शासन दबा देना चाह रहा था.

पुलिस बलों द्वारा मारे गये कार्यकर्ताओं व आम नागरिकों के लाशों को अपने परिवार जनों तक पहुंचा देने में आन्ध्रप्रदेश में कार्यरत अन्य जनवादी संस्थाओं के साथ–साथ शहीदों के बंधु मित्र कमेटि ने विशेष प्रयास किया.

इन सबों के प्रयासों के चलते ही आखिरकार मिशन–2016 का खलनायक कल्लूरी को बस्तर छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा. ताडिमेट्ला अग्निकाण्ड में सशस्त्र बलों का कसूर साबित हुआ. सामाजिक एकता मंच को रद्द करना पड़ा. मिशन–2016 के तहत अस्तित्व में आई 'अग्नी' बुझ गया. अत्याचार के शिकार 45 महिलाओं को मुआवजा देने का सिफारिश राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने छत्तीसगढ़ सरकार को दी. मडकम हिडमे इत्यादि फर्जी मुठभेड़ों की सच्चाइयां उजागर हुई.

2016 आखिरी तक माओवादी आंदोलन का सफाया करने के शासक वर्गों के बुरे मंशों को नाकाम करने पार्टी, पीएलजीए, क्रांतिकारी जन संगठनों, क्रांतिकारी जनतना सरकारों के प्रयासों में जनवादियों का समर्थन अत्यंत मददगार साबित हुआ.

मिशन–2016 के मौके पर ही सही सल्वाजुडूम, ग्रीन हण्ट दमनकाण्ड के खिलाफ कइयों जनवादी संस्थाओं व व्यक्तियों द्वारा देशव्यापी व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े पैमाने पर प्रचार अभियान चलाया गया. कइयों ने कानूनी संघर्ष भी चलाया. प्रोफेसर नंदिनी सुंदर इत्यादियों द्वारा की गई कानूनी लड़ाई के चलते सल्वा जुडूम को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अवैधानिक बताते हुए उसे बंद करने के साथ–साथ एसपीओ व्यवस्था को रद्द करने तथा शासकीय आश्रमशालाओं व पाठशालाओं को सशस्त्र बलों का अड्डा नहीं बनाने का फरमाइश दिया गया.

बस्तर सालिडारिटी नेटवर्क'' (बस्तर भाईचारा नेटवर्क) संस्था मुम्बई, दिल्ली तथा कोलकाता जैसे महानगरों मे कार्यरत है. मिशन 2016 के नाम से बस्तर के आदिवासियों पर जारी अन्यायपूर्ण युद्ध के खिलाफ देशभर में आदिवासियों के प्रति हमदर्दी जुटाने में लगी है. इन लोकतंत्रवादियों के प्रयास लुटेरे शासकों को रास नहीं आ रहे हैं. उनके खिलाफ आवाज उठाने वाले चाहे वो सुदूरवर्ती इलाकों में जीनेवाले अनपढ़ आदिवासी हो, या दिल्ली के उच्चतम शिक्षाविद या कर्मचारी जो भी होंगे, शासन व्यवस्था उनके साथ कठोर बरताव कर रही है.

सोनी सोढी, मालिनी सुब्रह्मण्यम, बेला भाटिया, जगदलपुर लीगल एड ग्रुप के न्यायविदों पर हमलें, नंदिनी सुंदर व अर्चना प्रसाद को हत्या के झूठे आरोप में फंसाना, न्यायमूर्ति प्रभाकर ग्वाल को पदवी से निकाल देना, दिल्ली विश्व विद्यालय के प्रोफेसर साईबाबा, पत्रकार सोमारु नाग, संतोष यादव, प्रभात सिंग, दीपक जयस्वाल जैसों को गिरफ्तार करके जेलों में बंदी बनाना. ... विरोध स्वर को कुचलने के तहत इन तमाम कार्रवाईयों को अंजाम दिया गया.

शासकीय दमन को परवाह किये बिना जनतंत्रवादियों तथा प्रगतिशील संगठनों के कार्यकर्ता जनता के पक्ष में खड़े हो रहे हैं. इन सबको क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन अभिवादन पेश करता है. इस सहयोग को आनेवाले भविष्य में भी व्यापक पैमाने पर जारी रखने की अपील करता है.

क्रांतिकारी आंदोलन से प्रभावित इलाकों में जनता पर एक ओर प्रत्यक्ष युद्ध चलाने वाला शासन दूसरी ओर देश भर के जनवाद, प्रगतिशील व धर्मनिरपेक्ष ताकतों पर हमलें करवा रहा है. मोदी शासन, हिटलरीय शासन को भी भुला रही है. ब्राह्मणीय हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लक्ष्य से देश के भीतर हिन्दू धार्मिक कट्टरता, अध राष्ट्रवाद, अवैज्ञानिक विचारों को भड़काते हुस देश भर में धार्मिक अल्प संख्यकों, दलितों, आदिवासियों व उत्पीड़ित तबकों पर हंतक हमलें करवा रहा है.

राज्य दमन के खिलाफ जनवादी अधिकारों का संरक्षण हेतु भविष्य में व्यापक व विस्तृत जन आंदोलन चलाने का अनुरोध क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन करता है.

रनीता हिचामी

अध्यक्षा

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन, दंडकारण्य

महिला, मानव अधिकार, जनवादी, प्रगतिशील संगठनों व श्रेणियों, न्यायविदों, पत्रकारों व लेखकों से

क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन का अपील!

मिशन–2016 के दमनकाण्ड में आप सब ने आदिवासी जनता को आप सबने साथ दी इस भाईचारे को आगे भी जारी रखिए

देश के अनमोल संपदाओं व प्राकृतिक संसाधनों को देश–विदेशी कार्पोरेट माफिया के सुपुर्द करने के रास्ते पर अवरोध बने क्रांतिकारी आंदोलन व क्रांतिकारी जनता के खिलाफ शोषणकारी राज्य तंत्र ने लंबे अरसे से युद्ध छेड़ रखा है. ब्राह्मणीय हिन्दू फासीवादी मोदी सत्ता में आने के बाद ये हमलें और तेज हुए.

केन्द्र एवं राज्य सरकारें दंडकारण्य में 2016 के आखिरी तक माओवादी आंदोलन का आमूलचूल उन्मूलन के बुरे मंशे से बीते साल मिशन–2016 को शुरू की हैं.

मिशन–2016 के खूनी अभियान के तहत समूचे दंडकारण्य खास रूप से बस्तर में आतंक का माहौल छा गया था. लहलहाते खेत, हराभरा जंगल, नदी–नालें लहूलुहान हो गए. हालांकि बस्तर के खूंखार आईजी एसआरपी कल्लूरी ने मिशन 2016 के तहत 186 मुठभेड़ों में 134 माओवादियों को मार गिराने का दावा किया था, अपुष्ठ आंकड़े जोड़ने से यह आंकडा और बढ़ेगा. जो मारे गए हैं, वे तो माओवादी नहीं है बल्कि आम जनता है. पुलिस व भाड़े के सैनिक बलों द्वारा खेला गया रक्तरंजित खेल है, जिसका प्रायोजक शोषक सरकारें हैं. इसके अलावा मिशन 2016 के तहत बस्तर इलाके से 894 गिरफ्तारियों तथा 1200 आत्मसमर्पणों का दावा कल्लूरी ने किया. हमें यह बताने की जरूरत नहीं होगा कि इक्का दुक्का माओवादी कार्यकर्ता को छोड़कर बाकी सब के सब आम जनता ही है. जनवादी ताकतों के प्रयासों के चलते इन तथाकथित मुठभेड़ों व आत्मसमर्पणों के खोखलापन का उजागर मौके मौके पर हुआ और होता रहा.

पिछले साल सरकारी सशस्त्र बलों द्वारा गांवों पर हमलों के दौरान जनता को दी गई यातनाओं ने उन्हें जिंदगी भर पंगु बना दिया था. कईयों को अमानवीय व बर्बर यातनाएं दी गईं. जनता की माल–असबाब की लूटपाट के साथ–साथ तहस–नहस किया गया. फसलों व सामूहिक कृषि केन्द्र ध्वंस किए गए. गरीबी के चलते बुर्जुआई स्कूलों में पढ़ाई से वंचित आदिवासी बच्चों के लिए जनतना सरकारों के नेतृत्व में संचालित कईयों पाठशालाओं को जला दिए. गांवों पर लगातार हमलों के चलते जनता के लिए दिन में शांति, रात में नींद तक को हराम हो गया था.

महिलाओं पर बलात्कार एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया गया. मिशन–2016 में लगभग सौ से ज्यादा महिलाओं के बलात्कार किया गया. इनमें नाबालिग बच्चियों से लेकर वृद्धाओं तक नहीं छोड़ा गया. महिलाओं के साथ छेड़छाड़ व अभद्र व्यवहार का तो गिनती ही नहीं है.

मडकम हिडमे का बलात्कार व नृशंस हत्या के मामले ने देश भर में खलबली मचा दिया. मिशन–2016 के तहत न जानें ऐसी कितने ही 'हिडमे'यों की बलि चढ़ाई गई. वंजम शांति, सिरियम पोज्जे जैसे आम ग्रामीण युवतियां इसका शिकार हुई.

क्रांतिकारी आंदोलन में कुछ समय तक काम करने के बाद वापस जाकर साधारण जीवन बितानेवाली झरीना, ताति पाण्डे, गीता इत्यादि युवतियों को पकड़कर सामूहिक अत्याचार के बाद मार डाले.

क्रांतिकारियों को निहत्थे पकड़कर गोलियों से मार डालने की कई घटनाएं हैं. इस प्रकार नृशंसता की बलि चढ़ी महिलाओं में कइयों क्रांतिकारी कार्यकर्ता भी शामिल हैं. कॉमरेड्स अंजू, पोडियम सुक्की, दूदि गुड्डी जैसी महिला कार्यकर्ताओं को बीच गांव से निहत्थे पकड़ने के बाद सामूहिक बलात्कार के बाद गोलियों से भून डाले. पीएलजीए के साथ मुठभेड़ों के दौरान घायल अवस्था में हाथ लगी महिला छापामारों पर अत्यंत बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया जाता है. सामूहिक अत्याचार के बाद गोलियों से मार देते हैं. महिला छापामारों की लाशों के साथ ऐसा अभद्र व्यवहार किया जाता है, जो नागरिक समाज को शर्मिंदा कर देता है.

इस दमन का प्रयोग करने में छत्तीसगढ़ के रमन सिंह सरकार के साथ महाराष्ट्र सरकार मानो होड़ लगा बैठी है.

गड़चिरोली जिला में कार्यरत एक माओवादी कार्यकर्ता सम्मा उसेण्डी एक घर के अंदर पनाह ले रही थी, चाहे तो उसे जिंदा पकड़ सकते थे, लेकिन जिला के आला पुलिस अधिकारियों के आदेशों पर घर को ही आग लगाकर उसे जिंदा जला दिया गया.

इसी जिले के भूतपूर्व माओवादी कार्यकर्ता ज्योति गावडे को गांव से उठा ले जाकर सामूहिक बलात्कार के बाद गोलियों से भून दिया गया.

मिशन–2016 के तहत आम जनता व महिलाओं पर हिंसा, अत्याचार व हत्याओं का एक लंबा फेहरिश्त ही बनेगा.

दमन से ही प्रतिरोध जन्म लेता है. यह ऐतिहासिक सच्चाई एक बार

.... (पृष्ठ 35 पर देखिए)